नवम्बर 1999 प्रवेशांक 15 रुपये

विचार दृष्टि

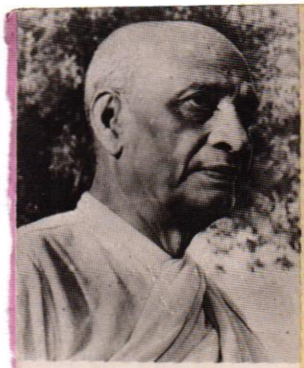
124वीं जयन्ती

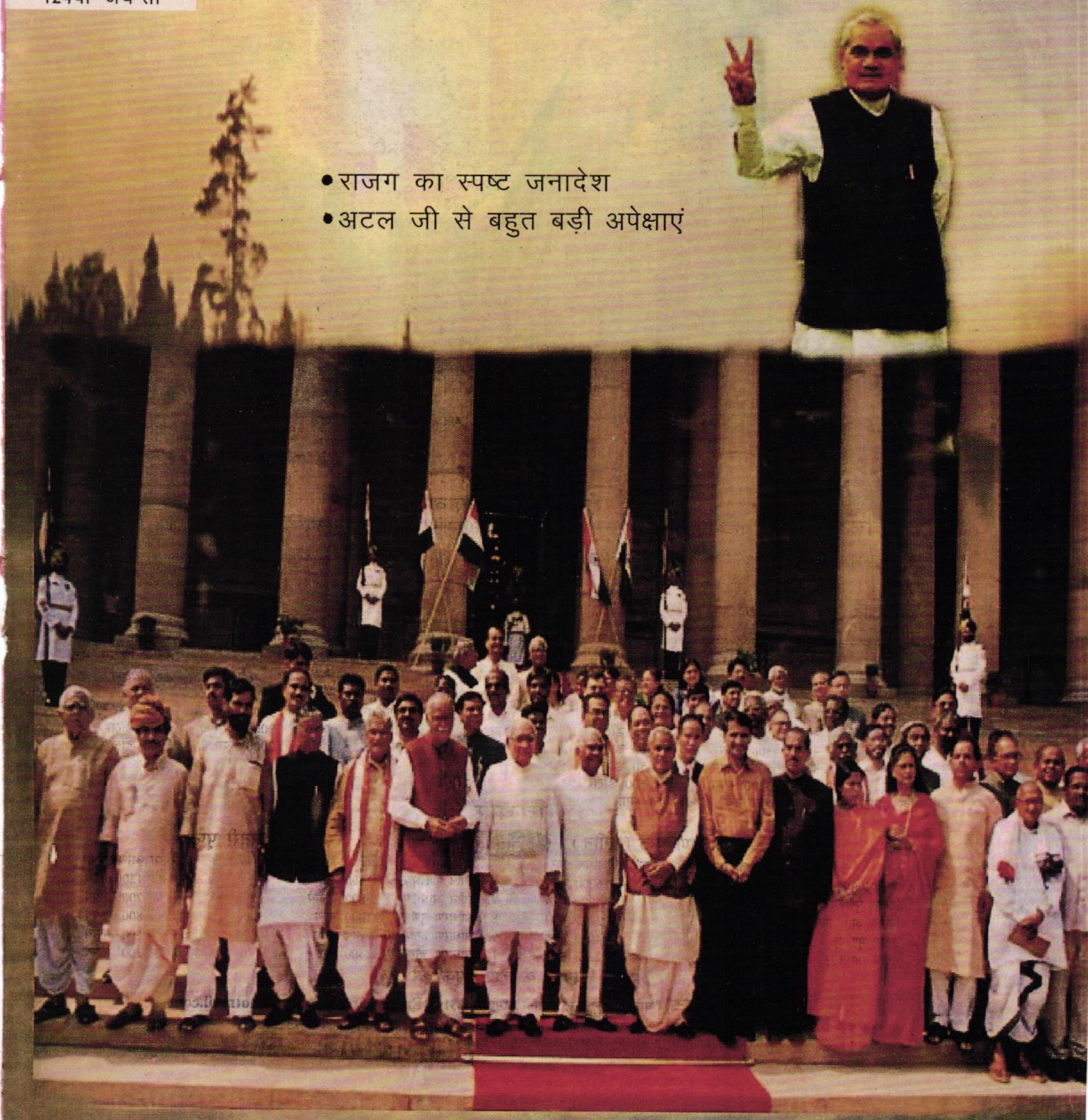

• राजग का स्पष्ट जनादेश
• अटल जी से बहुत बड़ी अपेक्षाएं

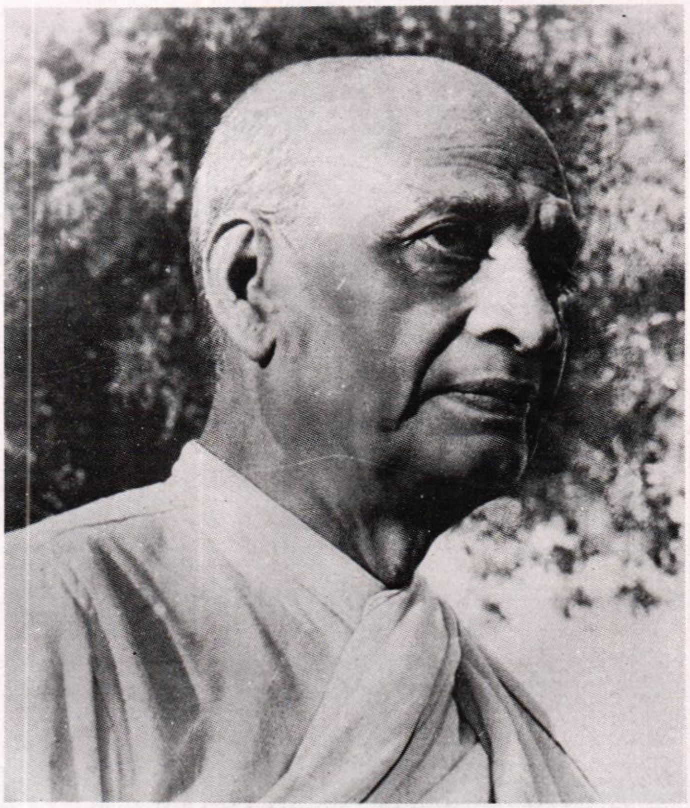

लौह पुरूष सरदार पटेल की
124वीं जयन्ती पर शत्-शत् नमन

विचार दृष्टि

सदस्यता / ग्राहक प्रपत्र

हम **विचार** दृष्टि पत्रिका के वार्षिक/दो वर्षीय/पांच वर्षीय/दस वर्षीय/आजीवन सदस्य/संरक्षक सदस्य बनना चाहते हैं।

सदस्यता शुल्क..................................रुपये मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. ....दिनांक .... भेज रहे हैं।

हमारी प्रति निम्न पते पर भेजें।

नाम .... पता...पिन कोड................

सदस्यता शुल्क

विचार दृष्टि

		भारत	*विदेश*
वार्षिक	-	50 रुपये	3 डॉलर
दो-वर्षीय	-	100 रुपये	5 डॉलर
पाँच-वर्षीय	-	250 रुपये	10 डॉलर
दस-वर्षीय	-	500 रुपये	18 डॉलर
आजीवन	-	1000 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	-	5000 रुपये	500 डॉलर

राष्ट्रीय विचार मंच

		भारत	*विदेश*
वार्षिक	-	25 रुपये	3 डॉलर
आजीवन	-	500 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	-	1000 रुपये	100 डॉलर
संपोषक	-	2000 रुपये	200 डॉलर

बैंक ड्राफ्ट/चेक 'राष्ट्रीय विचार मंच' के नाम देय होगा।

विचार दृष्टि

विज्ञापन दरें

आवरण पृष्ठ (रंगीन)

	एक बार	चार या अधिक बार
1. अन्तिम पृष्ठ	8000 रुपये	6000 रुपये
2. द्वितीय पुर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
3. द्वितीय आधा पृष्ठ	2500 रुपये	2200 रुपये
4. तृतीय पूर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
5. तृतीय आधा पृ.	2500 रुपये	2200 रुपये

भीतरी पृष्ठ

	एक बार	चार या अधिक बार
6. रंगीन पूर्ण पृष्ठ	1500 रुपये	1200 रुपये
7. रंगीन आधा पृ.	800 रुपये	700 रुपये
8. साधारण पूर्ण पृ.	1000 रुपये	800 रुपये
9. साधारण आधा पृ.	600 रुपये	500 रुपये
10. साधारण चौथाई पृ.	400 रुपये	300 रुपये

विज्ञापन के लिए संपर्क करे

विचार दृष्टि, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1, दूरभाष 228519, **Email-ranjansudhir @hotmail.com**

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित त्रैमासिकी)

वर्ष-1 अक्टूबर-दिसम्बर, 1999 -प्रवेशांक

------पत्रिका परिवार ------

प्रधान संपादक व प्रकाशक:
सिद्धेश्वर

संपादक : डॉ.शिवनारायण

सह संपादक : कामेश्वर मानव

सहा.संपादक: मनोज कुमार

संपादन सहायक: अंजलि

विधि सलाहकार: मान.न्यायमूर्ति श्री बी.एल.यादव

शब्द संयोजन : दिलीप व सुधांशु

साज-सज्जा : शशि रंजन

मुख्य प्रकाशकीय कार्यालय : दिल्ली
ई-50, एफ.एफ.सी., झंडेवालान,
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055

अन्य कार्यालय : विज्ञापन व प्रसार

दिल्ली: सुधीर रंजन, प्रबंध संपादक
कुमारटेक कम्प्यूटर्स, यू-208, शकरपुर,
दिल्ली-92, ☎ 2057045

चेन्नई: डॉ. मधु धवन, ब्यूरो प्रमुख
के-3, अन्नानगर (ईस्ट) चेन्नई

कलकत्ता: कमलेश कुमार, ब्यूरो प्रमुख
शाह हुसैन, कलकत्ता-700017

मुम्बई: बालकवि 'प्यासा', ब्यूरो प्रमुख
सी-337, सी.जी.एस.कॉलोनी,
भाण्डूप (पूर्व), मुम्बई-42

पटना: रामप्रताप सिंह, विज्ञापन व प्रसार प्रबंधक
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 ☎0612-228519

उत्तरी बिहार: डा. हीरालाल सहनी, ब्यूरो प्रमुख
मुहल्ला-सेनापत, दरभंगा-846004

संपादकीय व पत्राचार कार्यालय:
Email-ranjansudhir@hotmail.com
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
☎: 0612-228519

मुद्रण: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड,
एक्स-47, इंडस्ट्रीयल एरिया
ओखला, फेज-II, नई दिल्ली-20

मुख्य वितरक: अग्रवाल मैगजीन डिस्ट्रीब्यूटर्स
डी सेन्टर: सी.37/222, डी.आई.जेड.एरिया,
सेक्टर 4, जैन मंदिर के सामने, राजा बाजार,
नई दिल्ली-1, ☎3367085

मूल्य : एक प्रति 15 रुपये
आजीवन सदस्य : 1000 रुपये

सृजन और सृजनहार

पृष्ठ

संपादकीय- 2

विचार प्रवाह :
डा०अम्बेडकर फिल्म और दलित आन्दोलन
-मोहनदास नैमिशराय 4

आवरण आलेख :
राजग का स्पष्ट जनादेश - सिद्धेश्वर 5

चुनाव - 99 :
निकटतम प्रतिद्वंद्वी निर्वाचित घोषित किया जाये
-डॉ. एम.एस. गिल 6

राष्ट्रपति ने बिना तामझाम के वोट दिया
मुलायम ने लालू से नाता तोड़ा
केन्द्रीय मंत्रिमंडल और उनके विभाग 7

सरकार को गिराना महंगा पड़ा सोनिया को 8

लोकतंत्र का दामन खून में सन गया
-विनय कु. सिन्हा 9

मतदाता आखिर क्यों उदासीन रहे 10

बिहार में राजद को करारा झटका
लालू औंधे मुंह गिरे 12

राजनीतिक नजरिया : 13
क्या संविधान निष्प्रभावी हो गया है ?
- राजेन्द्र प्रसाद

नारी-जगत : 14
महिला लेखिकाएं और अस्मिता की खोज
-डॉ. निर्मला जोशी

समाचार-दर-समाचार : 15

गतिविधियां : 19

काव्य कुंज : 20
डा.पी.सी. कोकिला, सोमदत्त शर्मा 'सोम', आलोक कुमार, डा. परमेश्वर गोयल

साहित्य: 21
'देश मंटे मट्टि कादोय, देश मंटे मनुषु लोय'
- गुरजाड अप्पाराव

शोषक और शोषित कुछ बिम्ब(रेखाचित्र)
-कृष्ण कुमार राय

तेली की खोपड़ी (कहानी)
-जियालाल आर्य 23

पृष्ठ

नागरी लिपि हमारी राष्ट्रीय लिपि है
-शकुन सिन्हा 26

साहित्य समाचार:
डा.एस.तंकमणि अम्मा को द्विवागीश पुरस्कार 28

हिन्दीत्तर भाषा सीखें :
उनकी याद करें-अटल बिहारी वाजपेयी 31

शख्सियत :
कालिक चेतना के समग्र दूत : बाबा नागार्जुन
- संजय सिन्हा 32

न्याय-जगत : 33
गौरव की सफलता से बिहार गौरवान्वित
- कामेश्वर मानव

लौह पुरुष सरदार पटेल पर विशेष :
बज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि
-डा.डी.आर. ब्रह्मचारी 34

राष्ट्रीय एकता के कर्णधार सरदार पटेल
-डॉ.जगदीश सिंह राठौर 35

कला-संस्कृति : 36
पड़ोसी राष्ट्र नेपाल की लोक संस्कृति
-डा.हरिकृष्ण अग्रहरि

सेहत-सलाह : 37
बच्चों में कुपोषण- डा.आर.के.पी.सिन्हा

संस्मरण :
शहीदे आजम की विचार धारा का दुर्लभ साक्ष्य कहां गया ?- शशि भूषण 38

हिन्दी साहित्य का एक ज्योतिर्मय दीप बुझ गया- सिद्धेश्वर 39

व्यंग्य : 42
भ्रम - डा. एच.एन. सिंह

विज्ञान-जगत : 43
भारतीय रक्षा प्रणालियों को भी 'वाई-2 के' से निपटने में सक्षम होना होगा-डा. शुभंकर बनर्जी

देश-विदेश: नेपाल में गर्भपात संज्ञेय अपराध 44

खेल-खिलाड़ी : 45

फिल्मावलोकन : 46

पत्रिका-परामर्शी

1. पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि'
सुप्रसिद्ध साहित्यकार
2. श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव
अपर उपनियंत्रक-महालेखापरीक्षक
3. श्री जियालाल आर्य, भा.प्र.से.
राज्य निर्वाचन आयुक्त, बिहार
4. डा०बालशौरि रेड्डी
सुप्रसिद्ध साहित्यकार
5. श्री जे.एन.पी. सिन्हा
पूर्व सम्पादक, सी.एस.आई.आर.
6. कविवर गोपी बल्लभ सहाय
सुप्रसिद्ध साहित्यकार

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पैनी दृष्टि

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा अनुमोदित शीर्षक **विचार दृष्टि** का प्रवेशांक आप सुधि पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें आंतरिक आह्लाद की अनुभूति इसलिए हो रही है कि इस पत्रिका के नाम में **विचार** और दृष्टि दो ऐसे शब्दों का चयन किया गया है जिसकी प्रासंगिकता आज सबसे अधिक है। जब देश में अधिकतर आदमी गलत काम कर रहा हो, प्रवृति सुविधाभोगी हो गयी हो, लोकतंत्र की ओट में निरंकुश भीड़तंत्र की हुकुमत हो, ऊंची कुर्सियों पर बैठे लोगों ने कानून अपने हाथ में ले लिया हो, प्रशासनिक अधिकारी एवं हमारे प्रतिनिधि अपने कर्त्तव्य भूलकर सिर से पांव तक आकंठ भ्रष्टाचार में डूब गए हों तथा जनता किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गयी हो, तब खूनी क्रांति नहीं, वैचारिक क्रांति जरूरी हो जाती है। और यह वैचारिक क्रांति सत्ता के सुख भोग रहे न तो राजनीतिज्ञ ला सकते हैं और ना ही सुविधाभोगी भ्रष्ट अधिकारी के वश की यह बात है। लोगों के सोचने का ढंग, विचार करने का ढंग, अन्याय के खिलाफ लड़ने की लचर प्रणाली में परिवर्तन लाने की क्षमता यदि किसी में है तो वह है प्रबुद्धजन। चाहे वह कॉलेज व विश्वविद्यालय के विचारवान छात्र समुदाय हों या प्राध्यापक, मीडिया के प्रबुद्ध पत्रकार हों या रचनाकार, सच की लड़ाई लड़नेवाले वे ही हो सकते हैं। चिन्तक तथा विचारक ही वैचारिक क्रांति लाने में समर्थ हैं। अब वह वक्त आ गया है जब उन्हें सक्रिय होना होगा क्योंकि देश की जनता आज 'दहशत गर्दो' के चंगुल में फंस गई है, अन्याय का विरोध करने की ताकत उनमें नहीं रह गयी है। आज प्रत्येक भारतीय एक निश्चित परिधि के अन्दर ही सिमट रहा है और समाज अनेक टुकड़ों में बंटता चला जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण राष्ट्र की कल्पना करना कठिन हो रहा है तथा राष्ट्रीयता की भावना का भी ह्रास हो रहा है। उपर से भले विचारों की काफी भीड़–भाड़ या मेला–सा हमें लगा दिखे, किन्तु बुनियादी मौलिक विचारशीलता और समन्वित परिप्रेक्ष्य लगभग ओझल हैं। संक्रमण का समय दिशाहीनता की ओर ले जाता है। हम सब इस बात से अवगत हैं कि देश की प्रभुसत्ता राजनीतिक लोगों में निहित है यानी वे ही देश के संचालक हैं किन्तु उनकी यह चेतना आम तौर पर सूखे काठ में अग्नि की तरह सोयी रहती है। इस सुप्त चेतना को विचारों के माध्यम से जागृत करने की जरूरत है। खेद है कि जो बीसवीं सदी समाज और देश को बदलने और बेहतर बनानेवाली विचारधाराओं को लेकर प्रकट हुई, वही अब विचारधारा की समाप्ति की उद्घोषणा कर चुकी है। विचारधारा की समाप्ति के 'पश्चात् विचारणीय केवल यह रह जाता है कि कैसे ज्यादा से ज्यादा लोगों को खुश और कम से कम लोगों को नाराज किया जाए ? यानी वोट पाने का जुगाड़ करना अपनी विचारधारा को व्यावहारिक रूप देने से कहीं ज्यादा जरूरी है। मूल्क को बदअमनी के इस आलम से निजात दिलाने के लिए पत्र–पत्रिकाओं को आगे आना होगा। आज हमारे समाज में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो सारी स्थिति को भलिभांति समझते हैं और जिनके सक्रिय हस्तक्षेप से व्यापक फेरबदल की गुंजाइस भी है। जरूरत केवल इस बात की है कि वे नकली बौद्धिक कुहासेवाले खोल से बाहर आएं और फिर वैचारिक संकट की इस घड़ी में जनता को या समाज को यों छोड़ देना भी तो ठीक नहीं। **स्वामी विवेकानन्द** का भी मानना था कि **आम जनता को या समाज को उनके अपने हाल में छोड़ देना एक राष्ट्रीय पाप है। अतएव सच तो यह है कि अन्याय, भेदभाव, अन्धेरे के खिलाफ खड़ा हो जाना ही आज सच्ची समाज सेवा है।**

वक्त का तकाजा है कि विचारवान, समझदार भलेमानुषों और विचारशील बुद्धिजीवियों को पहलकारी कदम बढ़ाकर आगे आना होगा। वे आखिर कब तक हाथ पर हाथ धरे बैठे मूकदर्शक बने रहेंगे ? अंधेरा सिर्फ इसलिए तो नहीं छंट जाएगा कि कोई नेक आदमी उजाले की प्रतीक्षा में बैठा है। अतएव समाज और देश में व्याप्त घटाटोप अंधकार को हटाने के लिए हमें प्राचीन सूत्र **अप्पोदीपो भवः** के अनुसार शब्दाशः स्वयं दीपक बनकर प्रकाशित होने का पुरुषार्थ करना होगा। अन्धकार को हम क्यों धिक्कारें ? अच्छा है एक दीप जलाएं। कुछ इसी भाव से प्रेरित हो दीप के·रूप में यह **विचार दृष्टि** आपके सामने है।

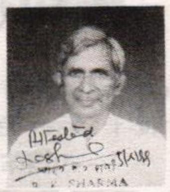

इस पत्रिका के शीर्षक में दूसरा शब्द है **दृष्टि**। आजादी के बाद से ही हमारे देश में अनेक प्रकार के संकट छाए हैं जिनपर भी दृष्टि डालने की आवश्यकता है। सबसे बड़ा संकट है बढ़ती आबादी का। इसके साथ ही राष्ट्रीय नैतिकता, चारित्रिक और व्यक्तित्व का संकट, आतंकवाद का संकट, राष्ट्रीय भावना का संकट, प्रदूषण का संकट, सम्प्रदाय व जातिवाद का संकट, क्षेत्रीयता का संकट तथा जीवन मूल्यों– मर्यादाओं के अवमूल्यन के संकट निरन्तर रूप से पनपते जा रहे हैं। प्रश्न यह है कि क्या हम इन संकटों से उबर पाएंगे ? दस्तक दे रही २१ वीं सदी में जब हम बेसब्री से प्रवेश करने की बाट जोह रहे हैं तो इन सारे संकटों पर दृष्टि डालनी होगी।

यह पत्रिका कुछ उद्येश्यों को लेकर भी बढ़ना चाहती है। अवधारणा यह है कि यह पत्रिका जीते–जागते जन की गरीबी, गैर–बराबरी, शोषण और संघर्ष, दुःख–दर्द और दमन के खिलाफ आम आदमी को वाणी दे, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के सामूहिक नरसंहार, औरतों पर अत्याचार आदि इसके लेखक की पीड़ा बने। आजादी की आधी शताब्दी से अधिक बीत जाने के बाद भी जिनकी झोपड़ियों में विकास की किरणें अभी तक नहीं जा पाई हैं उनमें चेतना जागृत करने तथा आम जन–मानस को वैचारिक धरातल पर झकझोरने का प्रयास यह पत्रिका करेगी। कहना नहीं होगा कि **राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित** यह पत्रिका देश व समाज की ज्वलन्त समस्याओं को निर्भीकता से विश्लेषण करेगी। सूचनाओं के बढ़ते शोर–शराबे में से उपयोगी जानकारी को पर्याप्त विस्तार, गहराई और साफगोई से प्रस्तुत करने का प्रयास होगा। इसके अतिरिक्त समाज की रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों पर हमला करने तथा समाज विरोधी तत्वों एवं देशद्रोही ताकतों के खिलाफ आवाज उठाने में यह पत्रिका कंजूसी नहीं करेगी।

अभी पत्रिकाओं की बाढ़ को देखकर एक तरफ खुशी होती है तो दूसरी ओर

उसके गिरते स्तर पर चिन्ता भी होती है। मैं समझता हूं इस पत्रिका के सम्पादक–मंडल तथा पत्रिका–परामर्शी के अध्यवसाय और योजनाबद्धता से हिन्दी पत्रकारिता को एक नया आयाम देने का हर संभव प्रयास किया जाएगा। विभिन्न विधाओं की कई तरह की रचनाओं से लबरेज पाठकों, विशेषकर वर्तमान पीढ़ी के रचनाकारों के लिए यह पत्रिका धरोहर के रूप में सहेजकर रखी जा सके, इसके लिए रचनाओं के चयन में कुशलता और सतर्कता बरतने की कोशिश की जाएगी। इस वैचारिक पत्रिका से बड़ा पाठक–वर्ग जुड़ सके, इसी को ध्यान में रखते हुए **विचार-प्रवाह, साहित्य, नारी-जगत, न्याय-जगत, राजनीतिक नजरिया, सेहत-सलाह, कला-संस्कृति, व्यंग्य, हिन्दीत्तर भाषा सीखें, खेल-खिलाड़ी तथा फिल्मावलोकन** जैसे स्तम्भों का समावेश कर लोगों को एक अच्छा खासा मानसिक खुराक देने का प्रयास किया गया है। विश्वास है श्रम–बिन्दुओं से सना हमारा यह प्रयास आप सुधि पाठकों की भावनाओं का उज्ज्वल आलोक बनकर भावी पीढ़ी का पथ–प्रशस्त कर सकेगा और तभी हमें संतोष भी होगा।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार व पत्रकार **देवेन्द्र सत्यार्थी** जी का कथन है–**किसी से चीज प्राप्त करना बहुत बड़ी उपलब्धि होती है सम्पादक के लिए एहसान नहीं करता।** कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर आप सभी पाठकों/लेखकों से अच्छी रचनाओं की अपेक्षा करता हूं जिसके अभाव में पाठक को फल भोगना पड़ता है।

अब आइए, एक नजर डालें **चुनाव-९९** के नतीजों पर।

अनचाहा मध्यावधि चुनाव सम्पन्न हुआ। नतीजे सामने आये। भारतीय मतदाताओं ने इस बार भी खंडित जनादेश दिया क्योंकि किसी भी एक दल को बहुमत नहीं मिल पाया है। हां **राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन** को स्पष्ट बहुमत मिल गया है। इस जनादेश से इस बात की पुष्टि होती है कि भारतीय लोकतंत्र गठबंधन की राजनीति को स्वीकार कर लिया है और दीर्घकाल तक यही स्थिति बनी रहेगी। चुनाव नतीजे यह भी बताते हैं कि साम्प्रदायिकता और विदेशी मूल की पैदाइश को तवज्जो नहीं दी गयी। इस सन्दर्भ में यह मानना होगा कि **राजग** को जो सफलता मिली उसका बहुत श्रेय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को जाता है। भाजपा तथा उसकी सहयोगी पार्टियों ने केवल अटल जी के नाम पर वोट मांगा। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रधानमंत्री अटल जी अपनों या परायों को बंदूके चलाने के लिए अपना कंधा इस्तेमाल नहीं होने देंगे। अब उन्हें **सुब्रह्मण्यम स्वामी** अथवा **जयललिता** जैसे स्वार्थी लोगों का पाला नहीं पड़ेगा। इन दोनों को अपनी करनी का फल मिल चुका है। इसलिए यह मानकर चला जा सकता है कि इस बार राजग की सरकार को पहले की वाजपेयी सरकार के मानिंद गिराने की कोशिश नहीं होगी। और अच्छा भी यही होगा क्योंकि देश को अनेक स्तरों पर चुनौतियों से जूझना है, विकास के सोपान तय करने हैं और गरीबी, बेरोजगारी व मूलभूत समस्याओं से निपटना है। यह तभी संभव है जब न केवल गठबन्धन के सभी सहयोगी दल अपनी सामूहिक जिम्मेदारी समझेंगे बल्कि विपक्षी दल भी सहयोग की भावना से अपनी रचनात्मक भूमिका निभाएंगे। इस बीच संचार माध्यमों को भी अपनी दुधारी तलवार थामे रहना है। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और लोकतान्त्रिक जागरूकता के लिए इसकी धार को तेज करते रहना जरूरी है क्योंकि लोकतंत्र के पहरेदारों की कमजोरियां और सत्ता की मदहोशी में की गयी गड़बड़ियां इन्हीं माध्यमों से उजागर होती हैं।

चुनाव नतीजे यह भी बताते हैं कि सोनिया का करिश्मा काफूर हो गया और १२ वी लोकसभा में १४१ सीट पानेवाली कांग्रेस को १३वीं लोकसभा में ११२ तक पहुंचते–पहुंचते मुंह के बल गिर जाना पड़ा। अब तक के इतिहास में कांग्रेस को सबसे कम सीटें मिली। दरअसल कांग्रेस में ऐसे लोगों की संख्या अधिक है जो केवल हवाई किले बनाते रहे हैं। उन्हें संगठन अथवा जमीन से जुड़ने की चिन्ता नहीं।

यही हाल बिहार में **राष्ट्रीय जनता दल** तथा उसके सुप्रीमो **लालू प्रसाद** की भी हुई। राजद को इस बार सतरह की जगह मात्र सात सीटें मिली तथा लालू प्रसाद शरद यादव के हाथों मधेपुरा में बुरी तरह पराजित हो गए। गत एक दशक में बिहार की जनता के हर वर्ग को खास कर गरीब तबके को सब्ज–बाग दिखा कर। केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि की गई। विकास के नाम पर खुली लूट की छूट दी गई।

इस बार के चुनाव में जो सफलता उत्तर प्रदेश में सपा तथा बसपा को मिली है उसकी वजह से देश की राजनीति में **मुलायम सिंह यादव** तथा **काशीराम** को नजरअंदाज करना आसान नहीं होगा।

सबसे शानदार जीत आन्ध्रप्रदेश में **चन्द्रबाबू नायडू** की पार्टी **तेलुगु देशम पार्टी** की हुई। लोकसभा की कुल २९ सीटें तथा विधान सभा में भारी बहुमत प्राप्त कर नायडू ने भारतीय राजनीति में अपनी एक अलग पहचान बना ली है। यह उनके कठिन परिश्रम, राज्य की जनता के प्रति निष्ठा और ईमानदारी का परिचायक है। आप इस बात से अवगत होंगे कि आन्ध्र प्रदेश में उन्होंने इलेक्ट्रोनिक उद्योग का जाल बिछा दिया है। उनके बारे में कहा जाता है कि वही एक ऐसे नेता हैं जिनपर भ्रष्टाचार का कीचड़ नहीं चिपका है। क्या ऐसे ईमानदार नेता से हमारे देश के अन्य नेता सीख लेंगे ?

सब मिलाकर इस चुनाव ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के मतदाता कितना ही गरीब, पिछड़ा, अनपढ़ क्यों न हो, अपने हितों की रक्षा कर सकने वाले प्रतिनिधि की पहचान करने में समर्थ हैं।

पर्याप्त साधन के अभाव में भी पत्रिका को स्तरीय तथा पठनीय बनाने में इसके परामर्शी श्री जी.सी.श्रीवास्तव एवं श्री जियालाल आर्य, कामेश्वर मानव तथा प्रसार प्रबंधक श्री रामप्रताप सिंह का योगदान अनुकरणीय रहा है। मैं आभारी हूं उनका।

हम उन सभी रचनाकारों के आभारी हैं जिन्होंने इस प्रवेशांक के लिए रचनाएं और चित्र आदि भेजे हैं। विश्वास है उनका सहयोग हमें सदैव मिलता रहेगा। इसके शब्द–संयोजन, साज–सज्जा तथा मुद्रण एवं प्रबंधन में सहयोग के लिए सुधीर रंजन, शशिभूषण, दिलीप कुमार,शशि रंजन, सुधांशु, सत्य प्रकाश तथा अंजलि धन्यवाद के पात्र हैं। पत्रिका के सदस्य व ग्राहक हमारे पत्रिका परिवार में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। वह हम पर निर्भर नहीं हैं। हम उनपर निर्भर हैं। हम उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

–सिद्धेश्वर

डॉ०अम्बेडकर फिल्म और दलित आंदोलन

□ मोहनदास नैमिशराय

अब जबकि राष्ट्रीय स्तर पर बाबा साहेब डा. अम्बेडकर की जन्म शताब्दी मना चुके और देश भर में गांव, कस्बा तथा शहर और महानगरों में भारत के संविधान निर्माता की लाखों प्रतिमाएं स्थापित कर चुके, तब उनके जीवन संघर्ष पर हाल ही में पूरी हुई फिल्म के बारे में यह सवाल उठता है कि क्या फिल्म से आंदोलन का इतिहास बनता है यह महज इतिहास फिल्म के रूप में कुछ लोगों के लिए एक घटना होता है। विशेष तौर पर यह सवाल दलितों के मुक्तिदाता डा. अम्बेडकर के बारे में हमारे सामने आकर खड़ा हो जाता है। क्योंकि बाबा साहेब डा. अम्बेडकर की फिल्म मात्र फिल्म नहीं है बल्कि दलितों को मुक्ति संघर्ष का जीता जागता दस्तावेज है। इसमें इतिहास, राजनीति और समकालीन परिस्थितियों का सटीक विश्लेषण भी होगा, ऐसा हम मानते हैं। क्रांति प्रतिक्रांति के साथ विचार उद्वेलन भी होगा, ऐसी भी जरूरी तौर पर आशा की जाती है।

पर इस सवाल का जवाब तलाश करने से पहले हमें यह भी समझना चाहिए कि हमारे देश में राजनैतिक चलचित्र जितनी तेजी के साथ बदलते हैं उतनी तेजी के साथ साहित्यिक तथा सांस्कृतिक इतिहास नहीं बदलते। उनके बदलने की अपनी ही अलग प्रक्रिया होती है। इसका सीधा-सा उतर है कि संस्कृति कर्मियों को अधिकांश तौर पर सत्ता की राजनैतिक बैशाखियों पर निर्भर रहना पड़ता है। डा. अम्बेडकर की फिल्म के बारे में हालांकि ऐसा नहीं हुआ, पर कुछ अर्थों में राजनैतिक मतभेद गहराई से रेखांकित हुए बिना नहीं रह सके। परिणमस्वरूप जो फिल्म बहुत पहले रिलीज हो जानी चाहिए थी, वह लगभग दस वर्षों में पूरी हुई।

इस फिल्म निर्माण के आरंभिक चरण में बहुत सारे मतभेद तथा विवाद थे मोटे तौर पर डा. अम्बेडकर जन्म शताब्दी समारोह समिति के सदस्य फिल्म का निर्माण **श्याम बेनेगल** से कराना चाहते थे। दूसरी तरफ सूचना और प्रसारण मंत्रालय और उससे सम्बद्ध राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम इस फिल्म को जब्बार पटेल को सौंपना चाहते थे । यह भी बताया जाता है कि बाबा साहेब के पौत्र **प्रकाश अम्बेडकर** और स्वयं डा. अम्बेडकर की पत्नी **सविता अम्बेडकर** के बीच निदेशक को लेकर विवाद तथा अन्य सामाजिक तथा राजनैतिक मतभेद थे। जो बाद के चरण में धीरे-धीरे बादलों के समान छटे। विवादित मुद्दों पर समझौते हुए।

ध्यान रहे कि 14 अप्रैल, 1990 को बाबा साहेब डा. अम्बेडकर जन्म शताब्दी समारोह समिति का गठन हुआ था। इसी समिति के अतंर्गत अन्य योजनाओं के साथ फिल्म निर्माण की योजना भी थी जिसे पूरा करने के लिए तब लगभग साढ़े छह करोड़ रुपये की धन राशि रखी गई थी। उस समय राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार गिर जाने पर चन्द्रशेखर ने प्रधानमंत्री के रूप में इसी योजना को आगे बढ़ाया। बाद के प्रधानमंत्रियों का विवरण हम नहीं दे रहे हैं क्योंकि उनका विवरण देना हमारा उद्देश्य नहीं है। पर फिल्म में आए उतने विवाद शायद ही किसी अन्य महापुरुष के जीवन पर बनी फिल्म पर उठे हों । इनमें कुछ विवादित मुद्दे सरकारी स्तर पर पैदा हुए तो कुछ राजनैतिक स्तर पर। कुछ विवाद पहले से ही अस्तित्व में थे तो कुछ मतभेदों को जन्म दिया गया। वैसे मतभेद व्यक्तित्व के टकराव के कारण भी उभरे।

जहां तक फिल्म स्क्रिप्ट और निर्माण की बात है, उसमें एक विशेष मुद्दा रहा अम्बेडकर गांधी विवाद ! हालांकि मलयाली और हिंदी फिल्मों के सुपरस्टार **"यामोटी"** जो डा. अम्बेडकर की भूमिका कर रहे हैं, का कहना है कि अम्बेडकर व गांधी की सोच में कोई अंतर नहीं था। अतः मतभेद उभरने का कोई प्रश्न ही नहीं है। पर ऐसा नहीं है। डा. अम्बेडकर और गांधी के बीच कुछ ऐतिहसिक विवाद थे जिन्हें इतिहास परिप्रेक्ष्य में ही समझना चाहिए। न कि आज के राजनैतिक संदर्भ में । इस बारे में यशवंत राव चव्हान प्रतिष्ठान के उपाध्यक्ष दादा साहेब रूपवते, जो अम्बेडकर फिल्म निर्माण से संबधित समिति के सदस्य भी हैं, का कहना है कि असल में देखा जाए तो बाबा साहेब डा. अम्बेडकर और गांधी के बीच महायुद्ध था। उस ऐतिहासिक सच को हम कैसे खत्म कर सकते हैं दूसरी बात यह है कि उक्त फिल्म में कहीं अम्बेडकर भारी पड़े हैं तो कहीं गांधी हल्के। इसे दलित आंदोलन के नजरिये से ही देखना चाहिए न कि सनातनी मानसिकता के चश्में से। बाबा साहेब डा. अम्बेडकर निश्चित ही दलितों के सर्वेसर्वा थे। उन्होंने उनके भीतर जुल्म तथा अत्याचारी प्रतीकों के खिलाफ लड़ने की ऊर्जा भरी। इसलिए बाबा साहेब दलितों के जितना नजदीक हो सकते हैं उतना गांधी नहीं फिर इस फिल्म से सम्बन्धित प्रमुख बात यह भी है कि यह फिल्म बाबा साहेब डा. अम्बेडकर के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ उनके संघर्ष को लेकर बनाई गई है। जिसके साथ दलितो की अस्मिता जुड़ी है। उनकी पहचान से काटकर बाबा साहेब को स्वंय उन्हीं की फिल्म में कैसे दिखाया जा सकता है।

यह बात हमें इसलिए लिखनी पड़ी कि कुछ गांधीवादियों ने इस तरह के सवाल उठाए। वैसे लोग गांधी की बनी बनाई "इमेज" को जरा भी खरोंच लगे ऐसा नहीं चाहते। पर फिल्म के बाद गांधी अम्बेडकर विचार मंथन या उद्वेलन होगा, यह बात तो निश्चित है हीं। उसे टाला नहीं जा सकता।

हम ऐसा मानते हैं कि गांधी अम्बेडकर विवाद के साथ इतिहास की कोख से अन्य सवाल उभरेंगे जो नेहरू, सरदार पटेल, जगजीवन राम के आसपास के सवाल होंगे तथा उनके परस्पर संबंधों के बारे में अन्य विचार पैदा होंगे। पर ऐसे समय जबकि दलित आंदोलन और राजनीति में नये सिरे से विचार मंथन हो रहा है तथा स्वयं दलित समाज के साथ उस वर्ग के बुद्धिजीवी तबके के बीच उद्वेलन हो रहा है, क्या बाबा साहेब डा. अम्बेडकर पर बनी यह फिल्म उन्हे कोई नया रास्ता दिखाएगी। फिल्म के संवाद और पटकथा में इन सबका कितना ध्यान रखा गया है अगर दया पवार आज जीवित होते तो उनसे पूछा जाता, फिर भी उम्मीद की जाती है कि इस फिल्म में सब कुछ नहीं तो अधिकांश रूप में बाबा साहेब के अनुयाईयों के अनुरूप ही होगा। क्योंकि अम्बेडकरवादी इतिहास के उन टुकड़ों को भी पर्दे पर देखना चाहेंगे, जिन्हें समय और परिस्थितियों के साथ मिलकर कुछ विशेष वर्ग के लोगों ने एक नहीं होने दिया। कांग्रेस की भूमिका के बारे में भी अम्बेडकर वादियों के मन में सवाल-दर-सवाल होंगे।

पर सवाल वही है फिल्म आने वाली सदी में दलितों को कौन-सा संदेश देगी। क्या इससे स्वयं दलितों के बीच नये सिरे से आंदोलन उभरेगा। क्या वे दलित अस्मिता को भविष्य के लिए संजोकर रखेंगे ? फिल्म की अवधि तथा अन्य जानकारी की बात जहां तक है, वह तीन घंटे की है, फिल्म मूलतः अंगेजी में बनी है तथा हिंदी और अन्य भाषाओं में "डब" की प्रक्रिया में है। वह प्रक्रिया आगे आने वाले समय में कितनी ईमानदारी और प्रतिबद्धता से पूरी होगी इस बारे में अभी टीका टिप्पणी करने का कोई अर्थ नहीं है, पर इतना तो हमें कहना ही चाहिए कि बाबा साहेब की पुस्तकों की प्रकाशन योजना जो बहुत पहले आरंभ हुई थी उस तरह से आगे नहीं बढ़ रही है, जैसा कि योजना का प्रारूप था। बाबा साहेब की किताबों को बारह भाषाओं में छापने की योजना लगभग खटाई में है क्या फिल्म की योजना तो ऐसी नहीं साबित होगी ? बेहतर यह भी होगा कि इस फिल्म को सीरियल के रूप में सभी भाषाओं में डबकर दिखाया जाए, जिससे अधिकतर लोग संविधान निर्माता बाबा साहेब डा. अम्बेडकर को पर्दे पर देख उन्हें आत्मसात् कर सकें।

संपर्क :बी. जी. 5-ए / 30 बी.
पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63

राजग को स्पष्ट जनादेश : अटल जी से बहुत बड़ी अपेक्षाएं

असंख्य लोगों के चहेते भारत के प्रधानमंत्री **श्री अटल बिहारी वाजपेयी** भारत का अगली नयी शताब्दी में नेतृत्व प्रदान करेंगे। चार लगातार अस्पष्ट जनादेशों और कड़वाहट भरे माहौल एवं लंबे चुनाव अभियानों के पश्चात् 13 वें लोकसभा के चुनाव में निर्णायक नतीजे निकले। इसमें अटल जी स्पष्ट रूप में हिन्दुस्तान के एक ऐसे नेता उभरे हैं जिन्हें मतदाताओं का समर्थन हासिल हैं और इसे विरोधी भी मानते हैं। इनके समक्ष 115 वर्षों की अनुभव वाली विपक्ष कांग्रेस है जिसका नेतृत्व एक अनुभवहीन महिला सोनिया जी कर रही हैं। कम उम्मीदों पर पले इस देश के लिए इससे एड़ी बात और क्या हो सकती है। इसमें कतई संदेह की गुंजाइश नहीं कि भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को अटल जी के नेतृत्व की वजह से बढ़त मिली। हां, यदि उत्तर प्रदेश, पंजाब तथा कर्नाटक में राजग को हार का मुंह देखना पड़ा है तो उनमें आपसी खींचातानी ही कारण रहा है। इसलिए यह कहना कदाचित गैर मुनासिब नहीं होगा कि यह अटल लहर वाला चुनाव था। इसे म.प्र. के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने भी स्वीकार करते हुए कहा-**वाजपेयी की वजह से ही भाजपा गठजोड़ को बढ़त मिली।** अटल जी के नपे-तुले शब्दों, उनकी विनम्रता और सबको साथ लेकर चलने वाली शैली ने राजग के प्रति मतदाता के अन्तर्निहित संदेह को भी दूर कर दिया क्योंकि चुनाव के पश्चात् सभी राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं से अपने मनमैल व मतभेद को दूर कर भारत को मिल जुल कर विकास के पथ पर ले चलने की अपील उन्होंने की । यह राष्ट्र को सुरक्षित हाथों में रखने और सामान्य जीवन जीने के इच्छुक यहां की जनता के अन्तस को निश्चित रूप से झकझोर गया। सच कहिए तो यह बिडम्बना ही है कि उ.प्र. में इनका जादू नहीं चल सका जहां भाजपा अपने 10 प्रतिशत वोट के साथ 30 सीटें गंवा बैठी। हलांकि इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि सोनिया गांधी कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं और समर्थकों को यह यकीन दिलाने में लगभग सफल हो चुकी थीं कि चुनाव-99 में वंशवाद फिर उभकर आएगा किन्तु चुनाव के नतीजों से वंशवाद का वह सपना चकनाचूर हो गया। इसके परिणामस्वरूप कांग्रेस के समक्ष अब भारी उलझनपूर्ण स्थिति पैदा हो गयी है।

1989 के बाद यह पहला चुनाव है जिसमें बहुमत स्पष्टत: स्थापित हुआ है। इसके अंकगणित इस प्रकार हैं - भाजपा तथा इसके सहयोगी दलें - 292, नामित सीटें-2 बिहार की जिन चार सीटों पर 28 अक्टूबर को चुनाव होना है उनमें भाजपा के तीन तथा समता पार्टी का एक सीट जीता हुआ है। इसके अतिरिक्त नेशनल कान्फ्रेंस तथा स्वतंत्र मिलाकर 4 हैं। सबों को मिलाकर देखा जाय तो राजग को समर्थन देने वाले कुल 305 सांसद हो जाते हैं। इसके एक सहयोगी नायर चन्द्रबाबू नायडू की तेदेपा अपने 29 सांसदों के साथ देकर अपनी राजनीतिक सूझसूझ का परिचय दिया है। इसके ठीक विपरीत विपक्ष की पार्टियां तितर-वितर हैं। कांग्रेस 112 सीटें लेकर स्थिर हो गई है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि **जनादेश-99** ने काफी संतुलित तथा स्पष्ट तौर पर अधिक गुणवत्ता वाले गठबंधन को विजयी बनाया है। इसके मंत्रियों में **यशवंत सिन्हा, जार्ज फर्नांडीस, नीतीश कुमार, शरद यादव, रामविलास पासवान, मुरासोली मारन, कुमारमंगलम, मनोहर जोशी** जैसे धाकड़ लोगों के अनुभव काम आएंगे तथा आर्थिक एवं अन्य सुधारों को विश्वास पूर्वक लागू किया जा सकेगा। सिद्धेश्वर

यह बात ठीक है कि इस बार अटल जी को 1998 की तरह जयललिता जैसी, कांटों भरी टोपी उनसे सिर पर नहीं है फिर भी आम जनता की अपेक्षा उनके समक्ष चुनौतियां भरी हैं। यह जनादेश स्थिरता के लिए तो है ही, साथ ही आर्थिक परिवर्तन के लिए भी है। नई दिल्ली 7, रेसकोर्स रोड, जहां **अटल बिहारी वाजपेयी** प्रथम प्रधानमंत्री ऐसे हैं जिन्होंने लगातार दूसरी बार सत्ता पर हुकुमत करने का जश्न मनाया गया, जहां असंख्य हंसते मुंह को खिलाने के लिए अनगिनत बर्फी के डब्बे खाली किए गए। लंबे अरसे तक की राजनीतिक स्थिरता के लिए वाजपेयी जी को यह महसूस करना पड़ेगा कि अन्तत: आर्थिक पहलू ही वह जादू है जो सिर पर चढ़ कर बोलेगा और अहमियत रखेगा। किन्तु इसके लिए जनता को कुछ दुख भी सहना होगा क्योंकि 5000करोड़ रुपए की उगाही के लिए सरकार को **कारगिल कर** जैसी कोई न कोई व्यवस्था तो करनी ही होगी। या फिर पेट्रोलियम उत्पादकों की कीमतों में बढ़ोतरी करनी होगी।

आप याद करें आज से 15 वर्ष पूर्व 1985 में भाजपा के अध्यक्ष पद पर रहकर ग्वालियर में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था कांग्रेस के माधव राव सिंधिया के हाथों। उस समय भाजपा मात्र दो सीटों पर जीत पाई थी। आज वही ग्वालियर उन 300 सीटों में से एक है जहां अटल जी का करिश्मा काम आया है हलांकि यह भी सच है कि इस बार ग्वालियर छोड़ सिंधिया ने **गुना संसदीय क्षेत्र** को चुना जहां से अच्छा खासा वोट प्राप्त कर उन्होंने विजय हासिल की । 1998 में कहा गया था कि अटल जी ही एक ऐसे नेता हैं जिनके लिए भारत इन्तजार कर रहा है। किन्तु आज जब वे व्यस्त हैं भारी कार्यक्रमों को लेकर भारत पर शासन करने के लिए, उनके बारे में कहा जा रहा है कि अटल जी आज एक ऐसे नेता हैं जो भारत को 21 वीं सदी में ले जाने के लिए इंतजार कर रहे है।

यह सच है कि भारत में तमाम चुनौतियों और झंझावातों के बावजूद लोकतंत्र का परचम पूरी शान से लहरा रहा है। अपनी सारी भाषायी, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भौगोलिक विविधाओं के बीच भी हमारी अंतर्निहित एकता ने हमारे लोकतंत्र को परिपुष्ट किया। इस बात की भी पुष्टि हुई है कि विश्व के गिने चुने गौरवशाली जनतंत्रों में भारत ने अपनी विविधिता में एकता को पहचाना और भावनात्मक ढंग से उसे सहेज कर रखा। विशाल जनसंख्या के बावजूद हमारे देश का जन, मन एक है। आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, नगर और गांव की असमानताओं के बाद भी यहां सबको साथ लेकर चलने और मिल बांटकर रहने की बुनियादी प्रवृति है। हमने अपनी इसी सांस्कृतिक धुरी पर लोकतंत्र के दीप-स्तम्भ को प्रस्थापित किया है। ऐसे वक्त कवि **जगदीश सेन तैलेन** की ये पंक्तियां मुझे हठात् याद आती हैं जो कितना सटीक हैं:-

भारत के जनमानस का विश्वास नहीं डिगने पाए
राष्ट्रवाद का उगता हुआ यह सूर्य नहीं ढलने पाए।
ओ लोकतंत्र के प्रहरी सुन लेना
निर्माणों की राहों पर इतिहास नया अपना गढ़ना
भूख, गरीबी, बेकारी, मंहगाई मजहब से लड़ना
नीतियां रखना सिद्धांतों से प्यार रहे
जनमत का आदेश यही है अब स्थिर सरकार रहे।

इस्तीफे से रिक्त सीट के लिए गिल का सुझाव

निकटतम प्रतिद्वंद्वी निर्वाचित घोषित किया जाए

मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ० एम० एस० गिल ने सुझाव दिया है कि दो स्थानों से निर्वाचित उम्मीदवार के एक स्थान से इस्तीफा देने की स्थिति में वहां उसके निकटतम प्रतिद्वंद्वी निर्वाचित कर दिया जाना चाहिए ताकि उपचुनाव भी दोबारा नहीं कराना पड़े। उन्होंने कहा वैसे एक उम्मीदवार के दो स्थानों से चुनाव लड़ने का कानून 1996 में ही बना था। उससे पहले कोई भी उम्मीदवार कितने ही स्थान से चुनाव लड़ सकता था।

सनद रहे कि कुछ राजनीतिक दलों ने विचार व्यक्त किया है कि एक उम्मीदवार को एक ही स्थान से चुनाव लड़ना चाहिए क्योंकि देश को ऐसी स्थिति में फिर से एक स्थान पर उपचुनाव कराना पड़ता है। इस बारे में संसद ही कोई कानून बना सकती है।

अनूठे चुनाव प्रचार की एक वानगी

यों तो इस बार के मध्यावधि चुनाव में सभी दलों एवं उसके नेताओं के अलग-अलग तौर-तरीक रहे किन्तु उ०प्र० के खीरी संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से **पोल खोल पार्टी** के निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में लड़े **नरेश सिंह भदौरिया** के चुनाव प्रचार प्रसार का तौर-तरीका अपने ढंग का अनूठा रहा। पेशे से अधिवक्ता भदौरिया अपनी विचित्र चुनाव प्रचार शैली की वजह से वे मतदाताओं में आकर्षण का केन्द्र बने रहे।

गले में जूतों की माला डाले, हाथ में अपना चुनाव चिन्ह **आरी** लिए, काला सफेद झण्डा लगी जीप के बोनट पर बैठ कर वह सड़कों पर निकलते थे तो लोगों का हुजूम उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़ता था। जीप के बोनट पर बैठ खूलेआम उन्होंने कहा-**यदि मैं लोकसभा का चुनाव जीता तो देशद्रोहियों, आतंकवादियों, असमाजिक तत्वों तथा भ्रष्टाचारियों से अपने मधुर संबंध बनाऊंगा। यदि लालू प्रसाद ने गायों और बकरियों का चारा खाया है तो मैं सूअरों का चारा भी चट कर जाऊंगा। यदि किसी ने घोटाला करके यूरिया हड़पा है तो मैं सल्फास घोटाला करके सल्फास भी हजम कर जाऊंगा।**

क्षेत्र के कई जगह पर भदौदिया ने कहा-"मैं वोट मांगने नहीं आया हूं। यदि चुनाव जीत गया तो अगले पांच साल तक क्षेत्र में मुंह नहीं दिखाऊंगा। यदि हमारे क्षेत्र का कोई व्यक्ति दिल्ली के मेरे बंगले पर पहुंच गया तो मेरे चमचे चौकीदार, नौकर-चाकर उसे धक्के मारकर बाहर निकाल देंगे। लेकिन चोरों, डकैतों, बदमाशों के लिए मेरे घर हमेशा खुले रहेंगे।"

भदौरिया ने यह भी कहा था-**"सांसद बनने पर मैं धन बटोरने में कोई कसर नहीं छोड़ूंगा।"** अपने चुनाव निशान आरी की ओर इशारा करते हुई मतदाताओं को अगाह करते थे कि चुनाव जीतने के बाद इसी आरी से वे उनकी जेब काटेंगे और वक्त मिला तो वे उनकी गरदन काटने में भी पीछै नहीं हटेंगे।

आप यदि गौर करें भदौरिया जी के प्रचार तरीके एवं उनकी शैली को तो उनमें आज की राजनीति पर एक तीखा व्यंग्य पाएंगे। जितनी तरह की हरकतें आज राजनेताओं तथा उनके सिपासलारों द्वारा की जा रही हैं उन सब पर अपना तीखा प्रहार भदौरिया ने अपने चुनाव प्रचार के माध्यमों से किया। यदि सच कहा जाय तो भदौरिया ने अपनी पार्टी **पोल खोल पार्टी** के नाम को सार्थक सिद्ध करते हुए विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की राजनीतिक पार्टियों एवं उसके नेताओं की पोल खोलने में भरसक कोई कोर-कसर नहीं उठा रखा था। हास्य-व्यंग्य के माध्यम से, सच कहा जाय तो मतदाताओं के समक्ष एक सच्ची तस्वीर पेश करने का प्रयास इस प्रत्याशी ने किया जो काबिले तारीफ कहा जाएगा।

विलास राव देशमुख नए मुख्यमंत्री

हफ्ते भर आंख मिचौनी के बाद अन्तत: कांग्रेस-राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक कांग्रेस की सरकार महाराष्ट्र में बनी। कांग्रेस विधायक दल के नेता **विलास राव देशमुख** राज्य के 21 वें मुख्य मंत्री हुए। महाराष्ट्र के राज्यपाल डा. पी.सी. अलेक्जेंडर ने नई सरकार से विधानसभा का सत्र शुरू होने की तिथि से 15 दिन के अन्दर सदन में बहुमत साबित करने को कहा है। कांग्रेस के सहयोगी दल हैं - रालोकां, पी.डब्लू. पी., जद(यू.), सपा, आर. पी. आई(अम्बेदकर), सजपा तथा स्वतंत्र।

राष्ट्रपति ने बिना तामझाम के वोट दिया

कृष्णमूर्ति बिना वोट डाले लौट गए

मध्यावधि चुनाव-99 में भारत के राष्ट्रपति के० आर० नारायणन ने 5 सितम्बर को राष्ट्रपति भवन स्थित प्रेसीडेन्ट एस्टेट स्कूल के मतदान केन्द्र में जाकर बिना किसी तामझाम और मीडिया की चकाचौंध के एक सामान्य नागरिक की ही तरह मतदान किया। उन्होंने कहा कि एक नागरिक के नाते यह उनका कर्तव्य और अधिकार है कि वह अपने मताधिकार का प्रयोग करें। मतदान के वक्त उनकी सुपुत्री भी साथ में थी।

दूसरी ओर चुनाव आयुक्त जी० वी० जी० कृष्णमूर्ति को पंडारा पार्क मतदान केन्द्र से अपने वोट का इस्तेमाल किए बिना दुखी मन से लौटना पड़ा। मतदाता सूची में उनका नाम नहीं था।

किंकर्तव्यविमूढ़ कृष्णमूर्ति ने अन्य मतदान केन्द्रों में भी जाकर अपना नाम तलाशने की कोशिश की लेकिन उन्हें कहीं अपना नाम नहीं मिला।

तमिलनाडू विधानसभा चुनाव में भी पी.एम.के. डी.एम.के. साथ

-विचार ब्यूरो प्रमुख, चेन्नई से

तमिलनाडु में राजग की एक सहयोगी पार्टी पट्टाली मक्काल काची (पी.एम.के) तमिलनाडु विधान सभा के अगले चुनाव में भी अपना गठबंधन डी.एम.के. के साथ जारी रखेगी। पी.एम.के. के संस्थापक डॉ. रामाडौस ने यह स्पष्ट किया कि गठबंधन सरकार में शामिल होने का आमंत्रण पाने के पश्चात भी सत्ता में अपनी भागीदारी की मांग उनकी पार्टी नहीं करे। डॉ.रामाडौस ने यह दावा किया कि जिन उतरी जिलों के क्षेत्रों में लोकसभा के चुनाव में पी.एम.के. की जीत हुई है उन दलित बहुल क्षेत्रों में उनकी पार्टी के 1100 से भी बधिक शाखाएं कार्यरत हैं। दक्षिण जिलों के क्षेत्रों में टी.एम.सी. नेतृत्व वाली मोर्चे की वजह से वोट बंट गए जिसके परिणामस्वरूप अन्ना डी.एम.के के प्रत्याशियों की जीत हो गई।

इस बीच तमिलनाडु के मुख्य मंत्री श्री एम.करुणानिधि ने समाचार पत्रों में इस समाचार का खंडन करते हुए कहा है कि जनवितरण प्रणाली के अन्तर्गत बिकनेवाले चावल की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

मुलायम ने लालू से नाता तोड़ा

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष **मुलायम सिंह यादव** ने **लालू प्रसाद यादव** के राष्ट्रीय जनता दल से नाता यह कहकर तोड़ा कि राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक मोर्चा अब आप्रासंगिक है। हाल के मध्यावधि चुनाव में उत्तरप्रदेश में हुई उनकी भारी जीत के पश्चात उनका अगला पड़ाव बिहार होगा जहां वे अपनी शक्ति लगाएंगे। **जिसने कांग्रेस को छूआ, उसका नाश हुआ है........ जिसका भाजपा या कांग्रेस के साथ गठबन्धन है वह हमारे साथ नहीं हो सकता**, ऐसा उन्होंने कहा।

केन्द्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य और उनके विभाग

प्रधानमंत्री	:	अटल बिहारी वाजपेयी

कैबिनेट मंत्री

लालकृष्ण आडवाणी	:	गृह
अनंत कुमार	:	संस्कृति युवा मामले और खेल
टी.आर. बालू	:	पर्यावरण एवं वन
सुश्री ममता बनर्जी	:	रेल
जार्ज फर्नांडीस	:	रक्षा
जगमोहन	:	नगर विकास
सत्यनारायण जटिया	:	शहरी रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन
राम जेठमलानी	:	विधि, न्याय और कम्पनी मामले
मनोहर जोशी	:	भारी उद्योग और सार्वजनिक उपक्रम
डॉ. मुरली मनोहर जोशी	:	मानव संसा. विकास, विज्ञान प्राद्योगिकी
पी.आर.कुमारमंगलम	:	ऊर्जा
प्रमोद महाजन	:	संसदीय कार्य और जल संसाधन
मुरासोली मारन	:	वाणिज्य और उद्योग
राम नाईक	:	पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस
नीतीश कुमार	:	भूतल परिवहन
जुएल उरांव	:	जनजाति मामले
राम विलास पासवान	:	दूरसंचार
नवीन पटनायक	:	खान एवं खनिज
सुंदर लाल पटवा	:	ग्रामीण विकास
सुरेश प्रभु	:	रसायन, उर्वरक
कांशीराम राणा	:	कपड़ा
शांता कुमार	:	उपभोक्ता मामले एवं सार्वजनिक वितरण
जसवंत सिंह	:	विदेश
यशवंत सिन्हा	:	वित्त
शरद यादव	:	नागरिक उड्डयन

राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार

श्रीमती मेनका गांधी	:	सामाजिक न्याय एवं रोजगार
अरुण जेटली	:	सूचना एवं प्रसारण
एम.कन्नप्पम	:	गैर परंपरागत ऊर्जा
दिलीप रे	:	इस्पात
श्रीमती वसुंधरा राजे	:	लघु उद्योग
एन.टी. षणगुम	:	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
सुश्री उमा भारती	:	पर्यटन

राज्यमंत्री

रमेश बैस	:	रसायन एवं उर्वरक
विजया चक्रवर्ती	:	जल संसाधन
श्रीराम चौहान	:	संसदीय कार्य
बंडारू दत्तात्रेय	:	नगर विकास
जयसिंहराव पाटिल	:	मानव संसाधन विकास
संतोष गंगवार	:	विज्ञान एवं प्राद्योगिकी
चमन लाल गुप्ता	:	नागरिक उड्डयन
डा. वल्लभ भाई कटोरिया	:	भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उपक्रम
भगन सिंह कुलस्ते	:	संसदीय मामले
वी.धनंजय कुमार	:	वित्त
बंगारू लक्ष्मण	:	योजना एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन
सुमित्रा महाजन	:	मानव संसाधन विकास
सुभाष महेरिया	:	ग्रामीण विकास
बाबूलाल मरांडी	:	पर्यावरण एवं वन
जयवंती बेन मेहता	:	ऊर्जा
मुनीलाल	:	श्रम एवं नियोजन
उमर फारूक अब्दूला	:	वाणिजय और उद्यासेग
हरेन पाठक	:	रक्षा
देवेन्द्र प्रधान	:	भूतल परिवहन
ई. पुन्नुस्वामी	:	पेट्रोलियम
ए. राजा	:	शहरी विकास
ओ. राजगोपाल	:	विधि, न्याय एवं कंपनी मामले
डा. रमन	:	वाणिज्य और उद्योग
एन. जी. रामचन्द्रन	:	कपड़ा
विद्या सागर राव	:	गृह
सत्यनारायणन	:	कृषि
बच्ची सिंह रावत	:	रक्षा
सैयद नवाज हुसैन	:	खाद्य प्रसंस्करण
तपन सिकधर	:	दूरसंचार
दिग्विजय सिंह	:	रेल
टी. एच. चौबा सिंह	:	संस्कृति युवा मामले तथा खेल
वी.श्री निवास प्रसाद	:	उपभोक्ता मामले तथा सार्वजनिक वितरण
आई.डी. स्वामी	:	गृह
श्रीमती रीता वर्मा	:	खान एवं खनिज
बाला साहेब बिखे पाटिल	:	वित्त
हुकुमदेव नारायण यादव	:	कृषि

जिन विभागों का वितरण नहीं किया गया है। वह प्रधानमंत्री देखेंगे। श्री वसुंधरा राजे राज्यमंत्री के रूप में प्रधानमंत्री को कार्मिक, जन शिकायत और पेंशन ऊर्जा तथा अंतरिक्ष विभागों में सहयोग करेंगी। दिलीप रे और संतोष गंगवार संसदीय मामलों के मंत्री को भी सहयोग करेंगे।

तेरहवीं लोकसभा :- दलीय स्थिति

कुल सीट	543
घोषित परिणाम	537

राजग

भाजपा	182
तेदेपा	29
जद (यू.)	20
शिवसेना	15
डीएमके	12
बीजद	10
तृणमूल कांग्रेस	08
इनेलोद	05
एमडीएमके	05
पीएमके	05
लोकतांत्रिक कांग्रेस	02
अकाली दल	02
एसडीएफ	01
एमएससीपी	01
हिविकां	01
कुल	298

कांग्रेस गठबंधन

कांग्रेस	112
अन्नाद्रमूक	10
राजद	07
आईयूएसएल	02
आरएलडीए	02
केसीएम	01
कुल	134

वाम मोर्चा

माकपा	32
भाकपा	04
आरएसपी	03
फारवर्ड ब्लाक	02
कुल	41

अन्य

बसपा	14
सपा	26
राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी	07
शिरोमणि अकाली दल-ए	01
एआईएमएम	01
नेशनल कांग्रेस	01
केरल कांग्रेस-जे	01
जद-सेक्युलर	01
पीडब्ल्यूपी	01
सजपा	01
निर्दलीय	07
कुल	64

क्या रेलमंत्री ममता जी नीतीश कुमार की राह चलेंगी ?-सिद्धेश्वर

भारत सरकार की नई रेलमंत्री ममता बनर्जी को उनकी इच्छानुसार रेल मंत्रालय का दायित्व दिया गया है क्योंकि इसके पूर्व भी सरकार में शामिल होने के सवाल पर कई बार रेल विभाग लेने की अपनी चाहत से प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को अवगत कराती रही हैं। पश्चिम बंगाल में लम्बित रेल योजनाओं को वह कार्यान्वित करना चाहती थी। सो उन्हें वही मिला जो वह चाहती थीं। तेजतर्रार स्वभाव की ममता बनर्जी का रेल मंत्री बनने के बाद खासकर प.बंगाल के निवासियों की एक और अपेक्षाएं उनसे अधिक हो गई हैं तो दूसरी ओर रेलवे अधिकारियों की परेशानियां भी बढ़ गई दिखती है क्योंकि ममता जी अपना कार्य काफी साफ-सुथरा रखना तथा रेलवे को काफी चुस्त-दुरूस्त करना चाहती हैं। इसलिए स्वाभाविक है कि वह रेल मंत्रालय को एक नया रूप प्रदान करना चाहेंगी। रेलवे के इतिहास में पहली बार एक महिला रेलमंत्री बनी हैं। भारतीय रेल यों भी कई चुनौतियों से गुजरना पड़ रहा है। रेल में आए दिन हो रही दुर्घटनाओं को कम करने के लिए तथा लम्बित परियोजनाओं को कार्य रूप देने के लिए उन्हें न केवल कड़े कदम उठाने होंगे बल्कि साधन के स्रोतों को बढ़ाने होंगे। अगर नए स्रोत नहीं मिल पाते हैं तो वे रेल किराए तथा माल भाड़े मे वृद्धि करने को बाध्य होंगे। यों भी डीजल तथा अन्य सामग्रियों की कीमत में वृद्धि से रेलवे को 6 माह के लिए 400 करोड़ रुपयों की जरूरत है।

ऐसा समझा जाता है कि ममता बनर्जी नीतीश कुमार के रास्ते ही चलेंगी क्योंकि श्री कुमार ने रेलवे में पारदर्शिता लाने के लिए अनेक कदम उठाए थे, भ्रष्टाचार रोकने के लिए उन्होंने परीक्षा प्रणाली में काफी परिवर्तन किया था जिसमें उन्हें काफी सफलता भी मिली थी। इसलिए इन कदमों को बरकरार करवाना ममता जी के लिए लाजिमी होगा। हलांकि यह भी सच है कि ममता बनर्जी तथा नीतीश कुमार का स्वभाव विपरीत है। जहां श्री कुमार शांत स्वभाव के हैं वहीं सुश्री बनर्जी चंचल हैं तथा स्थिर से बैठने वाली स्वभाव की नहीं हैं। इसलिए इनके कार्य करने की विधि अलग हो सकती है।

एक बात और गौर तलब है कि रेल मंत्रालय में नीतीश कुमार की पूर्व पार्टी समता पार्टी के प्रवक्ता तथा वर्तमान जद (यू.) के नेता दिग्विजय सिंह रेल राज्य मंत्री बने हैं जो अपनी कर्मठता के लिए परिचित तो हैं ही अनुभव तथा वक्तृत्व कला के भी धनी हैं। इसलिए ममताजी को उनसे काफी सहयोग की अपेक्षा की जाती है। प.बंगाल के साथ-साथ बिहार की लम्बित रेल परियोजनाओं को भी वे अमली जामा फहराएंगे, ऐसी आशा की जाती है क्योंकि बहुत सोच-समझकर ही उनके सबल कंधे पर रेल राज्यमंत्री का दायित्व दिया गया है। हमारी शुभकामना दोनों के साथ है।

अटल सरकार को गिराना मंहगा पड़ा सोनिया को

केन्द्र में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार को मात्र एक मत से गिराना भारी मंहगा पड़ां सोनिया गांधी को पिछले दिनों सम्पन्न मध्यावधि चुनाव-99 में दो हस्तियों यथा अटल बिहारी वाजपेयी तथा सोनिया गांधी के बीच भारतीय मतदाताओं ने सचमुच अटल जी को नेता माना। युद्धऔर शांति या यों कहा जाय कि बैलेट और बुलेट की लड़ाई मे भारतीय जनता ने अटल पर अपने विश्वास व्यक्त किए। इस चुनाव में सोनिया के नेतृत्व में कांग्रेस को बुरी तरह पराजय का सामना करना पड़ा। मात्र इस बार उसे 112 सीटें मिल पाईं जबकि 1975-77 के आपातकाल के बाद भी उसे 156 सीटें हासिल हुई थीं।

आपको याद होगा ब्रिटेन में भी आम चुनाव लेबर तथा टॉरी पार्टियों ने अपने प्रधानमंत्री पद के दावेदार प्रत्याशियों को सामने रखकर लड़ा था। पिछले चुनाव में टॉनी ब्लेयर तथा जॉन मेजर के बीच ब्रिटेन में चुनाव लड़ा गया था। इसी प्रकार की बात राष्ट्रपति के चुनाव के वक्त अमरीका में देखने में आता है। दरअसल मतदाता भी इच्छुक रहते हैं कि उनकी सरकार का नेतृत्व कौन करने जा रहा है। इसलिए अच्छी या खराब सरकार इस बात पर निर्भर करती है कि प्रधानमंत्री के उम्मीदवार या दलों के नेतृत्व कौन करने जा रहा है। इसलिए अच्छी यह क्षराब सरकार इस बात पर निर्भर करती है कि प्रधानमंत्री के उम्मीदवार या दलों के नेतृत्व कितने सशक्त, अनुभवी, ईमानदार तथा सक्षम प्रशासक हैं।

चुनाव-99 में जो जनादेश मिला उसमें निश्चित रूप से मतदाताओं नअटल बिहारी वाजपेयी तथा सोनिया गांधी के व्यक्तित्व को इन विशेषताओं के आधार पर जांचा परखा और अन्ततः सोनिया गांधी को खारिज किया। इस चुनाव के नतीजे बताते हैं कि उन स्वार्थी तथा सत्तालोलूप नेताओं को जिन्होंने केन्द्र की भाजपानीत गठबंधन की सरकार को अक्षम बताकर उसे एक वोट से गिराने का घृणित काम किया और वैकल्पिक सरकार देने में वे असमर्थ रहे, मतदाताओं ने उन्हें पाठ पढ़ाया।

सोनिया गांधी उन नेताओं में से एक थी जिसने अपने को प्रधानमंत्री की गद्दी ऐन-केन प्रकारेण हथियाने का सब हथकंडा अपनाने का असफल प्रयास किया। आखिर तभी तो उनकी पार्टी बुरी तरह परजित हुई। इससे यह स्पष्ट हो गया कि पिछली सरकार को गिराना बेमतलब एवं बिल्कुल गलत साबित हुआ। मध्यावधि चुनाव को जनता के कंधे पर थोपकर अरबों रुपये की बर्बादी हुई तथा जो समय भारत के विकास के लिए लगाना था वह चुनाव कराने में चला गया। आखिर इसकी जबावदेही किस पर जाएगी ? यह निश्चित रूप से बेवजह किसी भी प्रकार सत्ता की कुर्सी की लालसा वाले नेताओं को ही इसका उत्तर देना होगा।

MAHESH HOMEOPATHIC LABORATORY
BAHADURPUR, PATNA-16
ADMINISTRATIVE OFFICE : JAMAL ROAD, PATNA-1
PH: 230641(O), 674041(R)
OFFERS A WIDE RANGE OF MOTHER TINCHERS, DILLUTION BIOCHEMIC TABLETS PATENTS, GLOBELS.
OUR PRODUCTS : ALPHA TONICS, COUGH DYNE, BABY TONICS, VITA-TONE, EMOVITA, GASTROTONE, PILO-CARPOUS, HAIR OIL, A BONDED LABORATORY

चुनावी हिंसा का दौर जारी रहा

लोकतंत्र का दामन खून में सन गया

-विनय कुमार सिन्हा

तेरहवीं लोकसभा चुनाव के प्राय: सभी चरणों में चुनावी हिंसा का दौर जारी रहा। चुनाव आयोग की सारी तैयारियां खूंटी में टंगी रह गई और लोकतंत्र का दामन खून में सन गया। चुनाव से जुड़े सैंकड़ों लोग तथा जवान सहित सैकड़ों मतदाता चुनावी हिंसा की भेंट चढ़ गए। यह चुनावी हिंसा न केवल बिहार में बल्कि आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र तथा उत्तरप्रदेश आदि राज्यों में जमकर हुई। बिहार के पहले चरण के चुनाव में नक्सल प्रभावित क्षेत्र पलामू में बारूदी सुरंग विछाकर नक्सली संगठनों ने अपनी घोषणा को अमलीजामा पहनाने का काम किया। पलामू तथा हजारीबाग क्षेत्र में पुलिसकर्मी सहित कई दर्जन लोग बारूदी सुरंग फटने से मारे गए। इसी प्रकार आन्ध्रप्रदेश में भी बारूदी सुरंग फटने से अनेकों लोग मृत्यु के मुंह में चले गए।

बिहार के लिए तो खैर यह नयी घटना नहीं है। प्रथम आम चुनाव 1952 से ही यह जारी है और यदि राजनीति का अपराधीकरण इसी तरह होता रहा तो नेताओं की कृपा से यह आगे भी जारी रहेगा। बिहार विसंगतियों का राज्य है जहां के लोग इन विसंगतियों को ही अपनी नियति मान चुके हैं। न तो इससे उबारने का प्रयास जनता करती है और न सरकार क्योंकि ये ही विसंगतियां राजनीतिक सत्ता तक पहुंचने की सीढ़ियां हैं। यही कारण है कि बिहार में प्राय: सभी राजनीतिक पार्टियां एवं उनके नेता उसे तोड़ने के बजाय और भी पुख्ता बनाने में कोई कोर कसर नहीं उठा रखे हैं। हलांकि यह भी सच है कि बिहार अथवा किसी भी राज्य में हुई हिंसक घटनाओं की मुख्य वजह वहां चल रही सामाजिक और विचारधारात्मक लड़ाई है जिसके लिए वहां की राजनीति भी कम जिम्मेदार नहीं है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि प्रदेश के राजनेता अपने राजनीतिक लाभ के लिए हिंसा को बढ़ावा देते हैं। यही कारण है कि हिंसा के खिलाफ व्यापक माहौल नहीं बनाया जा सका। फिर भी चुनाव आयोग की विफलता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वह इस आशंका से अनजान नहीं था। इसके बावजूद हिंसा रोकने का व्यापक प्रबंध नहीं किया जा सका।

इसी प्रकार महाराष्ट्र में चुनाव के दूसरे चरण के दौरान राष्ट्रवादी कांग्रेस के कार्यकर्त्ता शरद वावन लेवे की जिस निर्मम ढंग से हत्या की गई वह भी चुनावी हिंसा का एक शर्मनाक उदाहरण है क्योंकि इस जघन्य हत्या का आरोप महाराष्ट्र के राजस्व राज्यमंत्री उदयनराजे भोंसले पर लगाया गया है। यदि सरकार में उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति इस किस्म की चुनावी हिंसा में लिप्त होने लगे तो अंदाज लगाया जा सकता है कि हमारे देश में लोकतंत्र की नकेल किनके हाथों में है। हलांकि उस मंत्री को गिरफ्तार कर लिया गया फिर भी उनके इस हत्या में शामिल होने के आरोप की पूरी जांच होनी चाहिए। मतदान के दौरान निष्पक्षता बरतने के लिए यदि ठोस कदम नहीं उठाए गए तो हमारा लोकतंत्र महज नाटक बनकर रह जाएगा। दूसरी बात कि राजनीति के अपराधियों की विदाई तभी संभव होगी जब सभी संबद्ध पक्ष चुनावी हिंसा को तौबा करेंगे। जबतक अपनी ओर से सभी राजनीतिक पार्टियां अपराधियों को टिकट देना बंद नहीं करेंगी तब तक सारा रोना-पीटना बेमानी है। इससे वोट बढ़ सकता है पर हिंसा और चुनावी भ्रष्टाचार नहीं समाप्त हो सकता। आज राजनीति भी सबसे बड़ा व्यवसाय है। परिणाम है कि सरकार का निर्णय मतदाता नहीं अपराधी तत्व करने लगे हैं। इसीलिए मतदान के प्रति लोगों में उत्साह घटता जा रहा है। मतदाता ठगा-ठगा तथा थका मांदा अनुभव कर रहा है। हर दल के नेता ने उसे ढकने का काम किया है। आज मतदाता राजनीतिक दलों के लिए एक ऐसा उपभोक्ता हो गया है जिसे लुभाने-रिझाने के लिए राजनीतिक पार्टियां हर तरह हथकंडा अपना रहें हैं। **इसलिए आज इस चीज पर हमें विचार करने की जरूरत है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था और इस व्यवस्था में हर राजनीतिक दल में उपजे लंपट-लवार, आचार- विचारहीन देशी-विदेशी पूंजीपतियों की दलाली करनेवाले, कमीशन खानेवाले, अवसर देखकर फनियर सांप से भी ज्यादा केंचुल बदलने वाले और जनहित की बात करते हुए जनहित के लिए कुछ भी नहीं करनेवाले नेताओं की मतदाता के साथ रिश्ता तलाशा जाना चाहिए। क्योंकि आज की इस लोकतांत्रिक व्यवस्था के आगे हर समस्या दिनोंदिन विराट होती चली जा रही है, चाहे वह रोजगार की समस्या हो, शिक्षा व स्वास्थ्य की या बिजली पानी की।**

राजनीति में आस्था बदलती जा रही है जिसका कारण है नेताओं का झूठा आश्वासन। यह आश्वासन पूरा नहीं होता है तो मतदान केन्द्रों पर कब्जा की जरूरत पड़ती है और इसके लिए नेताओं को गुंडों का सहारा लेना पड़ता है। राजनीति में अपराधी तत्वों का प्रारंभ तो पोलिंग एजेंट के रूप में शरारती तत्वों को बैठाकर ही की जाती है राजनीतिक पार्टियां और उसके उम्मीदवार चुनाव की घोषणा होते ही सबसे पहले अपराधी तत्वों की खोज करने लगते हैं। इस बार के चुनाव में अधिकतर उम्मीदवारों ने अपराधियों का सहारा लिया। फलत: बड़े पैमाने पर हिंसा हुई। बिहार में खासकर इस बार जो चुनाव हुआ वह मजाक बनकर रह गया। मतदान केन्द्रों पर कब्जा में कोई दल पीछे नहीं रहा। सत्तासीन-दल को भले मतदान कार्य में लगे पदाधिकारियों तथा पुलिस बल की कृपा कुछ अधिक हो जाती है। इसके विपरीत ऐसा भी देखा गया कि जो प्रत्याशी अपराधी तत्वों का सहयोग नहीं ले सके पीछे पड़ गये। इसलिए चुनाव में अब उम्मीदवार का चरित्र, व्यक्तित्व, ईमानदारी और उसके द्वारा किए कार्य का कोई महत्व नहीं रह गया है। इसलिए हमारे लोकतंत्र की विडम्बना यह हो गयी है कि चुनाव के नाम पर अयोग्य एवं अवांछित व्यक्ति धड़ल्ले से राजनीति के गलियारे में प्रवेश करते जा रहे हैं । चुनाव में असामाजिक तत्वों का प्रयोग आम बात हो गयी। मतदाताओं को डरा-धमकाकर चुनाव जीतने का अशुभ क्रम अब जोर पकड़ रहा है।

सकरात्मक परिवर्तन कोई असंभव बात नहीं है केवल जरूरत है संकल्पशक्ति की। दुर्भाग्यवश इसी संकल्पपूर्ण शक्ति का अभाव आज प्राय: सभी राजनीतिक दलों में दिखता है। यही कारण है कि पिछले पांच दशक के बाद भी हमारे देश में समुचित विकास नहीं हो पाया है। इस पर देश के सभी राजनीतिक दलों एवं विचारवान लोगों को गंभीरता से विचार करना होगा, तभी लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हो पाएंगी।

संपर्क : पंचवटीनगर, श्रमजीवी कॉलोनी, पटना-16

मतदाता आखिर क्यों उदासीन रहे

❑ सिद्धेश्वर

13वीं लोकसभा के चुनाव-99 के प्राय: सभी चरणों में हुए मतदान के प्रति मतदाताओं की उदासीनता परिलक्षित हुई जो दुनिया के सबसे बड़े हमारे लोकतंत्र के लिए गंभीर चिंता का विषय है। इस मध्यावधि चुनाव में भारत के 60 करोड़ 50 लाख मतदाताओं द्वारा कुल 9 लाख मतदान केन्द्रों पर अपने 543 प्रतिनिधियों के चयन के लिए मतदान सम्पन्न हुआ। इस चुनाव पर तकरीबन 900 करोड़ रुपये का पांच वर्ष में तीसरी बार हुआ। चुनाव आयोग के आंकड़े बताते हैं कि 1996 के चुनावों पर 517 करोड़ रुपये, 1998 में यह लागत 850 करोड़ रुपये पहुंच गई। कुल 543लोकसभा सीटों में भारत के 25 प्रदेशों से 530 लोकसभा सदस्य तथा 13 सदस्य केन्द्रशासित क्षेत्रों से चुनना था। कुल 545 सीटों में दो सीटें नामित होना है। इन 543 सीटों में से 79 सीटें अनुसूचित जाति तथा 41 अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। बाकी बचे 423 सीटें सामान्य श्रेणी के हैं। इन 543 में से बिहार के चार लोकसभा पूर्णिया, राजमहल, भागलपुर एवं खगड़िया के चुनाव तथा असम की ध्रुवी सीट के मतदान स्थगित कर दिए गए। इसका चुनाव 28 अक्टूबर को होने की संभावना है।

डेवलपमेंट एंड रिसर्च सर्विसेज के चुनाव आंकड़ा विश्लेषक जी०वी०एल० नरसिंहराव कहते हैं कि भारतीय चुनावों की बिडम्बना है कि चुनाव लड़नेवाले उम्मीदवारों की कुल संख्या में वृद्धि हो रही है जबकि मतदाताओं की संख्या में गिरावट आयी है। इस चुनाव में 5 सितम्बर को पहले चरण के मतदान में मात्र 55 प्रतिशत, 11 सितम्बर को दूसरे चरण 56 प्रतिशत, 18 सितम्बर तीसरे चरण में 53 प्रतिशत, 25 को चौथे चरण में 51.16 प्रतिशत ही मतदान हुआ। कुल मिलाकर चौथे चरण तक 418 लोकसभा सीटों के मतदान का राष्ट्रीय औसत मात्र 58 प्रतिशत ही दर्ज हुआ। **सेंटर फॉर डवलपिंग सोसाइटिज के डा०संजय कुमार** कहते हैं "अगर आप 1998 के आम चुनावों को छोड़कर सभी मध्यावधि चुनावों और यहां तक कि विधानसभा चुनावों में नजर डालें तो आप कम मतदान की प्रवृति पाएंगें। संविधान ने जिस जनता को राष्ट्र के सार्वभौम अधिकार सौंपे उसकी यदि लोकतंत्र के प्रति आस्था डवांडोल होने लगे तो उसका क्या भविष्य होगा?" पिछले दो दशक से चुनाव में मतदान का प्रतिशत लगातार कम होता जा रहा है जो इस बात का सबूत है कि जनता की दिलचस्पी घटती जा रही है। राजधानी दिल्ली के बारे में खबर है कि मतदान तो शांतिपूर्वक हुआ पर मतदाताओं में ज्यादातर गरीब तवके के लोग थे। उच्च सुविधा भोगी वर्ग के साथ-साथ मध्यवर्गीय भी अब मतदान से अरूचि वाले वर्ग में शामिल हो रहे हैं। बातचीत में भी आम आदमी लोकतंत्र के प्रति एक चुकी हुई आशा के साथ ही शामिल है। बहुत सारे जागरूक लोग तो इसलिए भी वोट डालना छोड़ देते हैं कि जब वे मतदान केन्द्र पहूचते है तो पता चलता है कि उनका वोट तो कोई और डाल चुका है। और तो और इस बार तो चुनाव आयुक्त जी०बी०जी०कृष्णमूर्ति को भी बिना वोट डाले लौट जाना पड़ा क्योंकि उनका नाम मतदाता सूची से गायब था। ठीक यही हाल बिहार के राज्यपाल बी.एम.लाल को भी हुआ। उन्हें भी बिना वोट डाले वापस होना पड़ा।

तो आइए अब हम एक नजर मतदाता की उदासीनता के कारणों पर डालते हैं। इसके अनेक कारण हो सकते हैं किन्तु उनमें राजनीति में गिरावट ही सर्वप्रमुख प्रतीत होता है। यह आस्था का संकट उसका ही दुष्परिणाम है। इससे हमारे लोकतंत्र पर प्रश्नचिन्ह लगने प्रारम्भ हो जाते हैं। क्योंकि संविधान चाहे जितना अच्छा हो, पर उसे कार्यान्वित करनेवाले यदि बुरे होंगे तो वह भी बुरा हो जाएगा। **डा०अम्बेदकर ने यह कह कर इस खतरे के प्रति देशवासियों को अगाह किया था कि यदि हमने लोकतंत्र की सतत रक्षा नहीं की और व्यक्ति पूजा को अपनाया तो यहां अधिनायकवाद स्थापित होने में कोई बाधा नहीं रह जाएगी।** हमारे देश में व्यक्ति पूजा की प्रवृति पुरानी हो गई है और आज तो इसे स्पष्ट ही देखा जा सकता है। प्राय: प्रत्येक दल अपने एक व्यक्ति को आगे कर इस बार का चुनाव लड़ा है। राजग जहां अटल जी को प्रधानता दी, वहीं कांग्रेस गठबंधन ने सोनिया को आगे किया। इसी प्रकार राष्ट्रीय कांग्रेस के शरद पवार, सपा के मुलायम सिंह को ही दल ने प्रमुखता दी। यही कारण है कि पार्टी के बजाय व्यक्ति को महत्व दिया गया।

हलांकि यह भी सच है कि जनता इसका उपचार कर सकती है पर उसकी मतदान में उदासीनता ही उत्तरदायी हो जाती है। सिद्धांतहीन सत्ता का समीकरण तथा राजनीति में नैतिकता की गिरावट एवं उसकी मूल्यहीनता ने मतदाता को उदासीन होने के लिए विवश किया है राजनेताओं के थोथे आश्वासन तथा बढ़ती चुनावी हिंसा भी लोकतंत्र के प्रति उदासीनता बढ़ाने में सहायक हुई है क्योंकि हिंसा के बढ़ने तथा नेताओं के खोखले दावे ने व्यवस्था को भी भ्रष्ट किया है।

हाल ही में 30 सितम्बर, 99 को चुनाव आयुक्त के पद से सेवानिवृत हुए डॉ०जी०वी०जी कृष्णमूर्ति का भी आकलन है कि अपराधिक छवि के राजनेताओं के शिखर पर पहूंच जाने के कारण लोकतांत्रिक ढांचे को खतरा पैदा हो गया है जिसके कारण आम मतदाता में आत्मघाती निराशा घर करने लगी है और मतदाता का प्रतिशत घटने लगा है।

पिछले दिनों नई दिल्ली में **सेंटर फॉर मीडिया एंड कल्चरल रिसर्च** द्वारा **"विश्व के वृहत्तम व्यावहारिक लोकतंत्र के रूप में उभरे भारत"** विषय पर आयोजित गोष्ठी में उपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए डॉ. कृष्णमूर्ति ने कहा कि मतदाता जब अपराधिक छवि वाले राजनेता को लोकसभा में भेजेंगे तो देश का क्या होगा यह खुद सोचने का विषय है। **इस बार के चुनाव प्रचार में नेताओं ने जिस प्रकार एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाया और चुनाव मैदान में प्रत्याशियों ने एक दूसरे पर कीचड़ उछाले तथा जनहित के सभी मुद्दे गौण हो गए उससे मतदाताओं में हताशा होना स्वाभाविक है। हलांकि यह स्थिति देश के लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं है। लोकतंत्र टकराव से टूटता है और सामंजस्य से मजबूत होता है।** अनेक प्रमुख राजनीतिक पार्टियां और उसके नेता जानबूझकर चरित्रहनन के मार्ग पर तो चलते ही रहे, साथ ही वे चुनाव प्रचार के लिए घृणित हथकंडे भी अपनाते रहे। इस बार चुनाव प्रचार के दौरान जैसी मनगढ़ंत कहानियां सुनने को मिली उससे किसी भी सच्चे लोकतंत्रवादी का मस्तक शर्म से झुक जाएगा। इस बार जैसी मर्यादाहीनता का परिचय दिया गया उसका एकमात्र उद्देश्य किसी न किसी प्रकार से चुनाव जीतना ही था। विरोधियों की दुर्बलता को उजागर करने की आड़ में चरित्रहनन की राजनीति और अनैतिकता का परिचय दिया जाय तथा झुठ, लफ्फाजी, छलछद्म और अराजकता को अपना लिया जाय तो फिर लोकतंत्र का संवर्द्धन नहीं किया जा सकता। इस बार के चुनाव में भारतीय मतदाताओं को जिस तरह भ्रमित करने का प्रयास किया गया वैसी स्थिति इसके पूर्व के चुनावों में कभी भी देखने को नहीं मिला। इसके परिणामस्वरूप भी मतदाताओं में इस बार उदासीनता देखी गयी।

इसके अतिरिक्त असमय चुनाव होने से भी मतदाताओं में उदासीनता आई है। असमय चुनाव और अल्पायु वाली सरकारों की काली छाया का प्रभाव अब देश की लोकतांत्रिक प्रणाली पर भी पड़ने लगा है जिसके परिणामस्वरूप मतदाता चुनावों से अपनी दूरी बढ़ाता जा रहा है। अब मध्य वर्ग भारतीय लोकतंत्र की चालक सीट पर नहीं है क्योंकि यहां सबकुछ अव्यवस्थित-सा हो गया है। वे एक तानाशाह की जरूरत महसूस करने लगे हैं। मध्यवर्ग की इस उदासीनता का एक कारण लोकतंत्र की थकान भी हैं वह समझ चुका है कि चुनाव और सिद्धांत में कोई रिश्ता नहीं रह गया हैं इसलिए उसे इससे विरक्ति हो गयी है। हलांकि यह सच्चाई है कि

यही वर्ग राजनीति को बहुत ऊंची आवाज में गद्दी कहता है पर यदि उसे खुद अपने सुरक्षित खोल में से निकलकर राजनीति में जाने को जाए तो वह कतई ऐसा नहीं करेगा। इसी विरोधाभास की वजह से मताधिकार के इस्तेमाल से पलायन का रास्ता निकला है। उसके मन में यह धारणा बैठ गई है कि उसके एक वोट दे देने से क्या होगा। लोकतंत्र में एक व्यक्ति का यह एक मत कितना महत्वपूर्ण होता है उसने यह समझना बन्द कर दिया है। आपने देखा नहीं केन्द्र की भाजपानीत सरकार के एक मत से गिर जाने के कारण देश को मध्यावधि चुनाव झेलना पड़ा और अरबों रुपये का नुकसान हुआ जिसे अशिक्षा, बेरोजगारी, गरीबी आदि को कम करने में इस्तेमाल किया जा सकता था। अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए बार-बार दल-बदल करके सरकारें गिरा दी जाती हैं व बार-बार चुनाव कर जनता पर अतिरिक्त करोड़ों रुपये के खर्च का भार सौंप दिया जाता है। साथ ही आचार संहिता के नाम पर सारे विकास के कार्यक्रम रोक दिए जाते हैं।

आम मतदाता की उदासीनता का एक और कारण यह भी है कि इस चुनाव में प्रत्याशियों ने प्रचार-प्रसार के दौरान शिष्टता और सौम्यता को तिलांजलि देकर शब्दकोष से चुन-चुनकर ऐसे मुहावरों का तीर एक दूसरे पर चलाये जिसका प्रयोग तो अब गांव-गंवई के लोग भी नहीं करते। गद्दार, देश को बेचनेवाले, देशद्रोही आदि आदि विशेषणों से एक दूसरे को विभूषित करते रहे। किसी भी नेता अथवा प्रत्याशी ने गरीबी, बेकारी, पेयजल, शिक्षा, जनसंख्या, सड़क, स्वास्थ्य, बिजली, मंहगाई जैसी समस्याओं की चर्चा तक नहीं की और करते भी क्यों ? आजादी के बाद से आज तक तो वे इसके निदान के बारे में लगातार झूठ बोलते ही रहे। इसकी जगह पर किसी ने अपने खानदान की जनसेवा की चर्चा की तो किसी ने कारगिल विजय की या प्रत्याशी की स्वदेशी-विदेशी का मसला उछाला गया। हर धर्मनिरपेक्ष नेता को अपनी जाति और धर्म की सुधि जरूर आई। लोगों ने जहर बांटा, बम फोड़े तथा दुनाली चलवाई और तो और इस चुनाव के प्रचार-प्रसार में संवाददाताओं ने प्रियंका और सोनिया की साड़ियों का ब्यौरा दिया और बताया कि वे उन्हें कितनी नफासत से पहने हुए थीं। जयललिता अपनी जन सभाओं में फूहड़ किस्म के गीत गाईं। अखबारों में यह भी खबर आई कि सोनिया की तुलना मोनिका लेविंस्की से की गई या फिर यह टिप्पणी की गई कि भारत के लिए सोनिया का एकमात्र योगदान सिर्फ दो बच्चे जनना था। चुनाव अभियान के दौरान इन ओछी बातों की चर्चा से आम मतदाता हतप्रभ थे और नेताओं के ओछेपन को भांप रहे थे।

दरअसल सच्चाई यह है कि सच का सामना करने का साहस राजनेताओं में नहीं रह गया है। वे कृत्रिम हंसी, मुस्कराहट, आंसू तथा मनोरंजन का सहारा लेकर मतदाताओं को ही नहीं बहकाते, अपने आपको भी भ्रम में उलझाए रखते हैं। वे यह समझने और स्वीकारने की स्थिति में ही नहीं हैं कि जिस गरीब, दलित, पिछड़े, अल्पसंख्यक के हित संरक्षण के लिए दिन-रात राजनीतिक पापड़ बेले जा रहे हैं, उनकी वास्वतिक हालत पहले से अधिक बदतर होती जा रही है। धर्म का शंख जितनी जोर से बजा, पाखंड उससे अधिक फैला तथा असली धार्मिक प्रवृतियों को धक्का लगा।

अच्छा हो कि मतदाता जागरूक बने और लोकतंत्र संकट में न पड़े इसके लिए राजनीतिक दलों एवं उनके नेताओं को अपने स्वार्थ त्यागकर देश की जनता का हित सर्वोपरि मान जन कल्याण के कार्यों में रत रहें। अपने कर्त्तव्यों के पालन में ही उनकी प्रतिष्ठा कायम रह सकेगी।

The Premier Coaching

For

I. Sc., C. B. S. E., + 2

Theory, Practical & Computer

Address

B. M. Das Road, Patna - 800004

निर्देशक

सतीश कुमार सिंह

केन्द्रीय मंत्रिमंडल के गठन में बिहार पर विशेष ध्यान

70 सदस्यीय केन्द्रीय मंत्रिमंडल में बिहार से कुल ग्यारह मंत्रियों का प्रतिनिधित्व यह स्पष्ट दर्शाता है कि बिहार विधानसभा के अगले पांच माह में होनेवाले चुनाव के मुद्दे नजर उस राज्य पर विशेष ध्यान दिया गया है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि बिहार से जद (यू.) नेताओं का अधिक-से अधिक प्रतिनिधित्व के लिए लोकशक्ति के दबंग नेता रामकृष्ण हेगड़े को भी इस बार मंत्रिमंडल में शामिल नहीं किया। वैसे भी खासकर बिहार में समता पार्टी, शरद यादव के नेतृत्व वाली जद तथा लोकशक्ति से बनी जद(यू.) पार्टी को धत्ता बताकर लोकशक्ति ने लोकसभा के कई क्षेत्रों में जद (यू.) प्रत्याशी के विरूद्ध अपने उम्मीदवार खड़े कर दिए थे जिनमें लोकशक्ति की बिहार इकाई के प्रमुख गजेन्द्र प्रसाद हिमांशु समस्तीपुर लोकसभा क्षेत्र में प्रमुख हैं जो जद (यू.) प्रत्याशी मंजय लाल के विरूद्ध खड़े थे।

विदित हो कि बिहार से जद (यू.) के शरद यादव, रामविलास पासवान, जार्ज फर्नांडीस तथा नीतीश कुमार और भाजपा के यशवंत सिन्हा को कैबिनेट स्तर तथा जद (यू.) के दिग्विजय सिंह तथा भाजपा के बाबू लाल मरांडी, मुनीलाल, शहनवाज खान, रीता वर्मा एवं हुकुमदेव नारायण यादव को केन्द्रीय मंत्रिमंडल में राज्य मंत्री का दर्जा दिया गया है, यह स्पष्ट है कि इन मंत्रियों को लिए जाने से जातियों के प्रतिनिधित्व का ख्याल रखा गया है। सवर्ण राजपूत समाज से समता पार्टी के दिग्तिजय सिंह को मंत्री बनाए जाने की बात एक अरसे से चल रही थी। इस रेल राज्यमंत्री के रूप में उनका केन्द्रीय मंत्रिमंडल में लिया जाना स्वागत योग्य है क्योंकि पूर्व रेलमंत्री नीतीश कुमार को भूतल परिवहन मंत्रालय का दायित्व दिए जाने के बाद उनके द्वारा खासकर बिहार राज्य में रेलवे की प्रगति को कुछ धक्का पहुंच सकता था पर अब उसकी भरपाई रेल राज्य मंत्री करेंगे ऐसी आशा की जाती है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बिहार से भाजपा-जद (यू.) गठबंधन ने इस बार 50 लोकसभा सीटों में से 40 सीटें देकर राजग को मजबूत किया है। बाकी 4 सीटों के लिए आगामी 28 को होने वाले चुनाव में भाजपा को तीन तथा जद(यू.) को एक खगड़िया की सीट मिलने से यह संख्या बढ़कर 44 हो सकती है।

जाहिर है कि इन ग्यारह मंत्रियों के सफल प्रयास से बिहार के सर्वांगीन विकास में सहायता मिलेगी। जहां जार्ज फर्नांडीस द्वारा राजगीर में आयुद्ध कारखाना को अमली जामा पहराया जा सकेगा। वहीं रेल राज्यमंत्री दिग्विजय सिंह के प्रयास से राजगीर को गया से रेल से जोड़ने, फतुहा-इस्लामपुर तथा आरा-सासाराम रेलवे लाइन को कार्यान्वित करने के अतिरिक्त पटना-गया रेलवे लाईन का दोहरीकरण, उतरी बिहार की कई रेल योजनाओ का कार्यान्वयन हो सकेगा। भूतल परिवहन मंत्री नीतीश कुमार बिहार के लगभग 500 किलोमीटर राष्ट्रीय उच्च पथ को पूरा करने में सम्भवत: कोई कोर-कसर नहीं उठा रखेंगे।

ऐसी उम्मीद की जाती है कि पिछले एक दशक से प्राय: शून्य हो गई बिहार के विकास की गति को आगे आने वाले दिनों में बल मिलेगा।

बिहार में राजद को करारा झटका लालू औंधे मुंह गिरे

मध्यावधि चुनाव-99 के नतीजों ने यह सिद्ध कर दिया है कि बिहार में लालू प्रसाद का तिकड़म अब खत्म के कगार पर है। राष्ट्रीय जनता दल को 12वीं लोकसभा चुनाव के मुकाबले 13 वीं लोकसभा चुनाव में 17 की जगह मात्र 7 सीटें मिलने से करारा झटका लगा है। इस बार न तो मतदान बॉक्स से जिन्न निकल सका और न ही लालू जी का जादू चल सका। और तो और मधेपुरा, जो कभी इनका अपना गढ़ माना जाता था से स्वंय शरद यादव से बुरी तरह पराजित हो गए। वैसे राजद 'सुप्रीमों कुछ भी सोंचे मगर यह स्पष्ट है कि जबतक इनका विकल्प तैयार नहीं हो रहा था इनका बोट बैंक बरकरार था। लालू जी माई यानी 'एम-वाई' (मुसलमान-यादव) समीकरण के बल पर चल रहे थे। इस बार समता पार्टी के जनता दल में मिलनले से जनता दल (यू) के रूप में लालू जी के मतदाताओं को एक विकल्प मिल गया और उनके वोट बैंक में सेंध लगने से वे मुंह के बल गिरे।

यही नहीं यदि जद(यू.) के नेता शरद यादव, नीतीशं कुमार तथा रामविलास पासवान तहेदिल से कदम ताल करें तो आश्चर्य नहीं कि अगले मार्च, 2000 में होने वाले बिहार विधान सभा के चुनाव में बिहार की सत्ता से भी लालू जी को हाथ धोना पड़े।

लोकसभा के इस चुनाव ने लालू प्रसाद यादव को ऐसा झटका दिया कि पिछले आठ अक्टूबर से परेशान लालू जी करीब दो दिनों तक अपने।, अणे मार्ग के मुख्यमंत्री निवास के आउट हाउस से बाहर निकले ही नहीं और लोगों से मिलने से कतराते रहे। हलांकि बाद में न्होंने यह भी कहा कि यह तो एक हल्का-सा झटका था, हम जल्द ही उनको भाजपा-जद (यू.) परमानेंट पटका देंगे।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बिहार में पिछले लगभग एक दशक से लालू-राबड़ी कुशासन के विरूद्ध इस बार का चुनाव एक जनमत संग्रह था। आखिर तभी बिहार के 50 गठबंधन ने 40 सीटों पर कब्जा कर लालू जी के सामाजिक न्याय के खोखलेपर को उजागर किया। यह इस बात का द्योतक है कि लालू जी का सामाजिक आधार टूटकर अब भाजपा-जद(यू.) की ओर खिसकने लगा है। इस सामाजिक आधार की छीना-झपटी में वामपंथी पार्टियां यानी माकपा-भाकपा को अबतक बिहार में एक भी सीट हाथ नहीं आई।

दरअसल सामाजिक आधार के इस समीकरण को जार्ज, नीतीश, शरद तथा रामविलास जी मिलकर इसे और मजबूत करने की दिशा में पहल करें तो कोई कारण नहीं कि बिहार की हुकुमत पर इनका कब्जा हो जाय तथा लालू जी का भ्रम भी दूर हो जाय कि गरीबों दलितों, पीड़ितों, पिछड़ों एवं अल्पसंख्यकों को अब और अधिक दिनों तक झुनझुना देकर बहलाया नहीं जा सकता। उन्हें रोजी-रोटी और तन पर कपड़ा चाहिए।

पोपुलर फार्मा

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

न्यू मार्केट, पटना-800001, दूरभाष : 226393

राष्ट्रनिर्माता लौहपुरुष सरदार पटेल की 124वीं
जयंती (राष्ट्रीय एकता पर्व)
व
विचार दृष्टि के प्रवेशांक के अवसर पर
हमारी शुभकामनाएं आपके साथ

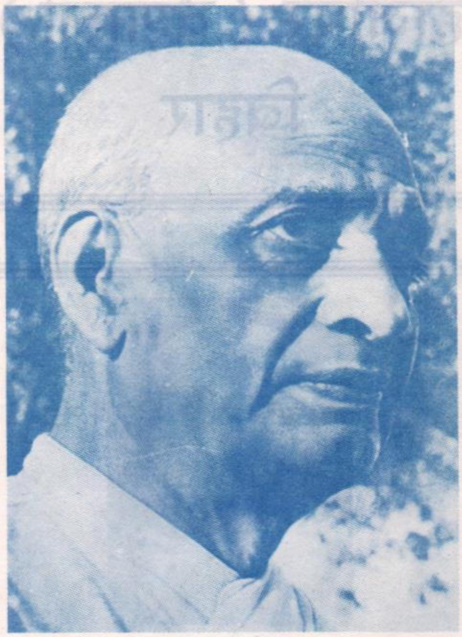

पुनामिका फुड्स लिमिटेड
हाजीपुर इंडस्ट्रियल एरिया
वैशाली (बिहार)

लौह पुरुष तुम्हें शत-शत नमन

सम्राट केमिकल इंडस्ट्रीज

बौरा, पातेपुर

हाजीपुर (वैशाली)

बिहार

लौह पुरुष तुम्हें शत-शत नमन

बमभोले डिस्ट्रीब्यूटर्स

हाजीपुर (वैशाली)

बिहार

क्या संविधान निष्प्रभावी हो गया है ?

❑ राजेन्द्र प्रसाद

भारत को एक सम्पूर्ण लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना कि स्वतंत्रता प्रतिष्ठा और अवसर कि समानता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबसे व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र कि एकता सुनिश्चित करने के लिए 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू किया गया। संविधान के प्रस्तावना में समाहित न्याय स्वतंत्रता, समता बहाता एक नया जीवन दर्शन, एक नया स्वप्न, एक नयी जीवन शैली, एक नयी संस्कृति एक नयी मूल्य वाला और एक नयी निष्ठा को अभिव्यक्ति देते हैं। डॉ० जैनिग्सेन इसे विश्व का सबसे बड़ा संविधान कहा है। इसका कलेवर निर्मित करने में अमेरिका, आयरलैंड, ब्रिटेन, जापान की संवैधानिक व्यवस्था कें संबन्धित महत्वपूर्ण उपबन्धों को ग्रहण किया। समाजवाद एक प्रांगण भर रह गया है। आज सत्ता पक्ष के तानाशाही रवैये के कारण विधानमंडलों में न्यायपालिका सहिष्णुता की कमी बढ़ती जा रही है। एक ओर न्यायपालिका तथा दूसरी ओर कार्यपालिका एवं विधायिका के बीच पारस्पारिक अविश्वास शंका एवं संदेह की दीवार गहरी हो गई है। जिससे हमारे संर्वधानिक व्यवस्था में गंभीर तनावों कि स्थिति पैदा हो गयी है। अनुच्छेद 368 संसद को संविधान संशोधन का अधिकार प्रदान करता है। परन्तु इसकी इस प्रकार व्याख्या नहीं कि जा सकती मानो उसमें संविधान की मृत्यु कि इच्छा प्रकट की गई हो अथवा उसकी आत्महत्या का उपबन्ध है।

संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र प्रसाद भारतीय सोच के स्थान पर पाश्चात्य शिक्षा से दीक्षीत पं० जवाहरलाल नेहरू का आग्रह तथा विवेचना ही संविधान निर्माण कि प्रक्रिया पर अधिक हावी रहा है। जिसके फलस्वरूप भारतीय मौलिकता के अस्तित्व तक के तत्वों को स्वीकार किया गया।

भारतीय संविधान में धारा-370 की मान्यता देकर द्विराष्ट्र के सिद्धान्त को मुक्ति दे रहा है। यह धारा कीड़ों की तरह कतरव्यौत करती हुई स्वर्ग के दृश्य को अन्दर से खोखला कर रहा है। इस धारा के घातक प्रभाव के कारण संविधान के अनुच्छेद 134, 135, 136, 137 तथा राज्यसभा विधेयक काश्मीर में निष्प्रभावी हो गये हैं। राज्य में आर्थिक संकट होने पर राष्ट्रपति धारा 360 के अर्न्तगत आपातकाल लागू नहीं कर सकते हैं, तथा नहीं धारा 356 के अर्न्तगत कोई निर्देश दे सकते हैं। भारतीय संविधान समस्त नागरिकों के लिए दस मौलिक कर्तव्यों को निर्देशित करता है जिनके आधार पर राष्ट्रगान, राष्ट्रमान एवं राष्ट्रध्वज जैसे समान बिन्दुओं का समादर करना अनिवार्य माना गया है। परन्तु कश्मीर में राष्ट्र के गौरव तिरंगों का जलाना अपराध नहीं है।

भारतीय संविधान का संघात्मक ढांचा टुट-फुट गया है। आज देश में जिस प्रकार केन्द्र राज्य संबधों की समस्याएं उठ रही हैं इसका संतोषजनक ढंग से समाधान निकालने कि कोई व्यवस्था नहीं है। हमारे संविधान में कुछ ऐसे बिन्दु रखे गये है जिनके कारण राज्यों एवं केन्द्र के पारस्परिक संबन्धों को परिभाषित करना ही कठिन हो गया है। आज राष्ट्रीय पहचान के टुटने की कालीघटा देश के सिर पर मंडरा रही है। हम अखंड राष्ट्र के रूप में पुनर्जन्म की पीड़ा सा छटपटा रहा है। प्रौढ़ता की कसौटी पर कसा जाय तो भारतीय संविधान इस अबोध शिशु के समान है जिसे कपड़ा पहनने तक नहीं आता। भारतीय संविधान न तो जनजीवन के अनुरूप स्वस्थ परम्परा बन पाया और न ही संसदीय शिष्टता का गठन कर पाया है। गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया ऐक्ट 1935 पर आधारित संवैधानिक व्यवस्था अविश्वास के घेरे में लुढ़कती जा रही है। कार्यपालिका न्यायपालिका विधायिका जो संविधान के पहिए हैं उनके पारस्परिक संबंध अत्यन्त ही दूषित बने हुए हैं। जिससे हमारी विविधता में एकता की भावना निर्दयता से खंडित होती जा रही है। संविधान द्वारा निर्मित प्रजातांत्रिक संस्थाओं की गरिमा का निरन्तर ह्रास हुआ है।

संपर्क: क्षेत्रीय शिक्षा पदाधिकारी, रांची सदर

Physical Chemistry Centre

By

Dr. Manoj Ranjan
Ph.D., F.I.C.S.

For : C.B.S.E. (Medical)
&
J. E. E.

Place : In The Campus of
The Premier Coaching
(I. Sc.)
B. M. Das Road, Patna - 800004

महिला-लेखिकायें और अस्मिता की खोज

❑ निर्मला जोशी

कुंठा, घुटन, तनाव और संत्रास की स्थितियां जो आज साहित्य का केंद्र बिंदु है, हमारे समाज की उपज नहीं है वरन् वह विदेशों से आयातित है। हमनें उन्हें अपने ऊपर आरोपित कर लिया है। भारतीय परिवार आज भी मानसिक या भावनात्मक स्तर पर संयुक्त परिवार ही है। अतः हम उस अकेलेपन से भयभीत नहीं हैं-जो विदेशों में व्याप्त है।

प्रसिद्ध कथाकार और उपन्यासकार **मन्नू भंडारी** ने उपरोक्त विचार धर्मयुग में अप्रैल 1978 में लिखे थे। इन विचारों के साथ ही मैं महिला-लेखिकाओं की दृष्टि से अस्मिता की खोज पर अपने विचार प्रस्तुत कर रही हूं। यथार्थ के धरातल पर महिला-लेखिकायें और अस्मिता का प्रश्न जब उभरता है तो यह ध्वनित होता है कि हम इनके व्यक्तित्व को इसमें समेट लें या कृतित्व को। किंतु, साहित्य में अस्मिता का आशय जितना संस्कृत -निष्ठ है, उतना ही सचेतन और बोध-गम्य भी। उसके गूढ़ अर्थ को नापना या उसकी पड़ताल करना उतना आसान नहीं है जितना कि हम समझ लेते हैं।

मेरे इस कथन से शायद असहमत होना असंभव या कठिन होगा कि महिला-लेखिकाओं का व्यक्तित्व और कृतित्व अस्मिता के मानदंडों का निर्धारण करता आया है। इसका मूल कारण यह है कि सामाजिक परिवेश से जुड़ी उनकी शालीनता, आजतक समाज में न केवल सराही जाती है, वरन उल्लेखी भी जाती है। वीरगाथा-काल हो या भक्ति-काल उस समय की महिला रचनाकारों में इस गुण की विद्यमानता देखी और सुनी जाती रही है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि प्राचीन युग में मीरा जैसी महान कवयित्री ने जो काव्य रचा वह भक्ति की दृष्टि से एक प्रकार उन्मुक्त काव्य था। किंतु, सामाजिक दृष्टि से वह उन्मुक्त नहीं थी। कारण कि राजशाही के अतिरिक्त सामाजिक मर्यादायें अपनी जगह थीं। मीरा का सृजन व्यक्तिवादी और स्वांत: सुखाय था। जबकि आज की महिला लेखिकाओं को सामाजिक स्तर पर काफी उन्मुक्तता मिली हुई है परंतु, जब तक वह स्वयं दुख उठाकर या समाज की पीड़ा को वहन नहीं करेगी अपनी बात कहना उसके लिये कठिन है। अपनी बात समाज तक पहुंचाने के लिये वह स्वतंत्र है- यही क्या कम है। वह बोलने के लिये जितनी मुक्त नहीं लगती उतनी ही मुक्त वह लेखन के लिये है। यह छूट देकर समाज ने उस पर कोई उपकार नहीं किया है। अगर महिला लेखिकायें यह नहीं करेंगी तो इस उत्तरदायित्व को कौन वहन करेगा। इसलिये मेरा यह कथन किसी अवधारणा के अंतर्गत नहीं आता किंतु, महिला साहित्यकारों का लेखन सामाजिक धरातल से तो पूर्णरूपेण जुड़ा हुआ है ही। समाज की बहुरंगी और बहुकोशीय विसंगतियां, पारिवारिक मूल्यों का विघटन, संत्रास, सामाजिक मूल्यों का निरंतर गिरता ग्राफ, भीड़ में रहकर भी एकाकीपन का अहसास उसकी लेखनी को अनवरत ऊर्जा प्रदान करते हैं। उन पर लेखनी चलाना न केवल उसकी विवशता है वरन नियति भी है। मेरे ख्याल से समाज का प्रदेय और महिला लेखिकाओं द्वारा यह स्वीकार्य, युगीन महिला लेखिकाओं के लिये एक उपलब्धि है और विरासत भी।

स्वातंत्र्योत्तर-काल में पाश्चात्य संस्कृति का भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्यों पर हमला पहले अघोषित था और अब अनवरत है। इस हमले ने न केवल एक गहरे सोच में आम बुद्धिजीवी को वरन समाज के हर तबके को डुबो रखा है। उसका विस्तार नैरंतर्य की ओर है और उस पर रोक के प्रयास या संभावनायें प्राय: धूमिल हैं। ऐसी स्थिति में सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का विघटन रोकने के लिये महिला साहित्यकारों की सृजनधर्मिता से ही संभव है। इसके लिये उन्हें एक लंबा मुक्ति-संग्राम लड़ना पड़ेगा। क्योंकि इस संग्राम का सीधा संबंध महिला लेखिकाओं की सृजनधर्मी-अस्मिता से आगद्ध है-इसलिये यह एक महत्वपूर्ण उत्तरापेक्षी दिशा की ओर इंगित करता है। सामाजिक धरातल से जुड़ी महिला-लेखिकाओं की अस्मिता स्वतंत्रता के बाद एक नई ऊर्जा लेकर सामने आई। इस दौर में महिला लेखिकाओं ने सृजन को ही सर्वोपरि रखा और समाज विशेषत: नारी उत्पीड़न को वाणी दी।

मेरे विचार से चूंकि, अस्मिता का संबंध घटनाओं से होता है-इसलिये घटनायें सुखानुभूतियों की तुलना में दुखानुभूति अधिक करातीं है क्योंकि हमारा सामाजिक परिवेश ही ऐसा है और रचना के स्तर पर ये उद्घाटित होतीं हैं। मैं अपने कथन की पुष्टि के लिये **प्रसिद्ध कहानीकार श्री कमलेश्वर** को उद्‌त करना चाहती हूं-

"घटनायें नई नहीं होतीं, मानवीय संबंध भी नये नहीं होते, मनोवेग और आंतरिक उद्वेग भी अछूते नहीं होते पर इन सबकी एक नई दृष्टि एक अन्विति ही नया प्रभाव छोड़ती है।"

मेरे ख्याल से इन विचारों से सहमति व्यक्त करने पर महिला लेखिकाओं की अस्मिता और उसके लिये खोज की चिंता कम हो जाती है। सामाजिक मूल्यों के धरण को रोकने में भी महिला लेखिकाओं का योगदान अस्वीकार नहीं किया जा सकता। बदलते सामाजिक मूल्यों के कारण महिला लेखिकाओं का सृजन जितना प्रभावित हुआ है-उतना किसी और का नहीं। यह एक अलग प्रश्न है कि समाज में क्रांति लाने या सुधार में यह लेखन अपनी सार्थकता उतनी सिद्ध नहीं कर सका जितनी कि आशा की जाती रही है। लेकिन व्यंग जैसी विधा जब यह काम नहीं कर सकी तो महिलाओं का सृजन कैसे कर सकता था। क्योंकि महिलाओं का लेखन कर्म आज भी गंभीर और चिंतनपरक है-उथला नहीं। और आज के परिप्रेक्ष्य में महिला लेखिकाओं के सृजन की अस्मिता अपनी ईमानदार पैरवी से मुंह नहीं मोड़ सकती।

सृजन के क्षेत्र में महिला लेखिकाओं की निरंतर सजगता और चैतन्य को देखते हुए उनकी अस्मिता का प्रश्न उठाना शायद बेमानी लगता है। प्रकाशन, श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में उनकी निरंतर उपस्थिति को देखकर कहा जा सकता है कि उनका संवेदनशील रचनाकार जाग रहा है। इसी तारतम्य में स्व० सरोजिनी नायडू, आशापूर्णादेवी, सुभद्राकुमारी चौहान, ऊषादेवी मित्रा, महादेवी वर्मा, सुमित्राकुमारी सिन्हा का रचनाकर्म अगर अस्मिता के धरातल पर आज भी अपनी जीवंतता की साक्ष्य देता है तो युगीन संदर्भो में अमृता प्रीतम, शिवानी, शशिप्रभा शास्त्री, मन्नू भंडारी, दीप्ति खंडेलवाल, कुसुम अंसल, मालती जोशी, मेहरून्निसा परवेज, ममता कालिया, दिनेशर्नंदिनी डालमिया, सुधा अरोडा, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोगती, शाँति मेहरोत्रा, अनीता औलक, ऊषा प्रियंवदा, सूर्यबाला, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, इंदुबाली, मृणाल पांडे, मालती श्रीवास्तव, मालती परूलकर, नासिरा शर्मा, राजी से० अमृता शुक्ला और ज्योत्सना मिलन का सृजनधर्मी संसार साहित्यिक परिदृश्य पर अनेक रंग-रेखाओं की तरह अपनी गहराइयों की पहचान कराता है। मैं नहीं समझती कि महिला लेखन को अब मुल्यांकन या परख-पड़ताल की कोई जरूरत रही है। उनकी अस्मिता उस दिन से ही अपना परिचय देने लगी थी जिस दिन से उनकी पहली रचना पाठकों की निगाह में चढ़ी होगी।

साहित्य की कसौटी पर खरी उतरने वाली कोई भी रचना द्रौपदी नहीं होती और न उसका चीर हरण ही हो सकता है। इसलिये महिला लेखिकाओं का सृजन हर क्षण कालजयी है और उस काल-खंड में जो रचा जायेगा वह अपनी अस्मिता को स्वयं ही बयान कर देगा। अगर वर्तमान संदर्भों में ही महिला लेखिकाओं की सृजनधर्मिता की पड़ताल अस्मिता के धरातल पर की गई तो फिर बंगला देश की तसलीमा नसरीन का इतिहास में दर्ज कराया। संताप भोगना रचनाकार की नियति है-चाहे वह पुरुष हो या महिला।

**संपर्क: एल-318, ई-7, अरेरा कालोनी
भोपाल-462016 (म०प्र०)**

गांधी के सिद्धान्त आज भी बरकरार

बापू पर 64 देशों में डाक टिकट, करेंसी व सिक्के जारी

दुनिया भर में पिछले कई दशकों से बढ़ते परमाणु हथियारों के बावजूद महात्मा गांधी के सत्य, न्याय, शांति और अहिंसा के सिद्धान्तों के लिए चाहत और इनकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है। आखिर तभी तो एक सुप्रसिद्ध लेखक ने गांधी जी के आदर्श से अभिभूत होकर **महात्मा गांधी-दी ग्रेटेस्ट सेंट आफ्टर जीसस क्राइस्ट** नामक पुस्तक, हॉलीवुड के सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता **रिचर्ड एटनबरो** ने **"गांधी"** फिल्म तथा हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध निर्देशक **श्याम बेनेगल** ने **दी मेकिंग ऑफ महात्मा** फिल्म बनाई। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला को उनकी जनता ने **गांधी** की संज्ञा दी। हाल ही में प्रसिद्ध अमरीकी पत्रिका **टाइम** ने उन्हें विश्व की अन्य हस्तियों के साथ सदी के महानतम व्यक्तियों की सूची में रखा।

ये सब बातें इसका परिचायक है कि गांधी के सिद्धान्तों एवं आदर्शों की अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता और विश्वसनीयता पर आज भी कोई आंच नहीं आई है। दुनिया भर के करीब 64 देशों द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सम्मान और उनकी याद में डाक टिकटें, करेंसी तथा सिक्के जारी किए गए जिसकी एक प्रदर्शनी **सच की मुहर** सदी के आखिरी स्वतन्त्रता दिवस पर राजधानी दिल्ली में लगाई गई। विकसित देशों ने भी उनके ऊंचे कद को सादर नमन किया। दरअसल **बापू** का व्यक्तित्व इतना विशाल था कि दुनिया का कोई कोना उनके प्रभाव से अछूता नहीं रह पाया। गांधी के अलावा शायद ही ऐसा युगपुरुष होगा जिस पर दुनिया के इतने देशों ने डाक टिकट, करेंसी तथा सिक्के निकाले हों। यह इस बात का द्योतक है कि **बापू** की लोकप्रियता किसी क्षेत्र या देश की सीमाओं से परे थी। जिन प्रमुख देशों ने गांधी जी पर डाक टिकट करेंसी नोट और सिक्के जारी किए हैं उनमें कुछ हैं रूस, सीरिया, भूटान, श्रीलंका, ईरान, उत्तरी यमन, दक्षिणी यमन, कांगो, माले, कैमरून, सेनेगल, माल्टा, मैक्सिको, त्रिनिडाड, मोरक्को, सांडा, ग्रेनाडा, सूरीनाम, चीली, अर्जेन्टीना, हंगरी, यूनान, आयरलैंड, सानमारियो, जर्मनी, साइप्रस, आइलैंड, नाइजीरिया, सेनेगल बर्कीना फासो आदि।

वर्ष 1992 में गांधी जी के **भारत छोड़ो आंदोलन** की स्वर्ण जयंती पर भारत सरकार ने इनके द्वारा हस्ताक्षरित प्रस्ताव **करो या मरो** पर डाक टिकट निकाला। इसी आन्दोलन पर स्कॉटलैंड ने भी एक डाक टिकट निकाला। 1998 में भारत में उनके **नमक सत्याग्रह** को आधार बनाकर एक डाक टिकट जारी किया गया।

चाहे जो हो इससे इतना तो स्पष्ट है कि परमाणु बमों और हिंसा की भीषण आंधियों के बीच भी साबरमती के इस संत तथा सत्य और अहिंसा के इस पुजारी की मशाल पूरी दुनियां में आज भी जगमगा रही है भले ही हमारे देश के नेताओं के कान पर जूं नहीं रेंगे।

-शशिभूषण, दिल्ली से

बाला देश प्रेम की भावना भरते हैं

विज्ञापन के जरिए

बेहद लोकप्रिय तथा देश के सारे दूरदर्शन चैनलों पर बार-बार बजने वाले विज्ञापन **वंदेमातरम्** को बनानेवाले व्यक्ति **जी भारत** का नाम ही **बाला** है। वह अपने देश के लोगों के मन में अपने विज्ञापनों के जरिए देशप्रेम की ऐसी भावना भर देते हैं कि उन्हें अपने भारतीय होने पर गर्व होने लगता है।

आजादी की स्वर्ण जयंती के अवसर पर भारत माता को प्रणाम करने के लिए देश और विदेश के अनेक कलाकारों ने अपना योगदान दिया था। अब तो बाला ने इतनी तरक्की कर ली है कि इनके विज्ञापन **एकम सत्यम सत्यमेव जयते** को सुपरस्टार माइक जैक्सन अपना स्वर दे रहे हैं। बाला का कहना है कि अपने स्वतन्त्रता सेनानी पिता के एक सवाल ने उनके सोचने और काम करने का तरीका ही बदल दिया।

बाला के पिता श्री गणपति ने उससे सवाल किया था कि क्या वह कोई ऐसा विज्ञापन बना सकता है जिससे भारतीयों के मन में राष्ट्रभावना का संचार हो सके और हर भारतीय चाहे वह दुनिया के किसी कोने में रह रहा हो उसे इस बात पर गर्व का अनुभव हो कि वह एक भारतीय है। वह खुद को अपनी मातृभूमि से जोड़ कर देखे और ऐसा करते हुए उसे अपने आप पर गर्व हो।

बाला द्वारा बनाए गए विज्ञापन **देश का सलाम** को स्वतन्त्रता दिवस की शाम को सभी चैनलों सहित आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से प्रसारित किया गया। इसमें पं०भीमसेन जोशी, पं०जसराज, लता मंगेशकर, आशा भोंसले, डा०भूपेन हजारिका, जगजीत सिंह, एस०पी०बालासुब्रह्मण्यम जैसे अपने फन के माहिर कलाकारों को राष्ट्रगान गाते दिखाया गया। बाला जी को विचार दृष्टि की ओर से बधाई।

-सुधांशु, दिल्ली से

नयी सदी में भारत संसार का सबसे अनपढ़ देश

यूनीसेफ के एक प्रतिवेदन के अनुसार नयी सदी में भारत संसार का सबसे अनपढ़ देश होगा। वैसे भारत सरकार स्वयं कहती है कि यहां 33 करोड़ लोग निरक्षर हैं। 1951 में साक्षरता दर जहां 15 प्रतिशत थी वह 1998 में बढ़कर 64 प्रतिशत हो गई। फिर भी यह बिडम्बना है कि सन् 2000 में विश्व का प्रत्येक तीसरा निरक्षर भारतीय होगा। इसका और कारण चाहे जो हो पर अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के अभाव की वजह से इस देश में 5 से 14 साल के बच्चे स्कूल जाने के बजाय बन्धुआ मजदूरी करने को मजबूर हैं। बच्चियों की स्थिति तो और बदतर है। इसका मुख्य कारण है गरीबी जिसके कारण गरीब परिवार के लोग बच्चों को पढ़ाने के बजाय अपनी जिविका के लिए उनसे काम करवाने को विवश हैं। इसका दूसरा कारण है राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव। राजनेता अपने वोट की खातिर उन्हें अनपढ़ रखना चाहते हैं क्योंकि पढ़े-लिखे लोगों को तो वे जैसा चाहेंगे, नहीं कर पायेंगे।

इसके बावजूद सरकार का दावा कितना हास्यास्पद लगता है कि सन् 2005 तक सबको साक्षर बना दिया जाएगा। उल्लेख्य है कि सबसे ज्यादा निरक्षर अनुसूचित जाति एवं जनजाति में है। इन कारणों के अतिरिक्त देश में बढ़ती आबादी भी निरक्षरता के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। इसलिए जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण आवश्यक है।

परमवीर चक्र की कहानी : सवित्री ने बनाया परमवीर चक्र

वीरता के लिए ही जानेवाली देश की सबसे बड़ी उपाधि **परमवीर चक्र** का डिजायन एक विदेशी महिला इभा मैडे द्वारा तैयार किया गया था। इभा की मां रूसी तथा पिता हंगरी के थे। बचपन से ही इभा को भारत से दिलचस्पी थी। इंगलैंड के स्नातक भारतीय सेना के एक अधिकारी कैप्टन विक्रम खनोलकर के साथ 15 वर्ष की उम्र में इभा की शादी हुई। शादी के तुरत बाद इभा ने अपना नाम बदलकर सावित्री कर लिया तथा पटना विश्वविद्यालय में हिन्दी तथा संस्कृत का अध्ययन किया। बाद में उसने वेदान्त पढ़ा तथा रामकृष्ण परमहंस का हिमायती हो गई। भारत के गहन अध्ययन ने उस समय के मेजर जेनरल हीरालाल अटल ने सावित्री को देश में वीरता के लिए दी जानेवाली सबसे बड़ी उपाधि का डिजायन तैयार करने को कहा। डिजायन तैयार करने में सावित्री ने दधिची की एक पुरानी कथा से प्रेरणा प्राप्त की। कहा जाता है कि एक बज्र के निर्माण हेतु दानी-दधिची ने अपने जांघ की हड्डी को दान में दे दिया था। सावित्री इसीलिए 'मेडल' के मध्य में बज्र दिया है तथा उसके दोनों तरफ मराठा के सुप्रसिद्ध नेता शिवाजी की तलवार **भवानी** को रखा।

यह संयोग ही कहा जाएगा कि सावित्री की एकलौती बेटी के बहनोई (daughter brother-in-law) मेजर सोमनाथ शर्मा को मरणोपरान्त पहली बार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। सावित्री का देहावसान 1990 में हुआ।

2002 तक सभी गांवों के लिए दूरभाष

-संचार मंत्री रामविलास पासवान

भारत के नए तेज तर्रार दूरसंचार मंत्री **रामविलास पासवान** ने अपने मंत्रालय का कार्यभार संभालने के बाद देशवासियों से वादा किया है कि सन् 2002 तक भारत के सभी गांवों के लिए फोन की सुविधा मुहैया करा दिया जाएगा। जिसके लिए एक माह के भीतर कार्य योजना तैयार कर ली जाएगी।

उल्लेख्य है कि इसके पूर्व भी इस तरह की बनी योजना को 1997 तक पूरा कर लिया जाना था किन्तु लगातार छह बर्षों के बाद भी वह पूरी न हो सकी। गांवों में इंटरनेट मुहैया कराने खासकर आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्रों के दूरसंचार केन्द्रों को आधुनिक करने की योजना धरी की धरी रह गयी। किन्तु इस नए मंत्री से ऐसी उम्मीद की जाती है कि इन सभी अधूरी योजनाओं को कार्यरूप में परिणय करने का प्रयास करेंगे ताकि नयी सरकार की छवि कायम रह सके और लोगों की अपेक्षाएं पूरी हो सकें।

विचार संवाददाता, नई दिल्ली से,

नगरों में नयी जान लाएंगे- जगमोहन

कुशल प्रशासक तथा ईमानदार छवि के भारत के दूसरी बार नियुक्त नगर विकास मंत्री **जगमोहन** ने अपनी विभिन्न योजनाओं के तहत नगरों में नयी जान फुकनें तथा उन्हें रहने लायक बनाने का प्रस्ताव किया है।

अपने मंत्रालय में योगदान देने तथा कार्यभार संभालने के तुरंत बाद संवाददाताओं के बीच उन्होंने सूचित किया कि वे सर्वप्रथम अगले एक माह तक समूचे भारत का दौरा कर विभिन्न नगरों की असलियत की समीक्षा करेंगे। इस दरम्यान विभिन्न शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों और विश्वविद्यालयों के लोगों से विचारों का आदान-प्रदान कर एक बार नई दिल्ली में 20 नबम्बर तक राज्य सरकार के आवास एवं स्वायत्य शासन मंत्रियों का सम्मेलन आयोजित करेंगे ताकि एक ठोस निर्णय लेकर नगर के निवासियों में एक अच्छी संस्कृति को विकास किया जा सके।

-डा. मेदिनी राय, नई दिल्ली से

लौह पुरुष की १२४वें जयंती की शुभकामनाओं के साथ

न्यू चोपड़ा दवाखाना

न्यू मार्केट, पटना-800001

वृहत परिवहन नीति का कार्यान्वयन तथा भूतल परिवहन सेक्टर को निजीकरण करने की दिशा में पहल पर बल

- भूतल परिवहन मंत्री नीतीश कुमार

जे.पी. आन्दोलन के अग्रणी नेता तथा भारत सरकार के भूतल परिवहन मंत्री **नीतीश कुमार** ने अपने मंत्रालय का दायित्व ग्रहण करने के पश्चात् कहा है कि वृहत परिवहन सेक्टर को निजीकरण करने की दिशा में पहल करने की आवश्कता है। इसके अतिरिक्त बन्दरगाहों के कारपोरेटाइजेशन एवं शिपिंग नीति को शीघ्रातिशीघ्र पारित करने पर श्री कुमार ने बल दिया।

श्री कुमार पहले 1989 में लोकसभा में जाने के बाद लगातार 1991, 1996, 1998 तथा 1999 में **बाढ़ संसदीय निर्वाचन क्षेत्र** से विजयी हुए हैं।

समता पार्टी के संस्थापक सदस्य श्री कुमार ने बिहार में श्री लालू प्रसाद की सत्ता की चुनौतियों को स्वीकार कर जंगलराज को समाप्त करने पर अडिग हैं। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के मंत्रिमंडल में 1989-1990 में कृषि राज्य मंत्री के बाद 1998 में अटल जी की सरकार में वे रेलमंत्री के पद पर रहकर उन्होंने अपनी क्षमता का परिचय दिया तथा कुछ माह तक वे भूतल परिवहन के भी प्रभार में रहे।

यह कहने की आवश्कता नहीं कि आर्थिक क्षेत्र में भूतल परिवहन एक अहम भूमिका अदा करता है, इसलिए इसे और बढ़ाने की जरूरत है तथा प्राइवेट सेक्टर से अधिक पूंजी निवेश की आवश्कता है। विश्वास है श्री कुमार के नेतृत्व में राष्ट्रीय मार्गों एवं शिपिंग की प्रगति को एक नई दिशा मिलेगी। हमारी शुभकामना उनके साथ है।

केसरी के विरूद्ध आरोप निर्धारित

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को बदनाम करने के मामले में नई दिल्ली के मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट आर० के० गाबा द्वारा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष **सीताराम केसरी** के खिलाफ आरोप निर्धारित किए गए। ऐसा कहा जाता है कि श्री केसरी ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा था-**कोयम्बटूर बम के विस्फोटों के पीछे आर० एस० एस का हाथ है** जिसमें 60 लोग मारे गए थे। मामले की आगे की सुनवाई अगले वर्ष 18 जनवरी को होगी।

नयी सरकार का नया आर्थिक एजेंडा

- आर्थिक सुधारों में तेजी लाना।
- ढांचागत विकास पर विशेष ध्यान।
- वित्तीय क्षेत्र के लिए नए कानून बनाना।
- राजकोषीय प्रबंधन को दुरुस्त करना
- कर प्रणाली में व्यापक सुधार करना।
- सार्वजनिक उपक्रमों के पुर्नगठन व विनिवेश के लिए नई प्रणाली तैयार करना।
- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सहित कुल निवेश को बढ़ावा देना।
- विकास की प्राथमिकताओं का नए सिरे से निर्धारण।

शहीद जगदेव का 25 वां शहादत दिवस
सामाजिक परिवर्तन का एक अनोखा योद्धा

विगत 5 सितम्बर को पटना के रवीन्द्रभवन में **जगदेव विचार मंच** की ओर से आयोजित शहीद जगदेव प्रसाद के 25 वें शहादत दिवस समारोह के अवसर पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बिहार विधानसभाध्यक्ष तथा उद्घाटनकर्ता देवनारायण यादव ने शहीद जगदेव को सामाजिक परिवर्तन का एक अनोखा योद्धा बताया। समारोह के मुख्य अतिथि तथा पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० एस० एन० पी० सिन्हा सहित जयप्रकाश वि० वि० के कुलपति डा० सत्यनारायण सिंह, विधान पार्षद, भोला प्र० सिंह, जगदेव कापरी, प्रो० सोहैल अहमद, रामदेव महतो तथा के० के० झा आदि ने शहीद जगदेव बाबू के संघर्षमय जीवन व बलिदान की चर्चा की। प्रारम्भ में मंच के सचिव अशोक कुमार सिन्हा ने अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा समारोह की मंच के अध्यक्ष महेश्वरी प्र० वर्मा ने की। मंच के उपाध्यक्ष सूर्यकान्त प्रसाद द्वारा प्रस्तुत छह प्रस्तावों में शहीद जगदेव प्रसाद की यादगार को ताजा रखने तथा उनके बलिदान से प्रेरणा लेने के लिए उनके निवास स्थान 2, स्ट्रैन्ड रोड में शोध संस्थान की स्थापना तथा मगध वि० विद्यालय का नाम उनके नाम पर करने की पूरजोर मांग की गयी। **आचार्य बनारसी सिंह विजयी** ने आभार व्यक्त किया।

राजद कार्यालय के एक अन्य कार्यक्रम में डा० रामवचनराय ने कहा कि जगदेव बाबू ने बिहार की धरती पर डा० लोहिया के सामाजिक आंदोलन को उतारा। इस अवसर पर डा० निहोरा प्रसाद यादव, प्रो० उषा सिन्हा, ब्रह्मदेव पटेल हेम्ब्रम, निराला यादव, बवन रावत, भारतेन्दु क्रान्तिकारी तथा मो० आजम आदि ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

-बनारसी सिंह 'विजयी' पटना से

शहीदों को याद रखनेवाला देश गुलाम नहीं रह सकता

कारगिल युद्ध के शहीद ले० विजयंत थायर की मां श्रीमती तृप्ति थापर ने कहा कि शहीदों की शहादत को याद रखने एवं उनका सम्मान करनेवाला देश कभी गुलाम नहीं हो सकता है। भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता ने देश में वीरों को जन्म दिया है, जो हंसते-हंसते भारत मां की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने को तैयार रहते हैं। हमें बच्चों में अनुशासन, चरित्र व संस्कृति की भावना पैदा करनी चाहिए, ताकि वह बड़ा होकर देश का एक सच्चा नागरिक बन सके।

अमेरिकन इंस्ट्रीच्यूट ऑफ इंगलिश लैग्यूवेज के तत्त्वावधान में शहीद परिवारों के सहायतार्थ आयोजिका एक **चैरिटी शो** में श्रीमती थापर ने ये बातें कहीं।

पाक में आंपातकाल, सैनिक शासन लागू
संविधान निलम्बित, नेताओं के खाते सील

पाकिस्तान में आपातकाल जारी कर सैनिक शासन लागू कर दिया गया है। पाक के थलसेनाध्यक्ष जनरल परवेज मुशर्रफ ने संविधान, राष्ट्रीय असेम्बली, प्रान्तीय असेम्बली तथा प्रधानमंत्री, मंत्रिमंडल, राज्यपाल एवं मुख्यमंत्रियों को बर्खास्त करके स्वयं को शासनाध्यक्ष घोषित कर दिया है। राष्ट्रपति अपने पद पर बने रहेंगे किन्तु मुख्य कार्यपालक शासनाध्यक्ष जनरल परवेज के निर्देशानुसार उन्हें कदम उठाने होंगे।

इस बीच सभी महत्वपूर्ण राजनेताओं एवं और उनके निकट के संबन्धियों के देश में फैले विभिन्न वाणिज्यिक बैंकों के अस्थाई तौर पर खाते सील कर दिए गए हैं। एक ओर जहां अपदस्थ प्रधानमंत्री को नजरबंद कर रखा गया है वहीं नवाजशरीफ पर जनरल परवेज की हत्या करने की साजिश करने के मामले में मुकदमा चलाए जाने की संभावना है। बेनजीर भुट्टो को भी पाक आने की इजाजत नहीं दी गई है।

आखिर कारगिल युद्ध का खामियाजा पाक के वर्खास्त प्रधानमंत्री नवाजशरीफ को भुगतना पड़ा।

गुंटर ब्लोबल को चिकित्सा विज्ञान का नोबेल पुरस्कार

जर्मनी के गुंटर ब्लोबल को वर्ष 1999 का चिकित्सा विज्ञान का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया है।

श्री ब्लोबल को प्रोटीन के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण उस अनुसंधान के लिए यह पुरस्कार देने की घोषणा की गई है जिसने बीमारियों के बारे में नए तथ्यों पर प्रकाश डाला है। अनुसंधान में कम उम्र में ही गुर्दा में पथरी की शिकायत के कारणों के बारे में विस्तार से नई जानकारी दी गई है। श्री ब्लोबल को यह पुरस्कार देने की आज की गई घोषणा में कहा गया है कि उनकी इस खाज से मनुष्यों में होने वाली कई बीमारियों का निदान पाना आसान हो जाएगा। कोशिका एवं आणविक जीव विज्ञानी गुंटर ब्लोबल (63) ने अपनी खोज में कहा है कि प्रोटीन में कुछ ऐसे सिग्नल होते हैं, जिससे प्रोटीन किसी कोशिका में पहुंचता है।

कौशलेन्द्र तिवारी, नई दिल्ली से

Alpha-Keto Acid Dehydorgenase Complexes (Molecular and Cell Biology Updates)
- *M. S. Patel (Editor), et al / Hardcover / Published 1996*
- *Our Price: $155.00 (Special Order)*

Indian Village from Entity to Non-Entry
- *M. F. Patel / Hardcover / Published 1990*
- *Our Price: $31.00 (Special Order)*

Planning Strategy for Tribal Development
- *Mahendra lal Patel / Hardcover / Published 1984*
- *Our Price: $27.50 (Special Order*

Tribal Research in India : Approach, Constraints, Structure, and Techniques (Tribal Studies in India Series T, 163)
- *M. L. Patel / Hardcover / Published 1994*
- *Our Price : $30.00 (Special Order)*

Development dualism of primitive tribes : Constraints, restraints, and faliacies
- *Mahendra Lal Patel*

Eliminating Social Distance Between North and South
- *M. Patel*

Tribal Development without Tears

Director, Research Cell
V-3. (MIG) Nehru Nagar
BHOPAL - 462003

संतुलित खाद दीजिए भरपूर फसल लीजिए

- प्रत्येक फसल के बाद भूमि में पोषक तत्वों की जो कमी आती हैं,उनकी क्षतिपूर्ति करना आवश्यक है अन्यथा खेतों की उर्वराशक्ति और उपज में कमी आयेगी।

- पोषक तत्वों को संतुलित मात्रा में ही प्रयोग करें। इसके लिए फसल लेने से पहले मिट्टी की जांच करा लें।

- पौधों की वृद्धि के लिए नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश तीन तत्व मुख्य रूप से आवश्यक होते है।

- इफको एन० पी० के (12:32:16) इन तीनों प्रमुख तत्वों को संतुलित मात्रा में प्रदान करता है। यह फसल की उपज बढ़ाने के साथ-साथ खेतों की उर्वरा शक्ति भी बनाये रखता है।

- एन०पी०के० दानेदार होने के कारण बुवाई के समय प्रयोग में आसान है।

- केवल सहकारी बिक्री केन्द्रों से ही उपलब्ध होने के कारण शत-प्रतिशत शुद्ध है।

इफको का वादा, लाभ मिलेगा ज्यादा

इफको

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर को० लि०
602-603, लोकनायक भवन
फ्रेजर रोड, पटना-8000001

मंच की दिल्ली शाखा द्वारा कहानी पाठ व समीक्षा

विगत 28 अगस्त, 1999 को **राष्ट्रीय विचार मंच** की नई दिल्ली शाखा की ओर से नई दिल्ली के सादिकनगर स्थित क्वार्टर सं 294 के प्रागंण में आयोजित **पावस संध्या** के अवसर पर मंच के संरक्षक तथा भारत के अपर उपनियंत्रक-महालेखापरीक्षक श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव की मार्मिक कहानी **नियुक्ति** का पाठ श्री अवधेश कुमार सिन्हा ने किया। पाठ के पश्चात् इस कहानी पर उपस्थित प्रबुद्धजनों के द्वारा प्रस्तुत समीक्षा के दौरान विस्तार से चर्चा की गई।

इस अवसर पर विशेष रूप से पधारे मंच के राष्ट्रीय महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने कहा कि यह कहानी उस समय को, जिसमें हम जी रहे हैं प्रतिर्बिंबित करने में पूर्णतः समर्थ है। हमारा यह समय सभी तरह के नैतिक मूल्यों के विलुप्त हो जाने और वैयक्तिक स्वार्थ के चरम पर चले जाने का समय है जिसमें सभी अपने-अपने कर्तव्यों से विमुख होकर अपने स्वार्थ की रोटी सेंकने में जुटे हुए हैं। इन्हीं स्थितियों को कहानीकार श्रीवास्तव ने वस्तुतः महसूस किया है और अपने अनुभव को **रचना** के रूप में ढालने का स्तुत्य प्रयास किया है।

मंच के संयुक्त सचिव तथा आकाशवाणी के सहायक निदेशक डॉ० मेदिनी राय ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि इस कहानी में न केवल मध्यवर्गीय जीवन के खोखलेपन देखने को मिलते हैं बल्कि कार्यालय में कार्यरत व्यक्ति के वैयक्तिक दुःखों एवं संघर्षों की गाथा है जिसमें कर्मचारियों/अधिकारियों के आपसी स्वार्थों के टकराहट स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। प्रशासनिक अधिकारी श्री अवधेश प्र० सिन्हा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि **नियुक्ति** कहानी बदलते युग में मध्यम वर्ग की मानसिकता तथा उसकी संवेदनहीनता पर बेबाक ढंग से प्रकाश डालती है।

विचार दृष्टि पत्रिका के प्रबंध संपादक श्री सुधीर रंजन ने कहा कि कथाकार ने कार्यालयीय जीवन को करीब से देखने की कोशिश में इस कहानी के माध्यम से सभ्य कहलानेवाले समाज की कमजोरियों को उजागर किया है। विडम्बना यह है कि सारी स्थिति को जानते-समझते हुए भी कोई विरोध नहीं करता।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री श्रीवास्तव ने कहा कि आज के लेखन में सपाट बयानी आ गई है पर इस कहानी में सभ्य समाज के असभ्य चेहरे का खुलासा करने के साथ-साथ मानवीय पीड़ा को दर्शाया गया है। आज आदमी कितना संवेदनहीन हो गया है कि अपने सहकर्मी की मृत्यु के बाद भी उसके प्रति सहानुभूति न रखकर अपने स्वार्थ में लिपटा है।

आयोजन के दूसरे चरण में श्री अवधेश प्र० सिन्हा तथा अध्यक्ष श्री श्रीवास्तव जी ने अपनी कविताएं सुनाकर लोगों को मंत्रमुग्ध किया। श्री सिद्धेश्वर ने भी पावस पर आधारित अपनी हाइकु की नई कविताएं प्रस्तुत की। इस संध्या में मंच की नवगठित युवा कोषांग के संयोजक श्री शशि भूषण कुमार तथा सदस्य श्री रविशंकर ने मंच तथा पत्रिका को हर संभव सहयोग करने का आश्वासन दिया। अन्त में मंच के सचिव श्री सीताराम सिंह ने अपने धन्यवाद-ज्ञापन के क्रम में मंच की गतिविधियों को गति प्रदान करने का संकल्प दुहराया। सबसे अन्त में राष्ट्रीय विचार मंच की नई दिल्ली शाखा के उपाध्यक्ष **मो० जैनुद्दीन अंसारी** तथा कार्यकारिणी सदस्य **श्री आत्माराम फोन्दणी कमल** के असामयिक निधन पर एक शोक प्रस्तावपारित करने के उपरान्त दो मिनट का मौन रख दिवंगत आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना की गई।

नई दिल्ली में मंच का युवा कोषांग गठित

विगत 15 अगस्त, 99 की संध्या 6 बजे दिल्ली के शकरपुर में युवकों एवं छात्रों की एक बैठक श्री सुधीर रंजन की अध्यक्षता में हुई जिसमें उपस्थित सभी युवा छात्रों एवं कार्यकर्त्ताओं ने राष्ट्रीय विचार मंच के कार्यकलापों को गति प्रदान करने तथा उसके मुख-पत्र **विचार दृष्टि** पत्रिका को विस्तार देने हेतु राष्ट्रीय विचार मंच, दिल्ली शाखा के युवा कोषांग के गठन की आवश्यकता पर बल दिया। बैठक में विशेष रूप से आमंत्रित मंच के राष्ट्रीय महासचिव तथा पत्रिका के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर ने मंच तथा पत्रिका के उद्येश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। तदुपरान्त योजना आयोग के श्री अजय कुमार, कौशलेन्द्र नाथ तिवारी, कन्हैया मेहता, प्रो. दिलीप कुमार सिंह, विजय कुमार पाण्डेय आदि ने भी मंच के उद्येश्यों को जन-जन तक पहुंचाने तथा उसे अमली जामा पहनाने के लिए मंच की युवा शाखा की आवश्यकता बताई। प्रारम्भ में श्री शशि भूषण ने आगत अतिथियों एवं उपस्थित जनों का हार्दिक स्वागत किया।

बैठक में एक सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रीय विचार मंच के युवा कोषांग की तदर्थ समिति के संयोजक शशि भूषण निर्वाचित हुए।

अन्त में श्री दिलीप कुमार सिन्हा ने उपस्थित लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय विचार मंच की चेन्नई शाखा गठित

विगत 14 अक्टूबर, 1999 को चेन्नई (तमिलनाडु) के अन्नानगर स्थित डॉ. मधु धवन के निवास में आयोजित बैठक में साहित्यकारों, प्राध्यापकों तथा प्रबुद्धजनों के द्वारा वर्ष 2000 के लिए **राष्ट्रीय विचार मंच** की चेन्नई शाखा का गठन हुआ। बैठक में मंच के राष्ट्रीय महासचिव श्री सिद्धेश्वर प्रेक्षक के रूप में उपस्थित थे। मंच की चेन्नई शाखा की कार्यकारिणी के निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए : -1. डॉ. बाल शौरी रेड्डी- संरक्षक, 2..डॉ. मधु धवन - अध्यक्ष, 3. डॉ. निर्मला मौर्य -उपाध्यक्ष, 4. श्री शिवानन्द धुत्रे-सचिव, 5. प्रो. विद्या शर्मा-कोषाध्यक्ष, 6. श्री गुलाबचन्द कोटडिया - सदस्य

अन्य सदस्य गण श्री शौरि राजन, श्री रमेश गुप्त 'निरद', डॉ सुन्दरम डॉ. साई प्रसाद ए.बी., डॉ. जयलक्ष्मी सुब्रह्मण्यम, श्री आशुतोष मनुज, श्री प्रह्लाद श्रीमाली।

बैठक की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. बालशौरि रेड्डी ने की।

बापू व शास्त्री जी याद किए गए

विगत 2 अक्टूबर, 99 को नई दिल्ली के शकरपुर में राष्ट्रीय विचार मंच की दिल्ली शाखा के तत्वावधान में आयोजित एक विचार संगोष्ठी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को उनके 130वें जयंती के अवसर पर याद किया गया। इस संगोष्ठी में "बापू व शास्त्री के आदर्शों एवं विचारों की प्रासंगिकता" विषय पर विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए **विचार दृष्टि** के प्रधान संपादक **सिद्धेश्वर** ने सत्य एवं अहिंसा के पूजारी बापू को इस सदी की महानतम महापुरुष बताया। इस अवसर पर मंच के युवा कोषांग के सदस्य सुधीर रंजन, शशि रंजन, रवि शंकर, सत्यप्रकाश, इंजी०धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा आदि ने बापू व शास्त्री जी को भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। संगोष्ठी का संचालन किया संयोजक शशि भूषण ने तथा आभार व्यक्त किया दिलीप कु०सिन्हा ने।

- विचार प्रतिनिधि नई दिल्ली से

मंच के युवा कोषांग व "विचार दृष्टि" पत्रिका कार्यालय का उद्‌घाटन

विगत 24 अक्टूबर, 99 को दिल्ली के शकरपुर स्थित मकान सं०-यू.208, में **राष्ट्रीय विचार मंच** के संरक्षक **श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव** द्वारा मंच के युवा कोषांग व **"विचार दृष्टि"** पत्रिका के कार्यालय का उद्‌घाटन विचार दृष्टि के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उद्‌गार व्यक्त करते हुए श्री श्रीवास्तव ने कहा कि युवा कोषांग के युवकों द्वारा अपनाये गये मद्यपान एवं धुम्रपान निषेध को सच्चाई से अपने जीवन में उतारना होगा। साथ ही और लोगों को सुधारने का प्रयास करना होगा। श्री सिद्धेश्वर ने मंच व पत्रिका के कार्यकलापों को आगे बढ़ाने, मार्गदर्शन करने का आश्वासन तथा **विचार दृष्टि** के सफल प्रकाशन की शुभकामना दी। प्रारम्भ में सुधीर रंजन ने स्वागत तथा शशि भूषण ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

आदर

❑डा०पी०सी०कोकिला

प्यार करती थी मैं
पहले इन्सानों से।
अब इन्सानों का
आदर करती हूं मैं।
उन्होंने ही मुझे यह सिखाया है
यह शायद उनको प्यार
भाया नहीं या फिर रास आया नहीं।
वैसे आदर देना
प्यार देने की अपेक्षा आसान भी है।
मैंने सबके लिए खाने बना लिये हैं
सरकारी दफ्तर के फार्म जैसे।
बस अपनी अपनी हैसियत के अनुसार
सबको आदर देती हूं, खाने भरती हूं।
एक खाना दिल के अन्दर है,
एक बाहर व्यवहार में।
दिल के खाने के अंक बड़े कान्फिडेन्शीयल हैं,
बाहर के अंक सब को दिखते हैं।
सब बड़े संतुष्ट हैं,
अपने अपने हिस्से के अंक पाकर।
प्यार देती थी तो
चपरासी काम नहीं करता था,
अब अपने खाने के अंक देख
दौड़ा आता है
सर झुकाये काम करता है।
प्यार देती थी
तो बराबरवाले अकड़ते थे
अब अपने खाने के अंक देख
साथ चुपचाप चलते हैं।
प्यार में बड़ों से तकरार होती थी।
अब उनका खाना लबालब भरा रहता है
मैं बड़े मजे से मैगजीन पढ़ती रहती हूं।
बस खाना खाली नहीं होता
खुद खाली बैठी रहती हूं।
प्यार देने में तो कभी-कभी आंखें गीली होती थीं,
आदर देने में बड़े मजे हैं।
व्यंग्य में ओंठ तीरछे रहते हैं,
जिन्दगी सीधी चलती है।
लोगों ने ही मुझे सिखाया है
कि प्यार से आदर बड़ा है।
अन्दर से भले ही रीता कर जाये
बाहर उसी का बोलबाला है।
प्यार से आदर बड़ा है।

संपर्क-हिन्दी विभाग, प्रेसिडेंसी
कॉलेज, 45, कुप्पु मुन्तु स्ट्रीट,
ट्रीप्लीकेन, चेन्नई-5

बेशरमाई की हद

❑सोमदत्त शर्मा 'सोम'

चौराहे पर,
सरकारी नल पर,
एक निर्वस्त्र नारी को,
नहाते देखा।
अपनी लाज,
ढांकते घुटनों से देखा।
"सीमा पर,
हो गई,
बेशरमाई की"
इन गरीबों का,
हक छीनकर,
सुन्दर वस्त्राभूषण,
धारण करने वालों को,
यह कहते देखा।
बापू,
तुम तो,
इन मां बहनों की,
ढकने लाज,
दे गए
धोती आधी अपनी।
लेकिन,
समाज के ठेकेदारों को,
तथाकथित राष्ट्रभक्तों को,
उस आधी को,
भी छीनते देखा।
कहां गए
लाज पांचाली की रखने वाले।
हे जगत के पालनहार,
तुम्हारा यही विधान क्या,
बड़े लोगों को
नित नए वस्त्र
हो न सके, चिथड़े भी नसीबं।

संपर्कः-बी-97,आनन्द विहार
दिल्ली-110099

सदी का अन्त

❑आलोक कुमार

सभ्यता बड़ी है
सोच में पड़ी है
बीत चुका है
आखिरी वसंत
पीछे मौन
इतिहास खड़ा है
सामने खड़ी
चुनौतियां अनन्त
सांस्कृतिक प्रदूषण
राजनैतिक अपराधीकरण
आतंक जिहाद के इस दौर में
कहां हैं साधु सन्त?
सहस्त्राब्दि पास आ रहा
बांहें पसारे गर्व से
राष्ट्र बढ़ रहा आलिंगन को आतुर
बिना "निराला पन्त"
मनुष्यता
चुपचाप पड़ी है
दिख रहा है
'सदी के अन्त'

संपर्कः ए०जी०कॉलोनी, पटना-14

घायल जनतन्त्र

❑डॉ० परमेश्वर गोयल

चुनाव सर्वेक्षण के दौरान
मैंने मतदाता को
ज्योंही टटोला,
वह झल्लाकर बोला-
कैसा चुनाव?
कैसे प्रत्याशी?
अमन-चैन का खून
आदमीयत को फांसी?
मैंने कहा-भाई!
जोश में नहीं
होश में आइए
चुनावी बुनियादी हक है
गहराई में जाइए।
वह बोला-भाई साहब !
अच्छा तमाशा है
चुनाव क्या बताशा है?
गजभर लम्बा मतपत्र
और पचासों प्रत्याशी
ऐसे में कैसे कोई
किधर जाए
किस के आगे ठप्पा लगाए?
तीसमार- खां सारे
एक-से-एक हैं
अब इस पेशे में
कितने नेक हैं?
जीतनेवाला शहंशाह
और जनता वान्दी है
अब इस क्षेत्र में
कौन गांधी है?
यह धन्धा अब
फूलों की सेज है
राजनीति दुल्हन
कुर्सी दहेज है।
अब आप ही बताएं
शंका मिटाएं
ऐसे चुनाव की
क्या दरकार है?
जब राजनीति
अब शुद्ध व्यापार है।
मैंने कहा-भाई!
तर्क आपका, शंका सही है
दर्द देश का यहां यही है
जो जितना गलत
वह उतना बड़ा है
जनतन्त्र होकर घायल
गिरवी पड़ा है।

संपर्कः गुलाबबाग,पूर्णिया,बिहार

"देश मंटे मट्टि कादोय, देश मंटे मनुषु लोय"

-सुप्रसिद्ध तेलुगु कवि गुरजाड अप्पाराव

तेलुगु साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि गुरजाड अप्पाराव (1862-1915) की बहुचर्चित देशभक्ति शीर्षक की गेय कविता की एक पंक्ति है **देश मंटे मट्टि कादोय, देश मंटे मनुषु लोय जिसका शब्दशः हिन्दी में अर्थ है: देश का अर्थ मिट्टी नहीं, देश का अर्थ मनुष्य है।** तेलुगु कविता की यह पंक्ति तेलुगु भाषा में लगभग एक कहावत बन चुकी है। तेलुगु साहित्य में पहले पहल आधुनिकता का शंख फूंकनेवाले कवि अप्पाराव का आशय यहां देश की मिट्टी के अस्तित्व को नकारना नहीं बल्कि देश में रहनेवाले लोगों के महत्व को रेखांकित करना है। राष्ट्रीय नवजागरण के आरंभिक दौर में उन्होंने देखा था ऐसे बहुत सारे लोगों को जो देश-प्रेम की बड़ी-बड़ी बातें किया करते और मातृभूमि की माटी का तिलक लगाए घुमते, लेकिन आसपास के लोगों की पीड़ाओं और समस्याओं पर गौर करना वे जरूरी नहीं समझते थे। ऐसे लोगों की देशभक्ति का मतलब भारत के भौगोलिक मानचित्र में भारतमाता को साकार देखते हुए उसकी आरती उतारना भर होता। कवि गुरजाड की यह कविता दरअसल ऐसे ही कथित देशभक्तों को सम्बोधित थी। कविता में यह संदेश स्पष्ट झलकता है कि किसी भी देश का कोई भूखंड वहां रहनेवाले लोगों की बदौलत ही देश कहलाता है। इसलिए दनकी चिंताओं से जुड़ना ही सच्ची देशभक्ति है।

कवि गुरजाड् की कुछ और पंक्तियों को देखें :-

सोंतलाभं कोंत मानुक
पोरागु वाडिकि तोड्डपड़वोय

अपने स्वार्थ की बात थोड़ा भूलकर पड़ोसी के हित की बात सोचो।

कविता का आदर्श
आमुलंदुम अणगिमणमि
कवित कोयल पलुक वलेनोय
पलुक लनु विनि
देशमंद भिमानमुलु वलेनोय मोलकेत

अर्थात् पत्रों की आड़ में छिपे कहं करों कविता रूपी कोयल कूक टूटे, इस कूक को सुनकर देश वासियों में राष्ट्र के प्रति प्रेम जागृत हो।

आंध्रप्रदेश के महान सुधारक वीरेशलिंगम पंतुलु के समकालीन गुरजाड अप्पाराव का जन्म विशाख जिले के रायवरम में 21 सितम्बर, 1862 को हुआ था। यों तो वे छात्रजीवन से ही लिखते थे किन्तु तेलुगु में उनकी वास्तविक साहित्य साधना उनके विजयनगरम कॉलेज में प्राध्यापक नियुक्त होने के बाद ही शुरू हुई। बहुमुखी प्रतिभा के इस कवि ने मुख्य तौर पर गीत लिखे, कविताएं लिखी। पर कहानी और नाटक पर भी इनकी कलम खूब चली। तेलुगु साहित्य को उन्होंने ही प्रथम आधुनिक कहानी दी और पहला नाटक भी दिया। इनके लेखन की प्रमुख विशेषता यह है कि इन्होंने जो कुछ और जब भी लिखा वह मुट्ठी भर विशिष्ट व्यक्तियों के बौद्धिक विलास के लिए नहीं अपितु जन सामान्य के लिए लिखा। अप्पाराव ने केवल कथ्य की दृष्टि से नहीं अपितु भाषा-शैली की दृष्टि से भी तेलुगु साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की। अपनी रचनाओं के माध्यम से आम तेलुगुभाषी तक पहुंचने के लिए अपनी भाषाशैली उन्होंने स्वयं विकसित की और उसे जनभाषा के करीब ले आए जिसके परिणामस्वरूप तेलुगु के आधुनिक साहित्य को एक जीवन्त और गतिमान भाषा सुलभ हुई।

वरपक्ष द्वारा कन्यापक्ष को दिये जानेवाले दहेज को तेलुगु में कन्याशुल्कम कहा जाता है। इस प्रथा ने आंध्रप्रदेश के सामाजिक जीवन में एक घातक तथा घिनौना रूप ले लिया था क्योंकि सम्पन्न अधेड़ों और वृद्धों द्वारा गरीब मां-बाप की अबोध बालिकाओं की इस प्रथा में वस्तुतः खरीद-फरोख्त की जाती थी। कवि अप्पाराव ने कन्याशुल्कम नामक एक नाट्क लिखकर उस प्रथा पर गहरा प्रहार किया जो तेलुगुभाषियों के बीच बेहद लोकप्रिय हुआ। आन्ध्रप्रदेश के कोने-कोने में इसके सफल मंचन ने धूम मचा दी। 1992 में इस नाटक की शताब्दी का राज्यव्यापी महोत्सव मनाया गया। तेलुगु के इस महान कवि को उनकी जयन्ती पर उनकी स्मृति को सादर नमन विचार परिवार की ओर से।

-विचार प्रतिनिधि, चेन्नई से

शोषक और शोषित-कुछ बिम्ब

❑कृष्ण कुमार राय

देखो तो, कैसी निरर्थक और निष्प्राण कविता की रचना की है उस भाव-शून्य कवि ने। नगर की आलीशान अटारियों और उंची हवेलियों की शोभा बढ़ाने वाले, विलासिता के मद में चूर धन-कुबेरों का इतना गुण-गान जिन्होंने समाज के अशक्त और असहाय वर्ग के शोषण को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मान रखा है।

अरे, बतला दो कवि को कि यह भी कोई कविता है जिसमें जीवन की पीड़ा नहीं, आत्मा की तड़प नहीं, मन की कसक नहीं, सौन्दर्य का बोध भी नहीं। कह दो उससे कि कविता ही लिखनी है तो समय की मांग के अनुरूप ऐसी सशक्त रचना का सृजन करे जिसमें उन दीन-हीन, कर्मशील और श्रमजीवियों की यश-गाथा हो जो पग-पग पर क्रूर शोषकों के शोषण का शिकार होकर भी शोषित ही बने रहने की विलक्षण क्षमता और जीवट रखते हैं। समाज में जिन्हें निम्न से निम्नतर स्तर प्राप्त है। जिनकी पीड़ा और दर्द महसूसने वाला भी कोई नहीं। जिनकी गुहार को सभी अनसुनी कर देते हैं। इन्सान होते हुए भी जिन्हें इन्सानियत के दायरे से बाहर धकेल दिया जाता है। जो समाज के ऐसे शापित अंग माने जाते हैं जिनसे निरन्तर अविराम गति से काम लेना ही शोषक समाज ने जाना है। उनकी दुर्दशा पर दो कतरे आंसू बहाने वाला और दुर्दिन में सांत्वना के दो शब्दों का सहारा देने वाला भी कोई नहीं। कह दो कवि से कि निर्भीक होकर अपनी कविता के माध्यम से शोषितों के हृदय में विप्लव का ऐसा बिगुल बजा दे, क्रान्ति की ऐसी लहर उठा दे जिससे उनकी रगों में पुरुषत्व फड़क उठे और वे अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ मरें। पूंजीवाद और एकाधिपत्यवाद को समूल उखाड़कर फेक दें।

देखो तो, कितना बेसुरा गीत छेड़ रखा है उस हृदयहीन गायक ने। उन नरपिशाचों का ऐसा यश-गान, जो कोटि-कोटि श्रमिकों और कृषकों को रक्त चूसकर ऐश कर रहे हैं और गरीबों की मजारों पर आलीशान अट्टालिकाएं खड़ी करते जा रहे हैं।

अरे, बतला दो गायक को कि उसके गीत में लय नहीं, जुल्म के खिलाफ उठ खड़े होने के लिए शोषितों की ललकार नहीं। कह दो उससे कि गीत ही गाना है तो निडर होकर उच्च स्वर में ऐसा विप्लवकारी गान छेड़ दे जिसे सुनकर शोषित वर्ग अपने हितों और स्वत्वों की रक्षा के लिए पागल हो उठे। उनकी उत्पीड़ित आत्मा प्राण हथेली पर लेकर क्रूर शोषकों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजा दे। पूजीपतियों के एकाधिकार को समाप्त कर समाजवाद की पताका फहरा दे।

देखो तो कैसा अटपटा चित्रांकन किया है उस कल्पना शून्य चित्रकार ने। उन्हीं भव्य प्रासादों का चित्रण जहां देश-काल की गतिविधियों और परिस्थितियों से अनभिज्ञ, अन्धे, मदांध शोषकों और पूंजीपतियों की जमात बैठी प्याले पर प्याला ढाला करती है। कितना दुरुपयोग किया है कलाकार ने अपनी तूलिका का।

अरे, कह दो चित्रकार से कि तूलिका का चमत्कार दिखलाना है तो एक ऐसे चित्र को जीवन्त आकार प्रदान करे जिसमें चारो तरफ कान्ति की लपटें उठती दिखलायी पड़ती हों। सर्वत्र शोषकों और शोषितों के बीच संग्राम छिड़ा हो। एक तरफ समता और समानता पर आधारित समाज के निर्माण के लिए संन्नद्ध मजदूर और किसान अपने अधिकारों की रक्षा के लिए, पूंजीवादी शोषक समाज का ढांचा ध्वस्त कर उसका अस्तित्व मिटा देने के लिए, उसे महासमर में अपने प्राणों की आहुति चढ़ा रहे हों, और दूसरी ओर विजय-लक्ष्मी विजय-केतु के साथ जयगान करती हुई संघर्षरत शोषितों का अभिनन्दन करने के लिए आतुर खड़ी हो।

संपर्क :-एस०2/51-ए०, अर्दली बाजार, वाराणसी-उ० प्र०-221002

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल इंसान जिसने जिन्दगी में

कभी हार नहीं मानी।

शुभकामनाओं के साथ

elf

Engine Oils

ENGINE OILS

THE WINNING FORMULAE

के साथ

आप भी हमेशा जीतेंगे।

EXHIBITION ROAD, PATNA -800001

PHONE - 210748

तेली की खोपड़ी

❑ जिया लाल आर्य

चार कथा-संग्रह, चार गीत-संग्रह व काव्य, दो बाल साहित्य, तीन जीवनियों, तथा एक उपन्यास स्वतन्त्रता संग्राम एवं दलित साहित्य के रचनाकार श्री जियालाल आर्य सरकारी सेवा के दायित्व का निर्वहन करते हुए हिन्दी साहित्य की समृद्धि में निरन्तर रत हैं। सम्प्रति आप बिहार में राज्य निर्वाचन आयुक्त के पद पर कार्यरत हैं।

तेली की खोपड़ी कहानी के माध्यम से आपने यह कहने का सफल प्रयास किया है कि आज हमारे समाज में दोहरी जिन्दगी जी रहे लोगों के चरित्र में रूढ़ियों, अंधविश्वासों, व्यथाओं तथा .अन्य प्रकार की सामाजिक दैन्यताओं की भरमार ने हमें मजबूर किया है कि हम अपने बारे में सोचें-विचारें और खूद को सवारें।

श्रीमती रमा सिंह की बीमारी की चर्चा समूचे इलाके में जोरों पर थी। उन्हें कौन-सी बीमारी है और उसका क्या कारण हो सकता है, यह तथ्य डाक्टरों, वैद्यों के लिए एक अनबूझ पहेली बन बैठा था। क्षेत्र के तमाम डाक्टरों ने अपने-अपने चिकित्सकीय कौशल की आजमाइश कर ली थी। असाध्य रोंगों को साध लेने वाले बनारस तक के यशस्वी वैद्यों ने भी अपनी दवा का प्रयोग कर हार मान ली थी। होमियोपैथी, ईरानी, देशी-विदेशी किसी भी औषधि का कोई असर नहीं उभर रहा था। ओझा, सोखा, तान्त्रिकों की भी मदद ली गयी, परन्तु कोई लाभ नहीं। अपनी पत्नी की इस विकट बीमारी को लेकर बाबू सुरेन्द्र सिंह और उनकी माता सतत् उन्मन-उदास रहा करते थे। सुरेन्द्र सिंह को लेखपाली की नौकरी मिल गई थी। वे सप्ताह में तीन-चार दिन अपने हल्का में रहते परन्तु उनका मन सतत् घर में ही अंटका रहता। जब भी मौका मिलता, वे घर की राह पकड़ लेते।

श्रीमती सिंह को इस अनबूझ बीमारी के अलावा और कोई कष्ट नहीं था। भरा-पूरा घर था, भगवान ने एक बेटा भी दिया था। खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। परन्तु यह बीमारी ही उनकी और उनके पूरे परिवार की सुख-शांति चबाए जा रही थी। शादी के कुछ ही वर्षों के बाद पांव भारी होने के साथ से ही पेट में यह दर्द पैठ गया था। कभी दायें, कभी बायें, कभी ऊपर तो कभी नीचे उसकी चहलकदमी चलती रहती थी और पता ही नहीं चल पाता था कि वह पेट के किस हिस्से में है। इसका प्रकोप कभी कभी तो उन्हें अचेतावस्था में ले जाती थी। दर्द निवारक दवा का प्रभाव भी कुछ ही देर ठहरता और उसका असर मिटते ही बेचैनी और विभीषक बन जाती।

पं० सीताराम को भी श्रीमती रमासिंह की बीमारी की खबर लग गयी थी। सुरेन्द्र सिंह की अनुपस्थिति में एक दिन वे रमा सिंह और उनकी सासु से उनके घर पर मिले और उन्होंने रमा सिंह को विश्वास दिलाया कि वे उनकी बीमारी दूर कर देंगे। अन्धे को और क्या चाहिए-दो आंख। रमा सिंह की सासु ने कहा, "पण्डित जी! हमारी बहू को ठीक कर दीजिए, जो भी खर्चा-पानी लगेगा, उसका इन्तजाम हो जायगा।" पण्डित सीताराम को मामला संवरता नजर आया। उन्होंने कहा, "माता जी आप चिन्ता न करें, यह ग्रहों का फेर है। मैं आ गया हूं, अब सब ठीक हो जायगा। मैं तो देवी का पुजारी हूं, उन्हीं की कृपा से सब कुछ होता है। मैं अपने लिए कुछ नहीं लेता। पूजा-पाठ में जो खर्च होता है, बस वही देना होता है। मैं देवी मां से अभी आपके सामने पूछ कर बताता हूं कि इस बीमारी के इलाज में क्या खर्च आएगा! पण्डित सीताराम ने अपने कंधे पर लटके झोले से एक छोटी सी आदमी की खोपड़ी निकाली। उसे कान के पास लगाया और पूछा, "मां आप जगी हैं या सो रही हैं?" दो-तीन बार यह प्रश्न उन्होंने दुहराया। फिर स्वयं ही उत्तर दिया, "क्षमा करें मां! एक भक्त को भीषण कष्ट है, इसीलिए आप का आहवाहन करना पड़ा। हां, हां! भक्त का नाम रमा सिंह ही है। इसे एक बेटा है। खूब सुखी-सम्पन्न है। सभी सुविधाएं हैं, परन्तु बीमारी से त्रस्त हैं। हां, हां मां ! आपने ठीक पहचाना। अब बताइये, यह बीमारी ठीक होगी या नहीं। यदि ठीक होने लायक है तब भक्त को इस बीमारी के इलाज के लिए कितने पैसों का प्रबन्ध करना पड़ेगा। बारह हजार ! ठीक है मां, मैं इन्हें सब बातें बता देता हूं। बीमारी को ठीक करना तो आप का ही काम है। मैं तो आपका निमित्त मात्र हूं।" थोड़ा रुककर फिर बोले, "ठीक है, मां ! मैं नारियल-परीक्षण भी करके देख लूंगा, जब परिणाम अनुकूल आएगा तभी मैं इस असाध्य बीमारी में हाथ लगाऊंगा अन्यथा भक्त को अनावश्यक खर्च में क्यों डालूं।

पण्डित ने वह खोपड़ी अपने कान से अलग की और रमा सिंह से कहा, "देखो ठकुराइन बीमारी तो आपकी ठीक हो जाएगी। अभी-अभी मैंने देवी मां से बात की। इसपर कुल बारह हजार रुपयों का खर्च पड़ेगा। परन्तु अनुष्ठान आरंभ करने के पूर्व मां के आदेश से नारियल-परीक्षण करना है। उसी से ज्ञात होगा कि बीमारी ठीक होने वाली है या नहीं। नारियल-परीक्षण एक छोटी-सी आध्यामिक प्रक्रिया है। बाजार से दो-तीन नारियल लाने होंगे। बीमार के हाथ से किसी एक नारियल को तुड़वाना है। यदि बीमारी ठीक होने वाली होगी तब नारियल के भीतर से एक खिला हुआ फूल निकलेगा अन्यथा केवल पानी। यह परीक्षण मैंनें सैकड़ों बार किया है। जब काम बनने वाला होता है, नारियल से फूल निकलता है और उसके बाद ही मैं पूजा में हाथ लगाता हूं। मां की कृपा से ही सब कुछ होता है। तीन नारियल, एक मीटर एकरंगा लाल कपड़ा, अगरबत्ती और प्रसाद के लिए आधा किलो लडड् तत्काल इतना ही साम्रगी चाहिए। आप को नये कपड़े पहनने हैं। यदि घर में है तो ठीक, अन्यथा बाजार से मंगा लीजिएगा। पूजा का सामान मंगवा कर आप जब हमें सूचित करेंगी तब मैं आ जाऊंगा। पूजा के लिए धोती, कुर्ता, गमछा भी चाहिए जिसे पहनकर मैं पूजा करूंगा। यह बहुत ही पवित्र पूजा है। इसमें पूर्ण शुद्धता और श्रद्धा अपेक्षित है। किसी प्रकार की शंका से अमंगल भी हो सकता है।"

"देखिये पण्डितजी मैं कहां बाजार जाऊंगी। मुझे भी तो किसी से यह सब मंगवाना ही पड़ेगा। अच्छा होगा कि आप ही लेते आइयेगा। जो भी पैसा लगेगा ले लीजिएगा। पूजा-पाठ का मामला है। किस तरह का कौन-सा सामान चाहिए यह आप से अच्छा और कौन जानता है।" श्रीमती सिंह ने विनीत स्वरों में पण्डित जी से अनुरोध किया।

पण्डित जी भी तो यही चाहते थे। श्रीमती सिंह का विश्वास जीतने के लिए उन्होंने कहा, "ठकुराइन, इन सामानों में कितना खर्च होगा, यह तो मुझे भी पता नहीं है। मैं बाजार से सारा सामान लेता आऊंगा, पैसे भाग थोड़े ही जायेंगे, मैं आप से ले लूंगा।" कहते हुए पण्डित सीताराम ने खोपड़ी को पुन: कान से लगाया और कहा, "मां मैं आप की इच्छानुसार काम कर रहा हूं। भक्त की लाज रखना आप का काम है।" यह कहते हुए वे साष्टांग धरती पर लेट गये।

ठकुराइन ने अपनी बहू के हाथ का स्पर्श कराकर थोड़ा चावल और आटा पण्डित जी को दिया। उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में सीधा बांध कर कंधे पर लटका लिया और आशीर्वाद स्वरूप हाथ उठाकर जय-जयकार करते हुए चलते बने।

बाबू सुरेन्द्र सिंह सप्ताहान्त में घर आए। परन्तु उनकी मां और पत्नी ने उनसे पूजा-पाठ की बात नहीं की। पण्डित जी ने यह शर्त लगा दी थी कि पूजा-पाठ की जानकारी बाबू साहब को कतई नहीं होनी चाहिए। सुना है कि उन्हें इन बातों में विश्वास नहीं है। और विश्वास का ही फल मिलता है।

श्रीमती रमा ने रात्रि में अपने पति से कहा, "आप हफ्तों बाहर रहते हैं। कभी-कभार पैसों

की जरूरत पड़ जाती है और तब बड़ी कठिनाई होती है। मां जी के पास भी हरदम पैसा नहीं रहता। पड़ोसिन से पैसा उधार मांगना अच्छा नहीं लगता है। कुछ पैसा हमारे पास छोड़ दीजिए ताकि जरूरत पड़ने पर किसी का मुंह नहीं ताकना पड़े।"

"कितने पैसों की जरूरत है। आपने कभी कहा भी तो नहीं।" बाबू सुरेन्द्र सिंह ने किंचित् विस्मय व्यक्त करते हुए पूछा। विस्मय इसलिए कि उनकी पत्नी ने कभी किसी चीज की मांग नहीं की थी। आज उसका पैसे की मांग करना उन्हें अस्वाभाविक लग रहा था।

"यही करीब दो-ढ़ाई हजार" पत्नी ने कहा।

"दो ढाई हजार? इतने रुपयों का क्या करोगी? ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ेगी, जिसमें दो -ढाई हजार लग जायेंगे।" सुरेन्द्र सिंह ने स्पष्टीकरण - स्वरूप पूछा।

"मैं जानती थी, आप यही पूछेंगे! क्या मैं रुपयों को कहीं लुटा दूंगी। आप को मुझपर विश्वास नहीं है।" रमा सिंह ने तुनक कर जवाबी हमला किया और दूसरी ओर मुंह फेरकर सोने की मुद्रा बना बैठी।

"मैं कोई शक नहीं कर रहा और न यही कह रहा हूं कि आप पैसों का दुरुपयोग करेंगी। मैं तो बस यों ही पूछ बैठा था।" सुरेन्द्र सिंह ने प्यार जताते हुए कहा, परन्तु उनकी पत्नी ने बिना कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किए सोने का बहाना बनाये रखा। सुरेन्द्र सिंह ने पुनः कहा, "अरे भाई इसमें नाराज होने की क्या बात है। मैं आपको दो ढाई हजार रुपयों का बन्दोवस्त कर दूंगा। अभी तो नहीं है। यह माह का अन्तिम सप्ताह है। अगले सप्ताह रुपये मिल जायेंगे। अब तो प्रसन्न हो जाइये देवी जी।" यह कहकर सुरेन्द्र ने अपनी पत्नी को अपनी ओर खींचकर बलिष्ठ बाहों में बांध लिया।

रमा ने मन ही मन प्रमुदित होते हुए सोचा कि उनका तीर निशाने पर लगा है। उन्होंने पति की प्रतिकर पकड़ को स्वयं छुड़ाने का अभिनय करते हुए कहा, "अच्छा अब सो जाइये। मैं आज ही पैसा थोड़े ही मांग रही हूं।" उन्होंने प्रसन्न होते हुए सोचा कि पण्डित जी के पूजा-पाठ की तैयारी के पैसों का इन्तजाम हो जायगा।

दो-तीन दिनों के बाद खूब तड़के पं० सीताराम रामनामी दुपट्टा ओढ़े सुरेन्द्र सिंह की कोठी पर आ धमके। घर में बड़ी ठाकुराइन और रमा सिंह थी। बेटा पढ़ने गया था। पं० सीताराम को समय-असमय का सम्यक् ज्ञान था। आज भी उचित समय पर ही वे पहुंचे थे। उन्होंने घर के आंगन की उन्होंने सफाई करवाई। गोबर से लिपवाया। चौका पुराकर काली कमली जमीन पर बिछवाया और श्रीमती रमा सिंह से स्नान करके नववस्त्रों में पूजा-स्थली पर पधारने का अनुरोध किया। फिर तीनों नारियल को लाल कपड़े में लपेटा। हल्दी, अक्षत, फूलमाला चढ़ाने के बाद श्रीमती रमा सिंह से कहा, "इन तीन नारियलों में से किसी एक को उठा लीजिए। मां भगवती का ध्यान धरकर मनोकामना-पूर्ति के लिए नारियल तोड़िये। भगवती की जैसी इच्छा । बीमारी दूर होनी होगी तो मां की कृपा से खिला हुआ पुष्प निकलेगा।" श्रीमती सिंह ने आंख मूंद कर ध्यान किया और फिर दाहिना हाथ बढ़ाकर बीच के नारियल को उठा लिया। नारियल तोड़ा गया। नारियल का पानी बाहर निकला। साथ में लाल रंग का उड़हल का एक खिला हुआ फूल भी। पं० जी ने नारियल उठा लिया। फूल को माथे पर चढ़ाया और फिर उसे श्रीमती रमा का देते हुए कहा, "नारियल के पानी का पान को लें यह मां का प्रसाद है। फूल को अपने आंचल में बांध लें। मां की कृपा हो गई है। अब बीमारी को तो ठीक होना ही है।"

ठाकुराइन के घर में प्रसन्नता की लहरें पसर गई। बड़ी ठकुराइन ने ईश्वर का धन्यवाद किया और श्रद्धापूर्वक पण्डित जी का चरण-स्पर्श करते हुए कहा, "पण्डित जी आप तो भगवान् बनकर मेरे घर आये हैं।

"मां जी, अभी-अभी आप के सामने ही देवी मां का चमत्कार हो गया। अब आप का दुख दूर हो जाएगा। परन्तु मैं आपसे पुनः आग्रह करता हूं कि इन सब बातों की भनक किसी को भी नहीं लगनी चाहिए, आप के बेटे तक को भी नहीं। बीमारी ठीक होने पर सब को स्वतः ही जानकारी हो जायगी। आप तो जानती ही हैं कि आजकल के पढ़े-लिखे लोग नास्तिक होते जा रहे हैं। परन्तु विश्वास फलति सर्वत्र। ईश्वर पर अडिग आस्था रखिये, सब ठीक हो जायगा।" पं० सीताराम ने अपनी विजय पर मुस्कराते हुए सुरेन्द्र की मां को अपने विश्वास-सूत्र में बांध लिया।

"माता जी! आज की पूजा तो समाप्त हो गई। अब मैं कल से बीमारी भगाने का जप शुरू करूंगा। आज की पूजा का सामान, सब मिलाकर आठ सौ पचास रुपयों का था। मैंने दुकानदार से उधार ले लिया है। कल पूजा प्रारम्भ करने के लिए भी करीब बारह-तेरह सौ रुपये लगेंगे। दोनों खर्चों को मिलाकर करीब बाईस सौ रुपया दे दीजिए।" सुरेन्द्र सिंह की मां ने बाइस सौ रुपये दे दिए। पण्डित जी ने रुपयों को सम्भालकर टेंट में रखा और प्रसन्न गति से चलते बने।

दूसरे दिन पण्डित जी ने कोठी के परिसर में एकान्त जगह की खोज की। सुरेन्द्र सिंह का यह पुस्तैनी मकान है। कोठी के अलावा गाय, बैल, भैंस आदि को बांधने के लिए घर के दक्षिण में एक बड़ी-सी सरिया है। मकान के उत्तर-पूर्व कोने में बड़ा-सा कुंआ है, जिसकी जगत चारों ओर से पक्की है। उत्तर और पश्चिम में आम, कटहल, जामुन, अमरूद, सरीफा आदि के सैकड़ों पेड़ हैं। बाग के बीच में ही शिवाजी का मन्दिर है, जिसके चारों ओर फुलवारी है। मन्दिर का बरामदा सदैव साफ-सुथरा रखा जाता है। पण्डित सीताराम ने इसी मन्दिर के परिसर में जप-तप, पूजा-पाठ करना उपयुक्त समझा। स्थल तो साफ-सुथरा था ही। पूजा-पाठ करते समय गुग्गुल, अगरबत्ती, होम आदि करने से पूरा वातावरण महमहा उठा था। दो दिन की पूजा और पण्डित जी द्वारा दिये गये प्रसाद खाने से रमा सिंह को लगा कि उनका दर्द किंचित् कम होने लगा है।

तीसरे दिन दर्द फिर बढ़ गया। रमा सिंह ने पण्डित जी को दर्द बढ़ने की जानकारी दी। पण्डित जी ने आश्वासन दिया, "ठाकुराइन ईश्वर पर विश्वास रखिये, सब ठीक हो जायगा। इतनी लम्बी बीमारी को जाने में कुछ समय तो लगना ही है।"

सुरेन्द्र सिंह जब अपनी कोठी पर साईकिल से पहुंचे तब अन्धेरा छा चुका था। पूरबा की उमस से शरीर पसीने से भींग गया था। उन्होंने बरामदे में साईकिल खड़ी की। गुड़ खाकर पानी पिया। पानी पीने से पसीने की धार और तेज हो गई परन्तु पत्नी के आनन्दातिरेक से दमकते सुकोमल मुखमंडल को देखकर वे पसीने की चिपचिपाहट तथा अपनी यात्राजन्य क्लांति भूल गये। उन्हें अव्यक्तनीय प्रसन्नता का अनुभव हुआ। उन्होंने पत्नी रमा से कहा, "देखो कोई आदमी हो तो बोलो बाल्टी-लोटा कुंआ पर रख कर पानी भर दे, पसीने से तरबर हैं, नहा लूं, तो अच्छा रहेगा।"

"कुआं पर क्यों, अन्दर आंगन में स्नान कर लीजिए। गर्मी से आए हैं, बाहर स्नान करना ठीक नहीं। मैं पानी रखवाए देती हूं।" रमा ने साधिकार अनुरोध किया।

"नहीं रमा, बाहर ही नहा लेता हूं। खुले में स्नान करना अच्छा लगता है। हल्का में रोजाना बाहर ही कुएं पर स्नान करता हूं। आदमी बुलाओ और धोती, गमछा भी भेज दो।" सुरेन्द्र ने अपनी इच्छा दुहरायी।

सुरेन्द्र की इच्छा के विरूद्ध रमा कभी कोई काम नहीं करती है। उन्होंने कहा, "ठीक है, जैसी आपकी मर्जी। परन्तु मेरी एक बात माननी होगी। स्नान करके मंदिर की तरफ नहीं जाइयेगा। यह वायदा करिये।"

"क्यों भाई, मंदिर जाने में क्या खराबी है? कहीं शिवजी से तकरार तो नहीं हो गई है? मैं उनसे विनती करता हूं, वे तो आशुतोष हैं। प्रसन्न हो जायेंगे।"

"आपको तो हर बात में मजाक ही सूझता है। कभी गंभीरता से तो काम लीजिए। मैं आपको कसम धराती हूं कि आप मन्दिर पर नहीं जायेंगे।"

"ठीक है भाई, नहीं जाऊंगा मन्दिर पर। इसमें कसम धरने-धराने की क्या आवश्यकता है। चलिए कुछ खाना वाना का प्रबन्ध कीजिए। मैं स्नान करके सीधे तुम्हारे पास आता हूं। दोपहर से कुछ नहीं खाया है।" सुरेन्द्र पत्नी को प्रसन्न करने

का प्रयास करते हुए कुएं पर स्नान करने चला गया।

कुंए पर जाते ही मंदिर की ओर से आती सुरभित बयार ने सुरेन्द्र का मन खींच लिया। मंदिर के समीप दीये टिमटिमा रहे थे और हवन से निकलते धुएं की पतली-पतली स्वच्छ बादलों की पर्तें झिलमिलाते दीये की लौ में स्पष्ट दिखाई देती थी। रमा द्वारा मंदिर की ओर न जाने की सुरेन्द्र सिंह को सौगन्ध खिलाने का राज खुलता-सा नजर आया। सुरेन्द्र की उत्सुकता परवान चढ़ने लगी। उसने स्नान करके कपड़े बदले और मंदिर की ओर चल पड़े। वहां का दृश्य अजीब था। एक पुजारी मंत्रोच्चारण करके हवन-कुण्ड में हवन-साम्रगी डाले जा रहा था। पुजारी की लाल-लाल आखों से मानों लहू टपकता-सा लगा। सुरेन्द्र की पदचाप से उसकी लाल-लाल बड़ी-बड़ी आखें ऊपर उठी। आंखों से ही सुरेन्द्र को आसन ग्रहण करने का संकेत किया। पास में पड़ी चारपाई पर जैसे ही वह बैठना चाहा, पुजारी चीख उठा, "वहां नहीं मूर्ख।" फिर जमीन की ओर इशारा करते हुए बोला, "तू अपना भला चाहता है तो पूजा में विघ्न मत बन। चुपके से जमीन पर बैठ जा। देवी मां यदि नाराज हो गई तब तुम्हारा सर्वनाश कर देगी।"

सुरेन्द्र जमीन पर फैली चटाई के ऊपर बैठ गया। पुजारी अपनी पूजा-प्रक्रिया में तल्लीन हो गया। पूजा समाप्त करके हवन-कुण्ड के समक्ष माथा टेककर पुजारी ने स्वतः कहा, "मां रक्षा करो। भक्त अनजान है। क्षमा कर दो मां।"

सुरेन्द्र सिंह को यह समझने में विलम्ब नहीं लगा कि पुजारी उसकी ही अज्ञानता स्वरित कर रहा है। उन्होंने पुजारी से करबद्ध होकर कहा, "महात्मा जी आप जैसी महान् विभूति का दर्शन हमें आज तक क्यों नहीं हुआ। आप का दर्शन पाकर मैं कृतकृत्य हो गया।" सुरेन्द्र सिंह ने पुजारी के मन के भीतर प्रवेश करने का प्रयत्न किया। प्रशंसा से भला कौन नहीं प्रसन्न हो जाता। देवी, देवता यहां तक कि भगवान् भी। पुजारी तो आदमी ही था।

सुरेन्द्र सिंह ने ही बात आगे बढ़ाई। "महात्मा जी! सुना है कि आप ने देवी मां को सिद्ध कर लिया है। आपने बहुत-से लोगों का कष्ट हरण किया है। इस घर का कष्ट दूर करना तो आपके लिए कुछ भी नहीं है। आप किस देवी की अराधना करते हैं, प्रभु।"

पुजारी सीताराम ने हवा में हाथ लहराते हुए कहा, "लो भक्त मां का प्रसाद।" सुरेन्द्र ने हाथ में प्रसाद लिया। इलाइची के पांच दाने। उन्होंने प्रसाद को माथे से लगाकर कहा, "महात्माजी अपनी सिद्धि के संबंध में कुछ बताइये। मैं आप से दीक्षा लेना चाहता हूं।"

"भक्त! यह मार्ग बड़ा दुर्गम है। इसमें कण्टक ही कण्टक हैं। तुम जहां हो, वहीं ठीक हो। यह खोपड़ी देखते हो ना। यह एक तेली की खोपड़ी है। जब मैं सोलह साल का था तभी मेरे पड़ोस में एक तेली के बेटे की अकाल मृत्यु हो गई। घर वालों ने उसकी लाश को गाड़ दिया। मैंने अमावस्या की अंधेरी रात्रि में लाश को खोद कर बाहर निकाला। उसका सिर काट लिया और धर को पुनः वहीं गाड़ दिया। तेली की इस खोपड़ी को लेकर मैं कामरूप चला गया। वहां पर लगातार तीन साल तक मां की आराधना की और तंत्र-विद्या सीखी। खोपड़ी को जाग्रत किया। जब खोपड़ी बोलने लगी, तब मैं वहां से गांव लौट आया और तबसे दीन-दुखियों का दुख दूर करने में लगा हूं। इस कोठी की ठकुराइन ने याद किया। मैं आ गया।"

"महात्मा जी, सुना है कि आप इस खोपड़ी से बातें किया करते हैं। क्या अभी बात हो सकेगी। मेरे मन में आप की विद्या को जानने की उत्सुकता बढ़ रही है।" सुरेन्द्र सिंह ने महात्मा जी का विश्वास जीतने का पुनः प्रयास किया। परन्तु पुजारी था बहुत होशियार। वह आदमी की मानसिकता को शीघ्र भांप लेता था। वह समझ गया कि आगन्तुक उसकी परीक्षा लेना चाहता है। उसने उससे पीछा छुड़ाने के उद्देश्य से कहा, "बुद्धिमान मूर्ख, "तू चला जा, अन्यथा अनर्थ हो जायगा। फिर मैं भी कुछ नहीं कर सकूंगा। देवी मां की शक्ति की परीक्षा लेना चाहता है। अरे शठ! मैं तुम्हारे मन की बात समझ सकता हूं।

सुरेन्द्र सिंह को एक बार अन्दर से जबर्दस्त धक्का-सा लगा। फिर स्वयं को संभालते हुए सोचा कि पुजारी की विद्या के बारे में जानकारी तो लेना ही है। नुकसान होगा तो हो। एक बेटा है। होगा वही जो होना है। पत्नी तो वैसे भी बीमार रहती है। उन्होंने हाथ जोड़कर विनय की, "नहीं महात्माजी मेरी उत्सुकता में शंका कहां से आयेगी मैंने कहा न कि मैं आप से दीक्षा लेना चाहता हूं। मैं तो कब से गुरु की तलाश में हूं। पहली बार आप जैसा ज्ञानी मिला है। महात्मा जी क्या मैं इस खोपड़ी का दर्शन कर सकता हूं। इसका स्पर्श कर सकता हूं?"

"नहीं भक्त! यह सम्भव नहीं है। अमावस्या, पूर्णिमा और एकादशी को आना तो खोपड़ी से बात करा दूंगा। तुम अभी इस खोपड़ी का स्पर्श नहीं कर सकते। इसके लिए कठोर तपस्या करनी होती है।" पुजारी ने सुरेन्द्र सिंह को टालने का बहाना ढूंढ़ा।

सुरेन्द्र सिंह पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे बोले, "महात्माजी, मुझे खोपड़ी का दर्शन करने दीजिए। आगत अनिष्ट को रोकने के लिए तो आप हैं ही। महात्मा लोग ही तो ईश्वर के प्रतिरूप होते हैं। फिर खोपड़ी तो आप के वश में है।" पुजारी खोपड़ी को लाल वस्त्र में लपेटकर झोले में रखना चाह रहा था। सुरेन्द्र के मन की शंका बलवती हो उठी और उन्होंने पुजारी के हाथ से खोपड़ी झपटकर ले ली। फिर उसे आंखों के निकट लाकर उसका गंभीर निरीक्षण किया। दा काली-काली आंखें, नाक, मुंह और चौड़ा माथा परन्तु वजन कुछ ज्यादा। सुरेन्द्र को लगा कि भीतर कुछ भरा हुआ है। पुजारी ने बार-बार खोपड़ी वापस करने और आसन्न आपदा की बात दुहरायी। परन्तु सुरेन्द्र न तो घबड़ाया और न ही उस पर कोई विशेष असर पड़ा। निकट परीक्षण से स्पष्ट हो गया कि वह आदमी की खोपड़ी नहीं है। सुरेन्द्र ने कहा, "महात्मा जी, अब मैं इस जादुई खोपड़ी के भीतरी भाग को देखना चाहता हूं। इतना कहकर उन्होंने खोपड़ी को एक पत्थर पर रखा और वहीं पर पड़ी कुदाल से उसको खंडित कर दिया। खोपड़ी टुकड़ों में टूट हो गई। अन्दर का गूद्दा चारों ओर छितरा गया।

इसी बीच सुरेन्द्र सिंह की मां और पत्नी भी पूजा-स्थली पर आ पहुंची। उन्होंने साश्चर्य देखा कि पुजारी पण्डित सीताराम हतप्रभ-से डरावनी मुद्रा में खड़े हैं। खोपड़ी के टुकड़े और गुद्दे इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। सुरेन्द्र सिंह गुस्से में लाल पण्डित पर गालियों की बौछार कर रहे हैं। उनकी मां ने बेटे को डांटते हुए कहा, "सुरेन्द्र तुमने यह क्या किया। पण्डित जी ने बड़ी निष्ठा से पूजा शुरू की थी। तुमने सब किये-कराये पर पानी फेर दिया। अब लगता है कि बहुत बड़ा अनर्थ आने वाला है।" सुरेन्द्र चुप। उनकी पत्नी ने कहा, "मैंने आपको मना किया था कि मंदिर के पास मत जाइयेगा। मैं जानती थी कि आप इन सब बातों में विश्वास नहीं करते। पर अब क्या होगा।"

सुरेन्द्र ने अपनी मां और पत्नी को शांत करते हुए कहा, "मां! यह पूजा नहीं, ढोंग है। महात्माजी के बारे में मैं पूरी जानकारी रखता हूं। इन्होंने बहुतों को ठगा है। महात्मा जी अब बोलिए कि यह खोपड़ी है या और कुछ। अगर अब भी बेवकूफ बनाने का प्रयास किया तो मैं आपका सिर फोड़ दूंगा।"

पण्डित जी ने क्षमा मांगते हुए कहा, "मां जी आप मुझे क्षमा कर दें। यह आदमी की खोपड़ी नहीं है। खोपड़ी से बात करना मेरे प्रपंच की उपज थी, आप लोगों को विश्वास में लेने के लिए। आप स्वयं देख लीजिए यह पका हुआ बेल है।

यह सुनते ही बड़ी ठकुराइन का ठाकुरत्व जग आया। वे गुस्से से कांपने लगी। उन्होंने डांटते हुए कहा, "पण्डित तूने केवल मुझे और मेरे परिवार को धोखा नहीं दिया है तूने देवी-देवताओं के प्रति आदमी की पवित्र आस्था को विखंडित किया है। मेरे बेटे ने तुम्हारे साथ जो व्यवहार किया, वह बहुत कम है। इच्छा तो होती है कि तुझे पुलिस के हवाले कर दूं परन्तु तेरे बीबी-बच्चों का ख्याल आता है। जा, अविलंब चला जा यहां से।

संपर्कः 25, बेली रोड, पटना-1

नागरी लिपि हमारी राष्ट्रीय लिपि है।

❑ शकुन सिन्हा

> दिल्ली के राजेन्द्र नगर स्थित एक सल्वान पब्लिक स्कूल के वर्ग IX की छात्रा शकुन सिन्हा का यह आलेख दिल्ली में अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित लेख प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। शकुन को हार्दिक साधुवाद।
>
> —प्रधान सम्पादक

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना "राष्ट्र ध्वज',अपना "राष्ट्र गान" तथा अपनी "राष्ट्र भाषा" होती है। और प्रत्येक भाषा की लिखित अभिव्यक्ति के लिए अपनी एक लिपि होती है। भारतीय संविधान-भाग 17 अनुच्छेद 343 (1) के अन्तर्गत हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी की सभी प्रकार की अभिव्यक्तियों को लिखित रूप देने के लिए एक लिपि दी गई, वह है- "देवनागरी लिपि" । अतः राष्ट्रभाषा "हिन्दी" के साथ-साथ "देवनागरी लिपि को भी राष्ट्र लिपि की महत्ता प्राप्त हुई। इस संदर्भ में पंडित रामचरित उपाध्याय जी की स्वतंत्रता से पूर्व अभिव्यक्त निम्न पंक्तियों को पुनः स्मरण किए बिना नहीं रहा जा सकता है।

**"तब तक न जाती दासता इस देश से दुखः आमरी।
जब तक नहीं सम्पूर्ण भारत सीख लेता नागरी॥"**

भाषा और लिपि की इसी पृष्ठ भूमि के साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की शुरूआत हुई। "हिन्दी" की स्थिति अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अधिक व्यापक, सरल व सुगम और मजबूत होने के कारण इसे "राष्ट्रभाषा" और देवनागरी लिपि" (नागरी लिपि) को "राष्ट्र लिपि" का गौरव प्राप्त हुआ। इस संबंध में इसे लोकमान्य गंगाधर तिलक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और महान राष्ट्रवादी सुभाष चन्द्र बोस आदि जैसे महान नेताओं का आर्शीवाद व मान्यता प्राप्त है। साथ ही "देवनागरी लिपि" "संस्कृत" की लिपि होने के कारण भारत के प्रत्येक राज्य में इसके जाननेवाले लोग अवश्य हैं। अतः यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि यह "हिन्दी" भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या के तीन चौथाई से भी अधिक लोगों की मातृभाषा है जिसकी लिपि होने की गरिमा "देवनागरी" को ही है। सम्पूर्ण विश्व की भाषाओं में चीनी और अंग्रेजी बोलने के पश्चात हिन्दी बोलने व लिखने वालों की संख्या है जिसकी लिपि "देवनागरी" है। इससे भी इस लिपि की व्यापकता एवं सार्थकता के मानदण्ड को आंका जा सकता है। "नागरी लिपि" विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है।

उद्भव और विकास

ज्ञातव्य है कि "ब्राह्मी" समस्त भारतीय लिपियों की जननी है। यह भारत की प्राचीन लिपि है। सभी भारतीय लिपियों की तरह यह बायें से दायें लिखी जाने वाली लिपि है। आमतौर पर लिपियों के रूप में विकृति आने व होने को लिपि का विकास कहा जाता है। सन् 350 ई० तक भारत में इसी लिपि का प्रचार था। अशोक के शिला लेखों में इस लिपि का प्रयोग मिलता है। सन् 350 ई० के बाद ब्राह्मी लिपि की दो शैलियां हो गई, एक को "उत्तरी शैली" और दूसरे को "दक्षिणी शैली" कहते हैं। उत्तरी शैली का विकास गुप्त काल में पर्याप्त रूप से हुआ। इस लिपि में तत्कालीन शिला लेख व अन्य लेख मिलते हैं। इस काल तक आते-आते ब्राह्मी अक्षरों की आकृतियां "नागरी अक्षरों" से मिलने लगी थी। इसका कल्पित नाम "गुप्त" दिया गया था। इस लिपि का प्रचार सन् 500 ई० से 600 ई० तक हो पाया। आगे चलकर उस लिपि में और विकास हुआ था कुटिलाक्षरों का प्रयोग होने लगा, अर्थात अक्षरों की आकृति कुटिल होने लगी। अतः इस लिपि का कल्पित नाम "कुटिल लिपि" दिया गया। इसका प्रचार सन् 900 ई० के आस-पास तक पाया जाता है। अनेक लोगों का मत है कि कुटिल लिपि से बंगला आदि पूर्वी लिपियों का विकास हुआ। परन्तु कुछ लोगों का मानना है कि इससे "शारदा", "नागरी" आदि उत्तरी भारत को लिपियों का विकास हुआ। बहरहाल, प्राचीन नागरी की पूर्वी शैली से तमिल, तेलुगु, कन्नड़ आदि लिपियों का विकास हुआ। कुछ लोगों का मत है कि तेलुगु और कन्नड़ का विकास ब्राह्मी की उत्तरी शैली से और ग्रंथ लिपि अर्थात तमिल का विकास दक्षिणी लिपि से हुआ।

इस विकास क्रम पर यदि और विचार किया जाए तो कहा जा सकता है कि प्राचीन ब्राह्मी लिपि के क्रमिक विकास से "नागरी लिपि" का विकास हुआ है। चूंकि देवभाषा संस्कृत को लिखने में इसी लिपि का प्रयोग होता है, अतः यह "देवनागरी" कहा जाने लगा। वैसे तो "नागरी लिपि" के नामकरण के कई मत हैं। इस संबंध में कुछ लोगों का कहना है कि यह लिपि नागर ब्राह्मण में प्रचलित थी। अतः उन्हीं के नाम पर इसे "नागरी" कहा गया है। कुछ लोग "नागरी" शब्द का संबंध "नगर" से जोड़ते हैं। उनका मानना है कि नगरों अर्थात सभ्य तथा सम्भ्रांत लोगों में इसका प्रचलन होने के कारण इसे "नागरी" कहा गया है। बौद्धों के प्रसिद्ध ग्रंथ "ललित विस्तार" में 64 लिपियों का उल्लेख है जिनमें एक "नागरी लिपि" भी है। विद्वान तथा साहित्यकार लोग इसी को "नागरी लिपि" का आधार मानते हैं। किन्तु डॉ० बार्नेट और श्री श्यामशास्त्री ने उक्त तथ्यों का खंडन किया है। उनका अनुमान था कि देवताओं की मूर्तियों के निर्माण से पूर्व उनकी उपासना सांकेतिक चिन्हों से की जाती थी अर्थात कई त्रिकोणीय चक्रों आदि के बने यंत्रों के मध्य लिखने में जिन संकेतों व चिन्हों अर्थात् अक्षरों का प्रयोग होता था उन अक्षरों का नाम "देवनागरी" पड़ा। चाहे जिस प्रकार भी देवनागरी लिपि का विकास हुआ हो इस लिपि में संस्कृत तो लिखी ही जाती थी, गुजराती (सामान्य अन्तर से), राजस्थानी तथा मराठी व अन्य स्थानीय बोलियों को लिखने के लिए भी इस लिपि का प्रयोग होता था। वास्तव में "नागरी" (देवनागरी) हिन्दी को विभिन्न साहित्यिक, बोलियों व भाषाओं की लिपि है। भारतीय संविधान में इसे भारत की राष्ट्र लिपि और पांच राज्यों उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, हरियाणा व राजस्थान की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस लिपि में लिखे हुए सबसे प्राचीन लेख सातवीं आठवीं शताब्दी के उपलब्ध हैं। ग्यारवीं शताब्दी तक इस लिपि का पूर्व विकास हो गया था।

नागरी लिपि की अनिवार्यता क्यों समझी गई?

स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ से पूर्व ही भारत में एक सम्पर्क भाषा व एक लिपि का अनुभव किया गया। तत्कालीन बंगाल के शारदाचरण मित्र ने "लिपि विस्तार परिषद्" नामक एक संस्था की स्थापना की और समस्त भारतीय भाषाओं को एक लिपि के सूत्र में बांधने का सुझाव प्रस्तुत किया-वह लिपि थी-"देवनागरी लिपि"। निश्चय ही यह सुझाव राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रभाषा के प्रसार, विभिन्न भाषा-भाषियों को एक दूसरे के निकट लाने की दृष्टि से किया गया था।

सन् 1935 में ही सुप्रसिद्ध भाषाविद् सुनीति कुमार चटर्जी ने मुद्रण तथा टंकण की सुविधा तथा ध्वनियों के ठीक विश्लेषण को ध्यान में रखकर सुझाव दिया कि सभी भारतीय भाषाओं की लिखित अभिव्यक्ति के लिए "रोमन लिपि" अपना ली जाए। आज भी अनेक अंग्रेजी भाषा के समर्थक "अंग्रजी" को "राजभाषा" बनाए रखने तथा रोमन लिपि को प्रयोग में लाने की बात प्रस्तुत करते हैं। आज भी ब्रिटिश साम्राज्य के समकालीन दबदबा कायम रखने में सक्रिय हैं और वे चाहते हैं कि रोमन लिपि का वर्चस्व सदा बना रहे। आज जो भी स्थिति बन गई है चिन्तनीय है। देवनागरी लिपि के होते हुए क्या हम एक विदेशी लिपि-"रोमन लिपि" को राष्ट्रीय लिपि स्वीकार कर पाएंगे? कदापि नहीं। किन्तु अब प्रश्न उठता है कि वह कौन सी लिपि है जो अपनी राष्ट्रभाषा की लिपि के रूप में स्वीकार की जा सकती है? इस पर विचार करने से पहले हम उक्त दोनों लिपियों की विशेषताओं पर एक नजर डालना चाहेंगे।

रोमन लिपि को राष्ट्र लिपि स्वीकार कर लेन पर सर्वप्रथम हमारे देश को सांस्कृतिक परम्परा से उपजे अनेक शब्दों का उच्चारण व उनका रूप विकृत हो जाएगा। हमारी भाषा परम्परा तो वह है जिसमें वैदिक संस्कृत के पाठ की विधि निर्धारित है, उच्चारण में स्वराघात के पूर्व उच्चारण की

व्यवस्था है।

नागरी लिपि में ध्वनियों को तद्रूप लिखने की क्षमता है। किसी भी वैज्ञानिक लिपि की सबसे बड़ी विशेषता है शुद्ध लिखने की। हम किसी शब्द का जिस प्रकार उच्चारण करते हैं, देवनागरी लिपि में हम उसे वैसे ही लिख सकते हैं, किन्तु रोमन लिपि अर्थात अंग्रेजी में वैसा सम्भव नहीं है। जब अंग्रेज भारत आए और यहां अपने साम्राज्य की स्थापना की तो उन्होंने हमारी बोलियों का अपने उच्चारण तथा अपनी लिपि विशेषताओं से संयुक्त करके हमारे नामों तथा भारत के विभिन्न शहरों व स्थानों के नाम के रूप को विकृत कर दिया। उदाहरण स्वरूप हम अपनी राजधानी के नाम को ही लें जो कभी "दिल्ली" से "डिल्ली" और बाद में "डेल्ही" बन गया। कोलकत्ता से-कलकत्ता-कोलकट्टा और मुम्बई से बम्बई और फिर बॉम्बे बन गया। साथ ही शुक्ल, श्रीवास्तव और महेन्द्र आदि शब्द क्रमशः शुक्ला, श्रीवास्तवा और महेन्द्रा बन गए। इस प्रकार रोमन लिपि के इस कमाल ने हमारे अनेक पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में परिवर्तित कर दिया। इसी प्रकार ऋषि, ऋग्वेद को रोमन लिपि में क्रमशः रिशि, रिग्वेद लिखना होगा। जिस वर्ण-माला में ऋ, ष, ण, ह आदि के साथ हो महाप्राण वर्ण नहीं है तो वह लिपि भला भारतीय भाषाओं के बोझ को कैसे वहन कर सकती है। यह सार्थकता तो वे इन भाषाओं की देवनागरी लिपि में ही है।

किसी भी लिपि की वैज्ञानिकता की प्रथम कसौटी है तद्रूप लेखन अर्थात् शुद्ध लेखन/दूसरी कसौटी है उस लिपि की लिखावट में ध्वनियों का ठीक-ठीक विश्लेषण। दूसरी कसौटी पर देवनागरी लिपि उतनी नहीं उतरती है जितनी की रोमन लिपि। परन्तु प्रथम कसौटी पर देवनागरी लिपि इतनी अधिक खरी उतरती है कि विश्व की कोई अन्य लिपि इसका मुकाबला नहीं कर पाती है। रोमन लिपि में केवल 26 अक्षर हैं जबकि देवनागरी में 45 वर्ण हैं जो कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग तथा अंतःस्थ में विभक्त हैं। इनके अतिरिक्त इस लिपि में **क्ष, त्र, ज्ञ** तीन संयुक्त अक्षर भी हैं। देशी-विदेशी भाषाओं के बढ़ते सम्पर्क के कारण स्वर में ऐ, औ(यथा: कॉलेज, डॉक्टर आदि और व्यंजन में ज, ड़, ढ़, फ, को शामिल कर लिया गया है। इससे देवनागरी में अभिव्यक्ति व लिप्यन्तरण की सीमा बढ़ गई है। अतः देवनागरी के ठीक-ठीक ज्ञान और उनकी ध्वनियों के उच्चारण के साधारण अभ्यास से किसी भी भाषा को बिल्कुल शुद्ध-शुद्ध पढ़ा-लिखा जा सकता है जबकि रोमन में लिये शब्दों के उच्चारण को अलग-अलग रहने की आवश्यकता होती है। फारसी, उर्दू की लिपियां इस दृष्टि से और भी दोषयुक्त हैं।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता के प्रसंग में **रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल** के प्रथम अध्यक्ष मिस्टर विलियम जॉन्स ने कहा था कि किसी भी शब्द को जितने कम अक्षरों में देवनागरी में लिखा जा सकता है उतने में रोमन में नहीं लिखा जा सकता है। उन्होंने उदाहरण में **थ्रू** के लिए रोमन में Through (7अक्षर) और **थॉट के लिए रोमन में** Thought (7अक्षर) लिखने से अच्छा देवनागरी में लिखना प्रस्तुत किया था। नागरी में किसी भी भाषा को सरलता से सही-सही लिप्यन्तरित किया जा सकता है।

नागरी लिपि की त्रुटियां और उनका समाधान

आज के मशीनी युग में टाइप राइटर, टेलीविजन, कम्प्यूटर तथा अन्य प्रकार के संचार यंत्रों का इस्तेमाल किया जा रहा है। भारत में इन मशीनों का आविर्भाव यूरोपीय तथा अमेरिकी देशों से हुआ। अतः यह स्पष्ट है कि इनके कुंजी पटल का निर्माण भी रोमन के 26 अक्षरों तथा शून्य से लेकर नौ तक के रोमन अंकों के अनुरूप हुआ हैं। अतः मात्राओं व संयुक्त अक्षरों के साथ 46 अक्षरों वाली नागरी लिपि के लिए उन कुंजी पटलों को व्यवहार में लाना कठिन ही नहीं, असंभव था। यह नागरी लिपि की सबसे बड़ी त्रुटि है। फिर भी भारतीय वैज्ञानिकों व साहित्यकारों के संयुक्त प्रयास से आज देवनागरी तथा अन्य भारतीय लिपियों के लिए इन कुंजी पटलों को उपयोग में लाना सम्भव हो सका परन्तु रोमन लिपि की तुलना में नागरी लिपि में कार्य करने में अधिक श्रम एवं समय लगता है। साथ ही शुद्धता में थोड़ी कमी रह जाती है। इस कमी पर भी शीघ्र ही विजय प्राप्त कर लिया जायेगा। इसी प्रकार नागरी लिपि में मुद्रण हेतु भी बाधाओं का सामना करना पड़ा। प्रारम्भ में सात सौ से अधिक अलग-अलग टाइपों का निर्माण करके छपाई का कार्य किया जाता था किन्तु आज कम्प्यूटर के आ जाने से ये समस्या भी सुलझ गई हैं।

वैसे तो नागरी लिपि में सुधार का प्रयास सावरकर बंधुओं द्वारा किया गया था। तत्पश्चात् हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन-1935 में महात्मा गांधी की अध्यक्षता और श्री काका कालेलकर के संयोजन में नागरी लिपि के सुधार हेतु एक समिति का गठन किया गया। समिति के सुझाव को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वार्धा ने प्रचार किया किन्तु हिन्दी भाषी राज्यों को यह मान्य नहीं हुआ और उन्होंने इसका विरोध किया। नागरी प्रचारिकी सभा काशी ने भी इसका विरोध किया किन्तु आगे चलकर उसने भी इसमें सुधार लाने हेतु सुझाव आमंत्रित किये। श्री श्रीनिवास ने देवनागरी की सुधरी वर्णमाला प्रस्तुत की जिसमें महाप्राण व्यंजनों के लिए उनके अल्पप्राण व्यंजन में ही चिन्ह लगा कर बनाने का सुझाव प्रस्तुत किया गया था। परन्तु यह सुधरी वर्णमाला किसी को स्वीकार नहीं हुई। इस सम्बन्ध में प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० गोरखनाथ ने व्यक्तिगत रूप से तथा आचार्य नरेन्द्र देव ने समिति के माध्यम से देवनागरी लिपि में सुधार लाने का सराहनीय प्रयास किया। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने भी देवनागरी लिपि के मानवीकरण की सिफारिश को और इस संबंध में **हिन्दी वर्तनी का मानवीकरण** नामक एक पुस्तक भी प्रकाशित किया गया जिसमें समिति के सुझावों का विस्तृत ब्योरा दिया गया है।

वैसे तो देवनागरी लिपि हिन्दी के लिए भारत की राष्ट्रीय लिपि के रूप में सुशोभित है ही, देवनागरी लिपि में मराठी, संस्कृत, नेपाली भी लिखी जाती है। इसकी समस्या सुलझाने में भारत सरकार की अनेक संस्थाएं व विभाग सतत् प्रयत्नशील हैं। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय हिन्दी के विकास व प्रचार-प्रसार कार्य में जुटा है तो वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग शब्दों के भंडार जुटाने का कार्य कर रहा है। इलैक्ट्रॉनिकी विभाग तथा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र लिपि की अन्य समस्याओं को हल करने में लगे हैं। आज अधिकांश समस्याओं का हल निकाल लिया गया है। यह लिपि अब इतनी समर्थ हो गई है कि सभी प्रकार के बोझ को उठा सकती हैं।

संपर्कः द्वारा विनोद कुमार
ई-50, एफ.एफ.सी०, झंडेवालान,
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55

लौह पुरुष पटेल की १२४वीं जयंती के अवसर पर शुभकामनाओं के साथ

नालन्दा मेडिकल्स

मखनियाँ कुआँ, पटना-800004

न्यू नालन्दा मेडिकल्स

खजांची रोड़, पटना-800004

डॉ० एस० तंकमणि अम्मा को द्विवागीश पुरस्कार

भारतीय अनुवाद परिषद्, नई दिल्ली के वर्ष 1996-97 के द्विवागीश पुरस्कार एवं सम्मान के लिए केरल विश्वविद्यालय की हिन्दी प्राध्यापिका तथा शोध निदेशिका **डॉ०एस० तंकमणि अम्मा** का चयन किया गया है। यह पुरस्कार उन अनुवाद सेवियों को प्रदान किया जाता है जिन्होंने वर्षों-वर्षों से अनुवाद क्षेत्र में साधना करते हुए अपनी एक पहचान बनाई है तथा अनुवाद संसार को समृद्ध करने में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाई है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत 5100 रुपये की राशि के साथ-साथ प्रशस्ति-पत्र तथा प्रतीक चिह्न नई दिल्ली में भारतीय अनुवाद परिषद् के तत्त्वावधान में आयोजित एक भव्य समारोह में भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा डॉ० तंकमणि अम्मा को प्रदान किये जाएंगे।

उल्लेख्य है कि केरल की सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखिका एवं अनुवादक डॉ० तंकमणि की अनेक मौलिक एवं अनुदित रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें **आधुनिक मलयालम खंडकाव्य, आधुनिक हिन्दी खंडकाव्य, संस्कृति के स्वर, मोहन राकेश**(मलयालम), **गोत्रयान**(अनुवाद), स्वयंवर(अनुवाद) आदि पुस्तकें प्रमुख हैं। इनकी सौ से अधिक मलयालम कविताओं के हिन्दी अनुवाद भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

उत्तर प्रदेश शासन पुरस्कार, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय पुरस्कार से पुरस्कृत होने के अलावे डॉ० तंकमणि **साहित्यश्री**, (उत्तर प्रदेश) **साहित्य वाणीश**(भारतीय साहित्य, दिल्ली) तथा **विद्यासागर**(विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर) आदि उपाधियों विभूषित हो चुकी हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मुखपत्र **केरल ज्योति** की **सह-सम्पादक**, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की कोषाध्यक्ष तथा इसकी शोध पत्रिका के संपादक-मंडल के सदस्य के पद पर रहकर आप निरन्तर हिन्दी की सेवा में रत हैं।

विचार दृष्टि पत्रिका-परिवार की ओर से डॉ० एस० तंकमणि अम्मा को हार्दिक बधाई।

खुशवंत सिंह को वर्ष 1998 का

ईमानदार व्यक्ति पुरस्कार

देश के जाने माने पत्रकार-लेखक श्री खुशवंत सिंह को उनकी सशक्त लेखनी और अपनी बेबाक पत्रकारिता में सच्चाई को उजागर करने में ईमानदारी और नैतिक साहस के लिए **सुलभ इन्टरनेशनल सामाजिक सेवा संस्थान** की ओर से वर्ष 1998 का **ईमानदार व्यक्ति** पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। इस पुरस्कार के अन्तर्गत विजेता को दस लाख रुपये की राशि के साथ स्वर्णजड़ित पटिट्का, सोने का एक मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार प्रति वर्ष सार्वजनिक और राष्ट्रीय जीवन में ईमानदारी और प्रतिबद्धता की मिशाल कायम करने वाले उत्कृष्ट व्यक्ति को दिया जाता है। सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा लेखनी के धनी श्री खुशवंत सिंह को **विचार दृष्टि** पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

गुंटर ग्रास को 1999 का नोबल साहित्य पुरस्कार

भूले-बिसरे इतिहास के चितेरे जर्मनी के महान उपन्यासकार **गुंटर ग्रास** को वर्ष 1999 का **नोबल साहित्य पुरस्कार** से सम्मानित किया जाएगा। इनका उपन्यास **हिटिन ड्रम** सर्वाधिक ख्याति प्राप्त तथा सर्वाधिक बिक्री वाला भी रहा। बाद में इस पर फिल्म बना जिसे **आस्कर पुरस्कार** भी मिला। **इस उपन्यास में ग्रास ने द्वितीय विश्व युद्ध से पहले और बाद के अपने बचपन का चित्रण किया है।**

ग्रास राजनीतिक विवादों से भी अछूते नहीं रहे। उनका सबसे नया उपन्यास **ईन वीट्स फैल्ड** उस समय प्रकाशित हुआ जब बर्लिन की दीवार ढहायी जा रही थी। ग्रास 1972 में हेनरिख बोएल के बाद नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले जर्मन हैं।

साहित्यांचल के स्थापना दिवस

समारोह पर साहित्यकार सम्मानित

पाटलिपुत्र की साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्था **साहित्यांचल** के उन्नीसवें स्थापना दिवस के अवसर पर विगत 28 अगस्त, 99 को डॉ० तेजनारायण कुशवाहा की अध्यक्षता में **सारस्वत** अलंकरण समारोह व **पावस फुहार काव्योत्सव** का एक सुरूचिपूर्ण आयोजन स्थानीय **पंचदीपभवन** में हुआ जिसमें श्री रघुनाथ प्र० विकल की सद्यः प्रकाशित पुस्तक **कवि बच्चन के आत्मीय पत्र श्री रघुनाथ प्र० विकल के नाम** का लोकार्पण डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव ने किया तथा श्री वैजनाथ यादव द्वारा संपादित पाक्षिक पत्रिका **नीलांचल** का विमोचन अध्यक्ष डॉ० तेजनारायण कुशवाहा द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जिन साहित्यकारों को विभिन्न मानद अलंकरणों से अलंकृत एवं सम्मानित किया गया उनमें डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, ललित कुमुद, डॉ० सतीशराज पुष्करणा, डॉ० शिवनारायण, डॉ० रामशोभित सिंह, विजय गुंजन, सुरेन्द्र प्र० सिंह, भगवती प्र० द्विवेदी, राजकुमार प्रेमी, डॉ० मोइनतविश, नृपेन्द्र नाथ गुप्त, डॉ० नरेश पाण्डेय चकोर, हरीन्द्र विद्यार्थी डॉ० अभिमन्यु प्र० मौर्य, आदित्य प्रकाश सिंह, वन्दना बीथिका, राकेश प्रियदर्शी तथा श्रीकांत व्यास का नाम प्रमुख है। आयोजन के दूसरे चरण में आयोजित पावस फुहार काव्योत्सव में उक्त कवियों के अलावे डॉ० मिथिलेश कुमारी मिश्र, प्रो० कैलाश स्वच्छन्द, श्रीमती सुभद्रा वीरेन्द्र, प्रो० दिनेश दिवाकर, ओमप्रकाश पाण्डेय, सुदामा मिश्र, पेकज प्रियम, हरिश्चन्द्र सौम्य, स्नेहलता पारूथी, बासुदेव मिश्र, अविनाश सुभ्रास्था, जनार्दन मिश्र जलज तथा बलभद्र कल्याण ने अपने काव्य-सुधारस का पान श्रोताओं को कराया।

आयोजन का संचालन जहां आनन्द किशोरशास्त्री ने किया वहीं राजकुमार प्रेमी ने आभार व्यक्त किया।

इलाहाबाद में प्रो० शरदनारायण खरे सम्मानित

हिन्दी की पचासवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में **हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग** द्वारा इलाहाबाद में आयोजित पांच-दिवसीय साहित्य समारोह के अवसर पर शासकीय कन्या महाविद्यालय मण्डला(म०प्र०) के प्रो० शरद नारायण खरे की हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए सरस्वती प्रतिमा एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। इनके अलावा और कई विद्वानों को भी समारोह में सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि कई सत्रों में पांच दिनों तक के इस आयोजन का उद्घाटन संविधान निर्मात्री समिति के सदस्य रहे श्री कुसुम कान्त जैन ने किया। समारोह में खास तौर से विभिन्न राज्यों में विगत 50 वर्षों में हुई हिन्दी की प्रगति पर विचार किया गया तथा काव्य-सध्याओं का भी आयोजन हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रधानमंत्री श्री श्रीधर शास्त्री द्वारा किया गया था।

-विचार संवाददाता इलाहाबाद से

-विन्देश्वर प्र० गुप्ता, पटना से

बेनीपुरीः 'सादा जीवन उच्च विचार' के पोषक

समाजवादी आन्दोलन के कर्णधार, निर्भीक पत्रकार तथा हिन्दी के अनूठे गद्यकार **रामवृक्ष बेनीपुरी** ने आजादी के ठीक बाद 1952 में पहला चुनाव लड़ा था जिसमें उन्होंने न केवल बैलगाड़ी और साइकिल से बल्कि गांवों में पैदल घूम-घूमकर प्रचार किया था और यह सब कोई राजनीतिक स्टंट नहीं था।

साधनहीन बेनीपुरी जी चाहते थे कि इस तरह बचे धन से जनता की सेवा की जाए। बावजूद तमाम सर्तकता के उनके इस चुनाव में कुल पांच हजार रुपये खर्च हो गए थे जिसे उन्होंने अपने शुभचिन्तकों, मित्रों और बैंक से कर्ज लेकर जुटाया था और जिसको चुकाने में उन्हें कई वर्ष लग गए थे। पिछले माह नई दिल्ली में **बेनीपुरी जन्मशती राष्ट्रीय समिति** तथा हिन्दी अकादमी की ओर से बेनीपुरी की 30 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर प्रखर समाजवादी **सुरेन्द्र मोहन** ने उक्त विचार व्यक्त किए। बेनीपुरी की स्मृति में भारत सरकार द्वारा 14 सितम्बर को डाक टिकट भी जारी किया गया।

बेनीपुरी जी के व्यक्तित्व पर चर्चा करते हुए सुरेन्द्र मोहन ने कहा कि वे प्रारम्भ से ही नेहरू जी के आलोचक रहे क्योंकि कांग्रेस में व्यक्त भ्रष्टाचार और गड़बड़ियों को वह बर्दास्त नहीं कर पाते थे। जीवन पर्यन्त उन्होंने ने **सादा जीवन उच्च विचार** सिद्धान्त को अपनाया। क्या आज की भारतीय राजनीति में बेनीपुरी जी जैसी सरलता और नैतिकता की कल्पना नेताओं से ही जा सकती है?

लघुकथा संग्रह 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी' का लोकार्पण

साहित्यिक संस्था भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्त्वावधान में पटना कालेज के सभागार में, लघुकथाकार श्री कृष्ण कुमार पाठक के सद्यः प्रकाशित लघुकथा संग्रह **टुकड़ा-टुकड़ा आदमी** का लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि डा० भगवती शरण मिश्र ने किया।

श्री मिश्र ने कहा कि शब्दों की सम्पदा ही किसी रचनाकार की पूंजी है। जैसी श्रद्धा ब्रह्म के प्रति होती है, वैसी ही श्रद्धा शब्द के प्रति हो। तभी हम सार्थक कवि-लेखक बन सकते हैं। इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता है कि लेखक ने मौलिक अभिव्यक्ति एवं सामाजिक, परिवारिक विसंगतियों पर तीखा प्रहार किया है।

समारोह की अध्यक्षता प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री ने की। समारोह के वरिष्ठ अतिथि थे, शिक्षा विभाग के उपनिदेशक प्रो० ब्रजकिशोर पांडेय तथा समारोह का संचालन किया लघुकथा के चर्चित लेखक भगवती प्रसाद द्विवेदी ने।

उपन्यास 'भले आदमी की तलाश' का लोकार्पण

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द की जयंती के अवसर पर कार्यालय, महाप्रबंधक-दूरसंचार, पटना की साहित्यिक संस्था **अस्मिता** के तत्त्वावधान में आयोजित हिन्दी के यशस्वी कथाकार-योगानंद हीरा के सद्यः प्रकाशित उपन्यास **भले आदमी की तलाश**-का लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि हिन्दी प्रगति समिति के अध्यक्ष डा० रामवचन राय ने किया।

डा० राय ने कहा कि भले आदमी की तलाश निरंतर खोजनेवाली तलाश है जो वैयक्तिता की चारदीवारी को तोड़कर सामाजिकता की परिधि में पहुंच जाता है। इस उपन्यास में जिस यथार्थ को उभारने के ईमानदार कोशिश की गई है, वह उपन्यासकार की सार्थक तलाश है, और यही इस उपन्यास की विशेषता है।

इस अवसर पर लेखक कवि अरुण कुमार ने आलेख पाठ किया। अन्य वक्ताओं में कवि सत्यनारायण, महाप्रबधंक, दूरसंचार चिन्मय, डा० रामधारी सिंह उवाकर, राम निहाल गुंजन, कृष्णानन्द कृष्ण, सतीशराज पुष्करणा, पांडेय कपिल, सिद्धेश्वर, मुकेश प्रत्यूष आदि थे। समारोह के अंत में डा० जगन्नाथ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कवि राम उपदेश सिंह 'विदेह' का एकल काव्य-पाठ

नोबेल पुरस्कार विजेता विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के कविता-संग्रह **गीतांजलि** का हिन्दी अनुवाद पढ़ने के बावजूद उनके भाव समझ में नहीं आये थे, किन्तु कवि **राम उपदेश सिंह विदेह** ने **गीताजंलि** से कालान्तरित अपने हिन्दी काव्य में जब अपनी वाणी में उन्हीं भावों को रखा तो समझ में आने लगा। गीतांजलि में रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपने कोमल ह्रदय के तारों द्वारा नैसर्गिक प्रेम, अध्यात्म, जीवन-मृत्यु, देश, राष्ट्रीयता आदि सारी बातों को शब्दों में गढ़ा है। उन भावों को अक्षुण्ण एवं अपरिवर्तित रखते हुए **विदेह** जी ने काफी खूबसूरती पूर्वक अपने ह्रदयग्राही, सशक्त एवं मार्मिक शब्दों के माध्यम से काव्यान्तरित हिन्दी काव्य को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

इस आशय से सम्बन्धित विचार लगभग सभी वक्ताओं ने विगत 27 अगस्त को स्थानीय सोनभवन के तृतीय मंजिल स्थित सभागार में राजेन्द्र साहित्य परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित यशस्वी कवि रामउपदेश सिंह **विदेह** द्वारा **गीतांजलि** से काव्यन्तरित हिन्दी काव्य का एकल पाठ के पश्चात् अपने उद्गार व्यक्त किये।

एकल काव्य पाठ समारोह की अध्यक्षता निर्वाचन आयुक्त एवं साहित्यकार जियालाल आर्य ने की तथा समारोह का संचालन परिषद के बलभद्र कल्याण ने किया। कवि नृपेन्द्रनाथ गुप्त ने स्वागत भाषण किया।

वक्ताओं में कृष्ण कुमार श्रीवास्तव, विजय अमरेश, पत्रकार विकास कुमार झा, प्रो० कैलाश स्वच्छन्द, डा० रंगी प्रसाद सिंह, अभियंताप्रताप सिंह, सुधांसु रंजन, जितेन्द्र सिंह आदि प्रमुख थे। डा० रामशोभित प्रसाद सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

झारखण्ड विभूतियों को झारखण्ड रत्न सम्मान

रांची के पुरुलिया रोड स्थित **जेवियर समाज सेवा संस्थान** में **लोक सेवा समिति** की ओर से आयोजित समारोह में झारखण्ड क्षेत्र की ग्यारह विभूतियों को समाज सेवा, कला, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य एवं क्रीड़ा के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए वर्ष 1999 का **झारखण्ड रत्न सम्मान** से अलंकृत कर सम्मानित किया गया।

समारोह का उद्घाटन परमवीर अलवर्ट एक्का की विधवा श्रीमती बी० एक्का ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। लोक सेवा समिति के संस्थापक अध्यक्ष मो० नौशाद एवं उपाध्यक्ष श्री अजय कुमार ने इस अवसर पर शहीदों के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। समारोह के प्रारम्भ में सम्मान निर्णायक मंडली के अध्यक्ष डा० अब्दुल कम्युम अब्दाली ने लोक सेवा समिति के उद्येश्यों पर प्रकाश डालते हुए झारखण्ड क्षेत्र के गरीब एवं असहाय लोगों के बीच किए गए कार्यकलापों की चर्चा की।

समारोह में जिन ग्यारह विभूतियों को सम्मानित किया गया, वे हैं- स्व० करतार सिंह(मरणोपरान्त), होमियोपैथी चिकित्सक डा० वजिउल्लाह, मानवाधिकार कार्यकर्त्ता श्री रंजीत कुमार राय, साहित्य के क्षेत्र में डा० बी०पी०केशरी तथा डॉ० श्यामसुन्दर अग्रवाल, संस्कृतिकर्मी डॉ० अनिल कुमार ठाकुर, लोकनृत्य एवं लोकगीत में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री पुस्कर महतो, शिक्षा के क्षेत्र में श्री तेजपाल मोची तथा श्रीमती शमीमा खातून अंसारी, खिलाड़ी श्रीमती सावित्री पूर्ति तथा कलाकार कुलदीप नारायण मंजरवे।

-डॉ० एच० एन० सिंह, रांची से

डालटनगंज के जगदीश्वर जी को सम्मान

सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्व० राधाकृष्ण की स्मृति में प्रतिवर्ष **'रांची एक्सप्रेस'** द्वारा दिया जानेवाला 19वां पुरस्कार इस वर्ष हिन्दी में विशिष्ट सेवा के लिए डालटनगंज(बिहार) के प्रो० जगदीश्वर प्रसाद को प्रदान किया जाएगा। इस पुरस्कार के तहत ग्यारह हजार एक सौ रुपये एवं एक प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया जाता है। प्रो० प्रसाद जी० एल० ए० कॉलेज डालटनगंज के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं विश्वविद्यालय प्राध्यापक के पद पर अपनी सेवा दे चुके हैं।

पत्रिका-परिवार की ओर से प्रो० प्रसाद को हार्दिक बधाई।

LOHIA NAGAR MT. CARMEL HIGH SCHOOL

A/14 KANKARBAGH
PATNA - 20

AFFILIATED TO I.C.S.E.

1. Nursery to 10 + 2
2. 100% result oriented
3. Hostel facilities available.

KNOWLEDGE SERVICE LMC LOVE

Ph : 664076
352073

पाठक इंस्टीच्यूट

Govt. Regd. 301 / 84-85 Ph : 353958

(भूतपूर्व वायु-सेना इलेक्ट्रॉनिक्स इंजिनीयर द्वारा संचालित संस्थान)

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त I.T.I. के विभिन्न ट्रेड्स तथा SECT भोपाल द्वारा संचालित National Open School (Govt. of India) का Computer Radiao, Tape, T.V., VCR, House Wiring, Home Appliances, ट्रांसफॉर्मर, पंखा एवं मोटर वाइडिंग के वोकेशनल (Vocational) कोर्स का प्रशिक्षण केन्द्र।

25% Discount for Girls & Handicapped

पुरानी स्टेट बैंक बिल्डिंग, कंकड़बाग मेन रोड, पटना-800020

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की १२४वीं जयंती के अवसर पर शुभकामनाओं के साथ :-

बहुला नगर सहकारी गृह निर्माण समिति लि०

पोस्टलपार्क, पटना-1

कार्य स्थल : रामकृष्ण नगर, न्यू बाईपास, पटना-20

ई० शशि कुमार विकल

दूरभाष : 0612-345760 (आ०)

स्वतन्त्रता के पश्चात् राष्ट्र ने भाषाई, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना का ममत्व खोया ही नहीं विरूपित भी किया है। इसके और कारण चाहे जो हों राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के महत्व को हमने नकारा है, नजरअंदाज किया है। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के आपसी सौहार्द की अनदेखी कर उसके महत्व को अपने चिन्तन से दूर रखा है।

इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने से पूर्व सब कुछ हमारी आशाओं के अनुरूप हमारी ही भाषाओं में ही हो, इसका हमें संकल्प करना है। वह भी इसी समय और आज ही से। कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर इस पत्रिका में "हिन्दीत्तर भाषा सीखें" शीर्षक से हम एक नया स्तम्भ प्रारम्भ कर रहे हैं। क्योंकि हमने यह महसूस किया है कि साधु-संतों, पीरों और फकीरों, ऋषियों-महात्माओं ने भारतीय भाषाओं को एक दूसरे के समीप लाने में जहां सेतु का काम किया, वहीं गंगा-जमुनी संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की किन्तु आज वह धारा सुखती नजर आ रही है। धर्मनिरपेक्षता और धर्म समभाव की दृष्टि से दक्षिण साहित्य अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है क्योंकि आज देश में बढ़ती हुई अलगाववादी प्रवृतियों और साम्प्रदायिक तनावपूर्ण वातावरण में निःसन्देह दक्षिणी साहित्य साम्प्रदायिक सद्भावना की प्रेरणा प्रदान करता है। इसलिए उत्तर भारत के लोगों को दक्षिणी साहित्य एवं भाषा का ज्ञान आवश्यक दिखता है। कुछ इसी ख्याल से दक्षिण भारतीय भाषाओं में से सर्वप्रथम मलयालम तथा कोंकणी भाषा से हम प्रारम्भ कर रहे हैं। तो आइए सबसे पहले अपने शरीर के विभिन्न अंगों के नामों को मलयालम में सीखें जो केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका से साभार प्राप्त हुआ है-अनुवादक हैं टी० एस० पोन्नम्मा। ठीक इसी प्रकार अटल जी की कविता "उनकी याद करें" का कोंकणी में अनुवाद किया है प्रभाकर शेजवाडकर ने।

–प्रधान संपादक

उनकी याद करें

अटल बिहारी वाजपेयी

हिन्दी

जो बरसों तक लड़े जेल में, उनकी याद करें।
जो फांसी पर चढ़े, खेल में, उनकी याद करें।
याद करो कालापानी को,
अंग्रेजों की मनमानी को,
कोल्हू में जुटे तेल पेरते,
सावरकर से बलिदानी को।
याद करें बहरे शासन को,
बम से थर्राते आसन को,
भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु
के आत्मोत्सर्ग पावन को।
अन्यायी से लड़े, दया की मत फरियाद करें।
उनकी याद करें।
याद करें हम पुर्तगाल को,
जुल्म सितम के तीस साल को।
फौजी बूटों तले क्रांति की,
सुलगी चिनगारी विशाल को।
याद करें सालाजारों को,
जारों के अत्याचारों को,
साईबेरिया के निर्वासित,
शिविरों के हाहाकारों को।
स्वतंत्रता के नए समर का शंखनाद करें।
उनकी याद करें।
बलिदानों की बेला आई,
लोकतंत्र दे रहा दुहाई,
स्वाभिमान से वही जियेगा,
जिससे कीमत गई चुकाई।

संपर्क : प्रधानमंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

तांची याद करात

अनुवादक: प्रभाकर शेजवाडकर

कोंकनी

वर्सानुवर्सा बंदखणीत उरले, तांची याद करात।
जे फांसार गेले, तांची याद करात।
याद करात काळया पाणयाची,
इंग्रजांच्या अत्याचारांक,
घाणो घुवोवन तेल काडपी,
सावरकरांची याद करात।
त्या केप्या शासनाची याद करात,
बांगाच्या स्फोटान हालपी आसन,
भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरुचे
बलिदान पवित्र जालें।
अन्याया आड लडांत, दयेजी भीक्त मांगूनाकात,
तांची याद करात।
पुर्तुगेजांची याद करात,
अन्याय अत्याचारी तीस वर्सा
सैन्यांच्या बुटाखाला दाल्लि क्रांतीची कीट,
व्हडली मशाल जाली।
याद करात तो सालाझार,
आनीक ताच्या अत्याचाराक,
सायबेरियाच्या निर्वासित,
शिबिरांतल्या हाहाकारांक।
स्वातंत्र्रायेच्या नव्या नादाचो गजर करात,
तांची याद करात।
बलिदानाचो वेळ आयलो,
लोकतंत्राची ही पुण्याई
अभिमानान तोच जियेतालो,
जो तेच खातीर कश्टत रावलो।

संपर्कः "साहित्य सेतु सागर"
कला वैभव, एम्-116, बीसवीं लेन,
परवरी-बार्देश-गोवा-403521

हिन्दी	मलयालम
नाखून	नखं
मुट्ठी	मुष्टि
छाती	नेंचु
छाती	मुला
गोद	मटि
हृदय	हृदयं
आत्मा	आत्भाव
फेफड़े	श्रासकोशं
जिगर	करलू
पसली	वारियेल्लु
पेट	वया
नाभी	पोकिल्लू
पीठ	पुरम
रीढ़	नटेट्ल्लु
कमर	अरक्केटट्
चूतड़	पृष्ठं, चन्ति
मूत्राशय	मूत्राशयं
आंत	कुटल्लु
एंड़ि	उप्पूटिट्
पेशाब	मूत्रं
अंडाशय	गर्भाषात्र
गर्भाशय	गर्भाशय
मूत्रनली	मूत्रनालं
गुदा	मलद्वार
पसीना	वियर्प्पु
गला	कषुत्तु
कन्धा	तोलु
योनि	योनि
वृषण	वृषणं
गुर्दा	वृक्का
टांग	कालू
कोहन्नी	कैमुटट्
घुटना	कालमुटट्
पांव	पांद
नस	सिरा
भूख	विशप्पु
ललाट, माथा	नेटिट्

संपर्कः श्याम निवास
कोषंचेरी, केरल

Sahiba Beauty Parlour & Training Centre
Gupta Market, Near Anishabad Post Office Patna-2
Res.- New Patna Colony, Near Health Institute
Telephone : 0612-253950 (R)

कालिक चेतना के समग्र दूतः बाबा नागार्जुन

❑ संजय सिन्हा

सन् 1911 के जून महीने में दरभंगा के तरौनी गांव में जन्मे नागार्जुन ने मामूली जीवन बिताते हुए भी साहित्य एवं काव्य जगत के शीर्ष बिंदु को छुआ। इत्तिफाक कहिए कि उनसे मेरी मुलाकात नहीं हो सकी, किंतु उनकी रचनाओं को पढ़कर, महसूस कर सहज ही उनके रचनात्मक फलक, रचनाशीलता तथा काव्यात्मक वैशिष्टता को समझा जा सकता है। कविताएं लिखने के साथ-साथ वैयक्तिक जीवन जीने का भी उनका एक खास अंदाज था और यही अंदाज, यही अदायें उन्हें दूसरों से अलग-थलग बनाती थीं। साहित्य से जुड़े लोग उन्हें प्यार से "बाबा" ही कहते थे और धीरे-धीरे वे सबके लिए बाबा नागार्जुन बन गए। "घुम्मकड़ी" उनकी फितरत में शुमार था, यही वजह है कि साल के अधिकांश दिन वे भ्रमण करते रहते। आज कलकत्ता में हैं तो कल दिल्ली में नजर आते। जीवन-संध्या के क्षणों में भी इनकी यायावरी कम नहीं हुई थी। अंत तक वही उत्साह, वही उमंग विद्यमान रहा उनमें। बाबा का क्षण-क्षण बदलता रूप भी कम दिलचस्प न था। क्षण में गंभीर तो पलभर में ही खुलखुलाकर हंसते-बतियाते दिखाई देते। उनकी बचकानी हरकतें संप्रेषनीय होतीं, तो किसी भी समय किसी को भी गरियाने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता, चाहे वह कितना भी बड़ा साहित्यकार क्यों न हो। पर उनकी बातों का कोई बुरा नहीं मानता। बाबा की गालियों में भी उन्हें स्नेह का अमृत दिखता। कविताओं के माध्यम से मौजूदा शासन और व्यवस्था पर भी जमकर चोट करते बाबा। बतौर बानगी-

खड़ी हो गई चांपकर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक,
उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक
जिसमें कानी हो गई है शासन की बंदूक,
बढ़ी बधिरता दसगुनी, बने विनोबा मूक
धन्य-धन्य वह, धन्य वह शासन की बंदूक ॥

नागार्जुन ने किसान आंदोलनों में भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई थीं। इसी क्रम में वे दो बार जेल भी गए और उन्होंने तानाशाह की तलवार के आगे भी झुकना कतई पसंद नहीं किया, बल्कि तने रहे। शायद यही कारण है कि उन्हें किसानों का शास्त्रीय आवाज भी कहा जाता रहा। बाबा की रचनाओं में मौजूदा हालात की तस्वीर तो है ही। इसके अलावा उसमें आम आदमी की पीड़ायें, उनका दर्द, उनकी छटपटाहट और संघर्ष भी हमेशा मुखरित होता रहा। बाबा ने मोटे गद्दों पर बैठकर या कालीन पर चलकर कविता नहीं लिखे कभी, बल्कि संघर्ष और पीड़ाओं की कंकरीट पर चलकर, गहनता से महसूस कर ही संघर्षों की कहानी लिखी है उन्होंने। उनकी कलम आम आदमी की धड़कनों के साथ ही चलती रही अनवरत......... । यों ही जनकवि नहीं कहलाये नागार्जुन। उनकी कलम सीधे जनता से सरोकार रखती थी। बाबा की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि साधारण से साधारण चीजों को भी, साधारण शब्दों को भी उन्होंने एक मुकम्मल ऊंचाई प्रदान की। कुछ ऐसी ही अभिव्यक्ति उनके द्वारा रचित इस कविता में देखने को मिलती है-

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास,
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गवात
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।
दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआं उठा आंगन के ऊपर कई दिनों के बाद,
चमक उठीं घर भर की आंखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पांखें कई दिनों के बाद।

अकाल की त्रासदी पर लिखी गई नागार्जुन की यह कविता, जैसे पलभर के लिए आंखों के सामने सजीव हो उठती है, इससे पहले शायद ही इतनी मामूली चीजों को इतनी उथली दृष्टि से किसी ने देखा हो। इसके पीछे उनका **भोगा हुआ यथार्थ भी है,** न कि महज कल्पना। उन्होंने इस त्रासदी को करीब से देखा है, जाना है, तभी लिखा है। वे विषय-वस्तु में अंदर तक धंसते थे, तभी लिखते थे। तात्कालिक विकृतियों एवं विसंगतियों पर वे हमेशा लिखते रहे बेबाक होकर। निर्भीकता उनमें कूट-कूट कर भरी थी और बेपरवाह इतने कि उनके जैसा बेपरवाह कवि अब शायद ही पैदा हो। उनकी रचनाधर्मिता पर डॉ० रघुवंश प्रसाद ने टिप्पणी की थी कि-**नागार्जुन के काव्य में भाषा तथा शिल्प और जीवन की स्थितियों की जितनी वैविध्यता है, साथ ही व्यंग्य की जितनी मार्मिकता तथा तीखापन है, उतना काव्यात्मक संवेदन का आंतरिक समाकलन नहीं है।** इसके विपरीत नागार्जुन आंतरिक समाकलन को द्वितीय दर्जे की वस्तु ही मानते रहे। बाबा की मैथिली कविता **'या निश सर्वभूतानाम्'** की कुछ पंक्तियां देखिए-

टूटि गेल अछि निम्न
तकै छी आगां-पाछां
कुल्लम शहर करइ अछि जगमग
ठाम-ठीम भूकइए कुकुर मने अनेरे
आ कि अपरिचित जाति भाइके देखि-देखि
अभिसारिका क धएन पछोर चल गेल हेतइजे।
आकि भोदरिया सिहकी सं
कवैत बिजलीक इजोर कैर भास्वर छाया के
देखि हिलइत झुंकइआए कतहु कोनों कुकुर।

इस कविता में मैथिली की माटी की सोंधी महक तो है ही, अंतस की उथली जमीन भी है जो सहज ही संप्रेषित करता है।

कलकत्ता शहर बाबा को अति प्रिय था और इसी कारण से बराबर उनका यहां आना-जाना लगा रहता। कभी-कभी तो वे यहां महीनों टिक जाते। आखिर कलकत्ते में उनका एक भरा-पूरा परिवार जो था...........एक लंबा-चौड़ा साहित्यिक परिवार। बाबा जितना स्नेह उन लोगों पर बरसाते, उससे कहीं बढ़कर वे लोग उन्हें प्यार करते थे। अपने जीवन के अनंत कीमती पल बाबा ने कलकत्ता में रहकर गुजारे थे। इसी का असर था कि उन्होंने बांग्ला में भी कविताएं लिखीं। उनकी चंद पंक्तियों की एक बांग्ला कविता यों है-

भूमिष्ठ हयो
अमार काव्य शिशु
निशुति रात्रै
केउकि शुनेछे और क्रन्दन
केउकि सुनछे और आर्तनाद
आमि निजेइ एइ नवजातकेर धात्री
आमि निजेइ एइ नवजातकेर जननि

कलकत्ता में रहकर ही उन्होंने **काव्यतीर्थ** की उपाधि ली और फिर वामपंथी विचारधारा के संसर्ग में आए। वे हमेशा राष्ट्रीय मार्क्सवाद के पक्षधर रहे और उनकी चिंतनधारा में वामपंथ की छाप साफ तौर पर देखी जा सकती है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मार्क्सवाद के परिष्कृत स्वरूपों को अपने शब्दों में यों कहा है-**अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद जब राष्ट्रीय होगा, तभी राष्ट्रीय मार्क्सवाद कहलाएगा। मेरे लिए इसका मतलब स्थानीय समस्याओं और समीप के संघर्षों से जुड़ना है। बाहर-बाहर हम प्रगतिशील बने रहें और भीतर वही प्रतिक्रियावाद काम करता चले तो फिर कैसी राष्ट्रीयता और कैसी साम्यवादिता। मैं स्थानीय समस्याओं से निर्लिप्त होकर मार्क्सवादी नहीं कहलाना चाहता।**

नागार्जुन ने सिर्फ हिंदी, बांग्ला और मैथिली में ही नहीं लिखा, अपितु पाली, प्राकृत, संस्कृत, गुजराती आदि भाषाओं में भी कई अच्छी कविताएं लिखीं, जिनमें कुछ एक हिंदी में रूपांतरित की जा चुकी हैं। कह सकते हैं, साहित्य और काव्य का महाकुंड थे बाबा नागार्जुन, जिसमें एक पूरी-की पूरी दुनिया समाविष्ट हो। वे भले ही आज हमारे बीच नहीं रहे, किंतु उनकी कालजयी रचनाएं युग-युगान्तर तक उन्हें जिन्दा जरूर रखेंगी। अंत में कालिक चेतना के उस समग्र दूत एवं साहित्य मनीषी को बारंबार नमन् मीन के इन पंक्तियों के साथ कि-

यानि रात बहुत थे जागे,
सुबह हुई आराम किया।

संपर्क : संपादक, शब्द संसार, सिन्हा सदन, भगतपाड़ा, उषाग्राम, आसनसोल-713303(प० बंगाल)

कानून की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान

गौरव की सफलता से बिहार गौरवान्वित

देश के गौरवशाली विधि महाविद्यालय-नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इन्डिया, बंगलोर युनिवर्सिटी के पांच वर्षीय कानून पाठ्यक्रम की परीक्षा में इस वर्ष बिहार के **गौरव अग्रवाल** ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर बिहार को गौरवान्वित किया है। बंगलोर में हाल ही में आयोजित एक समारोह में भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति डॉ० ए० एस० आनन्द ने गौरव को चार विषयों में विशिष्टता लाने के लिए चार स्वर्ण पदक तथा सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के लिए एक स्वर्ण पदक के साथ उन्हें डिग्री प्रदान की। इस अवसर पर भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरमण ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए श्री गौरव की शानदार सफलता के लिए उन्हें हार्दिक बधाई दी। समारोह में उच्चतम न्यायालय के कई न्यायाधीश के साथ-साथ पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री आफताव आलम भी उपस्थित थे। स्मरणीय है कि श्री गौरव अग्रवाल पटना उच्च न्यायालय के वरीय अधिवक्ता श्री एन० के० अग्रवाल के सुपुत्र तथा उडीसा उच्चन्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री हरिलाल अग्रवाल के पौत्र हैं। सम्प्रति श्री हरिलाल अग्रवाल उच्चत्तम न्यायालय में वरीय अधिवक्ता हैं। श्री गौरव अग्रवाल इस पत्रिका के आजीवन सदस्य हैं।

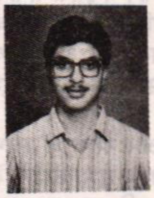

पत्रिका-परिवार की ओर से गौरव को हार्दिक बधाई।

सौजन्य : कामेश्वर मानव

आरक्षण बनाम योग्यता

स्नातकोत्तर शिक्षा में आरक्षण नहीं - उच्चत्तम न्यायालय

उच्चत्तम न्यायालय ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ी जातियों के उम्मीदवारों को स्नातकोत्तर शिक्षा में नामांकन के लिए सामान्य उम्मीदवारों से कम अंक रखने के प्रावधान को गैरकानूनी बरकरार दिया है। अदालत ने तीखी टिप्पणी की कि ऐसी लोकलुभावन नीतियां **देशहित के खिलाफ है।**

उल्लेख्य है कि सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तरप्रदेश स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा अधिनियम को खारिज कर दिया जिसमें अनु० जाति, जनजाति और पिछड़ी जातियों के छात्र-छात्राओं को नामांकन के लिए आवश्यक अंक की सीमा 35 प्रतिशत से घटाकर 20 प्रतिशत कर दी गई थी। कोर्ट ने मध्यप्रदेश सरकार के उस आदेश को भी रद्द कर दिश, जिसमें उच्चतर शिक्षा संस्थानों में दाखिले के लिए अनुसूचित जाति के लिए 20%, अनु० जनजाति के लिए 15% और पिछड़ी जातियों के लिए 40% अंक रखे गए थे।

सर्वोच्च न्यायालय के उक्त निर्णय के आलोक में यह कहा जा सकता है कि पिछड़ी जातियों के सन्दर्भ में भले आरक्षण की यह व्यवस्था असामान्य लगे किन्तु दलितों के लिए यह आरक्षण व्यवस्था अवश्य ही क्रांतिकारी रही है। ऐसा नहीं कि आरक्षण और योग्यता को एक साथ साधा नहीं जा सकता। मालुम हो कि शिक्षा या रोजगार के अवसरों के विशिष्ट क्षेत्र को परम्परा से उपेक्षित तबकों के लिए आरक्षित करना सामाजिक विषमता को समाप्त करने की अल्पकालिक व्यवस्था है, स्थाई नहीं। दूसरी ओर आज समाज में जिस प्रकार की विवेकहीनता तथा पैरवी एवं पैसे की करामात दिखाई देती है, ऐसी छद्म बुद्धिजीवियों की भरमार वाले इस देश में इसे सामाजिक न्याय के लिए घातक माना जाएगा। और सच कहा जाय तो आजादी के 52 वर्षों के बाद तक ऊंचे पदों पर योग्यता और प्रतिभावान ही बैठते रहे हैं फिर भी स्वास्थ्य अथवा शिक्षा के क्षेत्रों अतिरिक्त अन्य में जो आज हालात हैं, उससे हम सभी अवगत हैं।

KUMARTEK COMPUTER

Facilities

- ***D.T.P. & All Types of Computers Job Work***
- ***Project Work, Card Designing, Visiting Card, Resume etc.***
- ***Computer Hardware, Software & Networking***
- ***Lamination & Spiral Bindinbg***
- ***Internet, E-mail, Fax, Courier***
- ***Repair Work of Monitors & SMPS***

Microsoft® Certified Professional

SHASHI BHUSHAN
H/W Engineer

SUDHIR RANJAN
Networking Engineer

U-208, Shakarpur,
Behind Bank of Baroda, Delhi-110092
Phone: 2057045, Pager: 9632171460

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि

❑ डॉ०डी०आर०ब्रह्मचारी

याद है, जब पहली बार प्रसिद्ध व्यंग्यकार स्व हरिशंकर परसाई की **गुड़ की चाय** पढ़ा था- एम० एल० ए० मुझे शक्कर का बोड़ा मालूम पड़ता है। वह, जिनके पूर्वज जेल गए थे, शक्कर की चाय पीते हैं, जिनके नहीं, वे गुड़ की। अब दहेज में रुपये नहीं, एम० एल० ए० चाहिए। जो जितना ही समर्थ है, उसको उतने एम० एल० ए०। जनता गौण, विधायक-सांसद प्रधान। चुनावी मुद्दा राष्ट्र की समस्या नहीं, प्रतिनिधियों की योग्यता नहीं, व्यक्तियों को सत्तारूढ़ बनाने और सत्ताच्युत करने का व्यापार हो गया है।

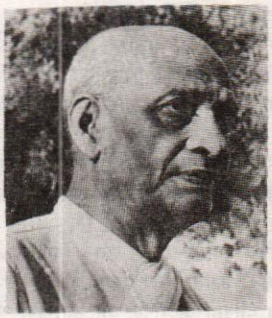

साहित्य युग-द्रष्टा और युग-स्रष्टा होता है। प्रेमचंद ने **साहित्य के उद्देश्य** में लिखा था-साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलनेवाली सचाई नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सचाई है।

महामना, देशबंधु, देशरत्न, लौहपुरुष, **नेताजी** आदि संबोधन व्यक्ति विशेष के लिए रूढ़ थे। उसका सीधा अर्थ होता-मदनमोहन मालवीय, चितरंजन दास, राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, सुभाषचंद्र बोस। किंतु अब अपहर्त्ता गिरोह का सरगना भी नेताजी होता है और जिनका व्यक्तित्व किसी भी उपाधि से महान होता है। उन्हें मरणोपरांत विभिन्न प्रकार की उपाधियों से नवाजा जाता है।

मानक पुरुषों को आज वोट-प्रतिनिधि के रूप में आंका जाने लगा है। उनकी जयंतियां, प्रतिमाएं, गोष्ठियों के आयोजन, उनके विचारों को आज के संदर्भ में देखने-परखने-क्रियान्वयन के लिए नहीं होते, बल्कि उसकी पृष्ठभूमि होती है, उनकी भावना से जुड़े लोगों को चकमा देना, उल्लू बनाना और अपनी गोटी लाल करना। राजनीति की गर्द भी भावनाओं की दूर्वाकंद निर्कंदिका हो रहा है। **सोई सयान जे परधन हारी।**

कभी मोहनदास, वल्लभभाई, सुभाष, मोतीलाल ने भी ऐसा सोचा था? उनके सामने संपूर्ण देश था, क्षेत्रविशेष नहीं, भाषा विशेष नहीं, लिंग विशेष नहीं, जाति विशेष नहीं, धर्म विशेष नहीं। उनकी दृष्टि समग्रता को लेकर चलने वाली थी। अन्याय सहकर बैठ रहना यह महादुष्कर्म है।

जिस प्रकार **लोकमान्य-'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।', गांधी-सत्य-अहिंसा-करूणा-मैत्री, सुभाष-'तुम खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा'। के प्रतीक पुरुष हैं उसी प्रकार लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल दृढ़ इच्छाशक्ति, अखंड संकल्प और तदनुरूप उसके क्रियान्वयन के। यही इनकी मौलिक पहचान है।** अपनी कृति में विश्वास रखनेवाले इस महापुरुष को **डंद वबिजपवद कहा जाता है। अपने संकल्प के आगे अपने साधन को कभी आड़े हाथ उन्होंने नहीं आने दिया। महाराज उद्यम से विधि का अंक पलट जाता है। 'लौहपुरुष' का अर्थ ही हो गया-क्षमता, कौशल और शक्ति की परिपूर्णता।**

वह कोरी भाषणवाजी से कोसों दूर थे। उनके जीवन में बहुत कम अवसर आए हैं जहां उन्होंने लंबे-चौड़े भाषण दिए हों।

कौन जानता था कि गांधी की खिल्ली उड़ाने वाला-'कपासना धागा सूं यो स्वराज लेना नूं आयो छै, हा, हा, हा!' एक दिन गांधी के रामकृष्ण का विवेकानंद होगा।

अनेक प्रसंगों में उन्होंने गांधी से भी अपना वैमत्व छिपाया नहीं।

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् देशी रियासतों के विलयन के प्रसंग में बहुधा ये जर्मनी के 'विस्मार्क' एवं 'प्रशा' के संदर्भ में देखे जाते हैं। इस पर विस्मय प्रकट करते हुए **सेठ गोविंद दास** ने ठीक ही कहा है, **जर्मनी की भौगोलिक-राजनीतिक एकता से भारत की भौगोलिक राजनैतिक एकता की तुलना नहीं की जा सकती। फिर, वहां जितना रक्तपात हुआ, वहां यह कार्य सरदार ने बिना एक बूंद रक्त बहाए किया। ऐसा न होने पर न केवल भारत की स्वतंत्रता, बल्कि इसका प्रजातंत्र भी खतरे में था।**

इस कला में उन्हें महारत हासिल थी। **अलबर नरेश** के शब्दों में-पहले तो हम उनसे डरते थे। हमें ऐसा लगता था कि यदि हमारे मन दुखाकर सत्ता के जोर पर हमें सताएंगे तो लॉर्ड डलहौजी की नीति से सन् 1857 में जैसा विद्रोह हुआ था। वैसा ही विद्रोह भारतीय सरकार के विरूद्ध भारतीय राजा कर देंगे। परंतु सरदार साहब ने सत्ता का चक्र नहीं चलाया। उन्होंने तो प्रेम की गंगा हमारे जीवन में बहाई। हमें सच्चा स्वार्थ समझाया। माता और पिता जिस प्रकार अपने बालक को संतुष्ट करते हैं उसी तरह उन्होंने हमें संतुष्ट किया।

पटेल का लोहा मानते हुए **नेहरू** को भी कहने को विवश होना पड़ा-**छह महीने पहले मैं भी नहीं कह सकता था कि जो आज सैकड़ों साल पुरानी सामंतशाही उखड़ रही है वह इतनी आसानी से उखड़ जाएगी। इस टेढ़ी और कठिन परिस्थिति से निपटने के विषय में हम पर मेरे मित्र व सहयोगी सरदार पटेल** का आभार है। पाकिस्तान बनने के बाद भारत को विशाल भारत बनाने में सरदार पटेल का योगदान इतिहास में सदा स्मरण किया जाएगा।

बच गया कश्मीर। वह तो ऐसा फोड़ा बन गया है जो न बैठता है, न फूटता है। यदि नेहरू का हस्तक्षेप न होता तो इस अश्वत्थामा के घाव की शल्यक्रिया कुशल वैद्य के हाथो कब की हो चुकी थी। किंतु कई कारणों से नेहरू की इस 'बेबी' पर मुंह खोलना सरदार ने समीचीन नहीं समझा। उनकी मृत्यु के बाद जयप्रकाश नारायण ने कहा था-सरदार के दिल और दिमाग में इसके समाधान का व्यावहारिक रास्ता था लेकिन इसके समाधान के लिए उन्हें नहीं कहा गया था। अतएव यह आज भी एक विकराल समस्या के रूप में देश के सामने खड़ा है।

पटेल और नेहरू के स्वभाव का विश्लेषण करते हुए **विष्णु प्रभाकर** ने लिखा है-**नेहरू के चिंतन पर पश्चिम का प्रभाव अधिक था। सरदार स्पष्टवादी थे और देश की आम जनता की तरह सोचते थे। नेहरू इस देश के प्रश्नों पर भी अंतराष्ट्रीय स्थिति को ध्यान में रखकर विचार करते थे। सरदार पहले अपने घर की बात सोचते थे।**

इस प्रसंग में स्व० भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास 'प्रश्न और मरीचिका' भी देखा जा सकता है।

मानसिकता के अनुरूप ही उनके पहनावे भी थे। मोटी खादी का कुर्त्ता और धोती। धोती धरती को बुहारती नहीं चलती। धोती के नीचे ठेहुने का आधा भाग सदा दिखाई देता। कुर्त्ते के ऊपर तह किया दुपट्टा होता। सबसे अधिक द्रष्टव्य उनकी वेधक दृष्टि थी। जहां पड़ जाती, फिर उसे कोई विचलित नहीं कर सकता। कभी नहीं। उनके जीवन के ऐसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। **दबंग वैरिस्टर होने के बावजूद उनके व्यक्तित्व से किसान का साधारणत्व झांकता रहता।**

सरदार के निधन पर नेहरू फूट-फूट कर रो उठे थे। उन्होंने कहा था- वह ऐसे मित्र और सहयोगी थे जिनपर पूरा भरोसा किया जा सकता था। वह ऐसे शक्ति के स्तंभ थे जिससे दुर्बल हृदय भी मजबूत हो जाते थे।

विचारणीय है, क्या आज वही उत्साह, वही तत्परता, वही लगन, वही राष्ट्रीय भाव और वही 'स्पीरिट' हममें है? इसके अभाव में उनके स्मरण को क्या कहा जाएगा?

कौन लेगा भार यह?
कौन विचलेगा नहीं?
दुर्बलता इस अस्थि मांस की-
ठोंक कर लोहे से, परखकर वज्र से
प्रलयोल्का-खंड के निकष पर कसकर,
चूर्ण अस्थिपुंज-सा हंसेगा अहसास कौन?
साधना पिशाचों की बिखर चूर-चूर होके
धूलि-सी उड़ेगी किस दृप्त फूत्कार से?
कौन लेगा भार यह?
जीवित है कौन?

(प्रसाद: पेशोला की प्रति ध्वनि)

संपर्क: नक्कू थान, मोहनपुर,
समस्तीपुर-848101

राष्ट्रीय एकता के कर्णधार-सरदार पटेल

❑ डा० जगदीश सिंह राठौर

सरदार पटेल का वह कार्य जिसके लिये भारतीय इतिहास उन्हें कदापि नहीं भुला सकता वह हैं-देशी राज्यों का एकीकरण। भारत विभाजन के साथ-साथ अंग्रेजों ने देशी रियासतों को यह स्वतंत्रता दे दी थी कि वे चाहें तो पूर्णतः प्रभूता सम्पन्न राज्य के रूप में रह सकते हैं और चाहें तो भारत अथवा पाकिस्तान में स्वयं को विलीन कर सकते हैं। स्वाधीनता की घोषणा के समय अधिकांश देशी राज्यों ने यही अर्थ लगाया कि वे सर्वथा स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व में रहेंगे। लेकिन सरदार पटेल ने अपनी राजनीतिक सूझबूझ, व्यवहार कुशलता, राजनयिक दक्षता एवं लौह इच्छाशक्ति की सहायता से हैदराबाद सहित 550 से अधिक देशी रजवाड़ों का भारतीय संघ में विलय कराने का अविस्मरणीय कार्य सम्पन्न करके राष्ट्र की अखण्डता की रक्षा की। आश्चर्य की बात तो यह है कि उन समस्त रजवाड़ों से उन्होंने सब कुछ बड़े प्रेम एवं सद्भाव से ले लिया और उन्होंने सरदार पटेल की आलोचना भी नहीं की। इस सन्दर्भ में उनकी तुलना जर्मनी के लौह चान्सलर(प्रधानमंत्री) विस्मार्क से की जाती है। जो कार्य विस्मार्क ने रक्त और तलवार से सात आठ वर्षों में पूर्ण किया वल्लभ भाई ने वह कार्य राजनय से मात्र कुछ दिनों में कर दिखाया। डा०आर०सी० मजूमदार के शब्दों में, **"भारत के नए स्वतंत्र उपनिवेश में संयुक्त राजनीतिक संगठन की स्थापना का श्रेय निश्चय ही प्रमुखतः सरदार पटेल को और उनके लेफ्टिनेन्ट वी०पी० मेनन को जाता है। जिन्होंने बड़े दिलचस्प तरीके से राज्यों के एकीकरण का काम पूरा किया। यह एक मौन लेकिन महान क्रान्ति थी जिस पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है। वास्तव में यह स्वाधीनता आन्दोलन से भी महान कार्य था। एक जादुई छड़ी घुमाते हुए सैकड़ों छोटे-बड़े राज्यों को समेटकर एक कर देना अत्यंत असाधारण कार्य था। इनमें कुछ राज्य तो ऐसे थे जिनका अस्तित्व हिन्दू काल से बना हुआ था--------कुल मिलाकर देखें तो समूचे भारत को एक राजनीतिक और प्रशासनिक इकाई के रूप में संगठित करने की यह घटना बेजोड़ है और हमें ज्ञात भारत के इतिहास में ऐसा उदाहरण दूसरा नहीं मिलता"**, उनके इस विलक्षण कार्य से प्रभावित होकर, स्वयं नेहरू जी ने उन्हें "राष्ट्रीय एकता का शिल्पी" कहकर सम्मानित किया था। डा० राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है कि, सैकड़ों राज्यों को भारत में मिलाने के लिये उन्होंने जो कुछ भी किया इतने बडे कार्य का उदाहरण हमारे देश के इतिहास में नहीं है और मैं समझता हूं कि विश्व के दूसरे देशों के इतिहास में भी नहीं है। "आई० जी० पटेल लिखते हैं कि गांधीजी ने देश के लिये आजादी प्रदान की, पंडित नेहरू ने विदेश नीति को एक स्वरूप एवं शक्ति प्रदान की तथा सरदार पटेल ने विलक्षण तरीके से देश को एक संगठित समग्र के रूप में समाहित किया"। अनेक आलोचकों का ऐसा विश्वास है कि कश्मीर का प्रश्न भी यदि सरदार पटेल के हाथ में होता तो उसका भी उन्होंने समाधान अवश्य कर दिया होता। उनका एक महत्वपूर्ण योगदान भारतीय जनपद सेवा का प्रतिस्थापन था। इसे अंग्रेज अस्त-व्यस्त स्थिति में छोड़ गये थे। उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा (इंडियन- एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विसेज) का गठन किया।

भारतीय संवैधानिक परम्परा एवं संविधान के निर्माण में भी सरदार पटेल ने स्मरणीय योगदान किया है। वह संविधान निर्मात्री सभा के अंतर्गत तीन उपसमितियों के अध्यक्ष थे। अलपसंख्यकों हेतु आरक्षण का उन्होंने विरोध किया किन्तु अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के स्थान आरक्षण की व्यवस्था स्थापित की। उनके सुझाव पर ही व्यक्तिगत सम्पत्ति की सुरक्षा की गारंटी स्वीकार की गई कि सार्वजनिक हित में किसी की सम्पत्ति का उपयोग तभी किया जा सकता है जबकि उसका उचित मुआवजा दे दिया जाये। उनका यह सुझाव भी संविधान में समाविष्ट किया गया कि आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रपति राज्यों का शासन अपने हाथ में ले सकता है। नेहरू जी चाहते थे कि राष्ट्रपति का चुनाव संसद ही करे जबकि, जिस समिति के अध्यक्ष सरदार पटेल थे, उसका सुझाव था कि संसद से बाहर राष्ट्रपति का चुनाव हो। अंत में संसद और राज्य की विधान सभाओं दोनों के द्वारा राष्ट्रपति का चुनाव स्वीकार किया गया।

राष्ट्रीय अस्मिता, गौरव, सातत्य तथा भारतीय संस्कृति से सरदार पटेल का अतिशय लगाव था। महमूद गजनवी द्वारा ध्वस्त भगवान शिव का सोमनाथ मंदिर उनकी दृष्टि में एक राष्ट्रीय अवशेष अथवा सांस्कृतिक धरोहर थी। अतः उन्होंने उसका जीर्णोद्धार कराकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा पूर्ण शास्त्रीय विधि विधान के साथ मूर्ति स्थापना कार्य सम्पन्न कराया। महात्मा गांधी के कट्टर अनुयायी होने के कारण उनके नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से मतभेद रहे तथा सरदार पटेल ने कई अवसरों पर उनका विरोध किया। किन्तु स्वतंत्रता संग्राम के अतुलनीय सेनानी "नेताजी" के जीवन एवं कृत्यों को उजागर करने एवं उनके प्रति सच्ची श्रंद्धाजलि अर्पित करने के लिये 1947 में सरदार पटेल ने भारतीय चित्र प्रतिष्ठान से एक फिल्म निर्मित की। डा० गिरीराज शरण अग्रवाल, स्वयं उनके (सरदार पटेल) ही शब्दों-**"सत्ताधीशों की सत्ता उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाती है जबकि महान देशभक्तों की सत्ता उनके मरने के बाद ही सचमुच काम करती है। लोग उनके जीवन का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं, उनके गुण गाते हैं तथा दिन रात उन्हें याद करते हैं"**- को उदधृत करते हुए लिखते है कि **"उनका यह कथन स्वयं उनके लिए भी सच साबित हुआ। उनके त्यागमय और ध्येय-समर्पित जीवन की तुलना आज के राजनीतिक वातावरण में तो असंभव हैं ही उनके समकालीन महामानवों के बीच भी उनकी महानता निर्विवाद थी"।**

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन के परिप्रेक्ष्य में स्मरणीय वन्दनीय एवं अनुसरणीय सरदार वल्लभ भाई पटेल एक महान राष्ट्रभक्त, अमर स्वतंत्रता सेनानी, किसानों के मसीहा, असाधारण संगठनकर्ता एवं प्रशासक, राजनीतिक सूझबूझ के धनी राष्ट्रीयता के महान रक्षक तथा एक अविश्रान्त राष्ट्रकर्मी के रूप में अपने व्यक्तित्व की विलक्षण छवि हमारे दिलों- दिमाग पर अंकित करते हैं। निष्कर्ष रूप में स्वाधीनता संग्राम में उनकी भूमिका के सम्बन्ध में, स्वाधीन भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों का उल्लेख करना अधिक सुसंगत होगा-**"हमें जो स्वाधीनता मिली है, ज्यों-ज्यों हम उसका महत्व समझते जायेंगे हमारे हृदयों में सरदार पटेल के प्रति सम्मान बढ़ता जायेगा। 1919-17 से अपने जीवन के अंतिम समय तक महात्मा गांधी जी के जो विचार और कार्यक्रम होते थे, उन्हें सरदार पटेल ही क्रियात्मक रूप देते थे, तो ऐसा कहना सर्वथा उपयुक्त होगा।"** वास्तव में देश की स्वाधीनता एवं सेवा के लिये उनकी जितनी अधिक भूमिका रही है वह सब सही रूप में प्रकटित नहीं हुई है। अतः इस सम्बन्ध में आचार्य डा० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा लिखते हैं, **"राष्ट्रभक्त, विमोचन संग्राम के अमर सेनानी, दृढ़प्रतिज्ञ, दूरदर्शी राजपुरुष पटेल का विशाल व्यक्तित्व था। इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीति के अध्येताओं और राजकार्य निरत व्यक्तियों को उनके जीवन-रहस्य का उद्घाटन करना चाहिये। इस प्रकार का अध्ययन राष्ट्र की सांस्कृतिक सम्पत्ति होगी। अहर्निश प्रत्येक श्वास में राष्ट्रोद्धार का ही वायु-प्रवाह उनके अवयवों और गोत्र में होता था।"**

संपर्क : अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग,
गुलाब सिंह हिन्दू स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, चान्दपुर-स्याऊ
बिजनौर, उत्तर प्रदेश

पड़ोसी राष्ट्र नेपाल की लोक संस्कृति

❑ डॉ० हरिकृष्ण प्र० गुप्त 'अग्रहरि'

विश्व में मात्र नेपाल ही एक हिन्दूराष्ट्र है। यहां का राज-धर्म हिन्दू-धर्म हैं हिन्दू धर्मावलम्बी नेपाल की एक लम्बी धार्मिक कहानी है। यहीं की गिरि कन्दराओं की एकान्तता में अनेक तपस्वियों ने अनेक शास्त्रों और पुराणों की रचना की। दुर्वासा ऋषि का तपश्चर्या-स्थल इसी के आस-पास गण्डकी-सिंचित किसी गिरि-गह्वावर में था, ऐसा सिद्ध पे चुम है। बुद्ध का जन्मस्थल कपिलवस्तु जो लुम्बिनी अंचल में है, आज समस्त हिन्दुओं के लिए तीर्थस्थल बना हुआ है। यही नहीं, शिवरात्रि के अवसर पर भगवान श्री पशुपतिनाथ के दर्शन करनेवालों का अपार समूह हमें यह स्मरण कराता है कि नेपाल सदैव हिन्दू-धर्म का केन्द्र रहा है। एक बात यह भी सत्य है कि "हिन्दुओं का अस्तित्व और संरक्षण नेपाल की पुण्यभूमि में ही रहा क्योंकि नेपाल कभी भी किसी विदेशी शक्ति का दास नही रहा।"

नेपाल पर्वतीय सौन्दर्य का अनुपम देश है, जहां की आध्यात्मिकता और वीरता विश्वेतिहास और संस्कृति में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यहीं के गौरवों की वीरता ने संसार के दो महायुद्धों में तमाम लोगों को चकित कर दिया था। यहीं की गिरि-कन्दराओं में प्राचीन ऋषि-मनीषियों का अध्यात्म-चिन्तन-मनन हुआ था और दैनिक आख्यानों एवं उपनिषदों का जन्मस्थल भी यहीं रहा है-ऐसा कहे तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। संस्कृत-व्याकरण के विश्व-विख्यात **आचार्य पाणिनी** और आदि **महाकवि वाल्मीकि** का भी इस देश से निकट का सम्बन्ध था। विदेह जनक का राज्य भी यहीं था और यहीं संसार को शान्ति का संदेश देनेवाला गौतम बुद्ध का जन्म नहीं हुआ था।

'नेपाल' का प्राचीन नाम **हिमाल** है। कहा जाता है कि गौतम बुद्ध से जब राजा बिन्दुसार ने पूछा था-**आपका घर कहां है?** तो भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया-मेरा घर हिमवान् के चरण में है। उनका तराई की **हिमालय का चरण** कहना युक्तिसंगत है। वैदिक समय में नेपाल का नाम **हिमाल** था।

नेपाल में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। अत: आधुनिक नेपाल के निर्माता राजा पृथ्वीनारायणशाह का कथन था कि मेरा देश चार वर्णो और छत्तीस जातियों की फुलवारी है। सच यह है कि नेपाल में बहुत-सी जातियां है और वे आपस में मिल-जुल कर रहती हैं । जातीय उपद्रव या साम्प्रदायिक दंगे नेपाल में कभी नहीं सुने गये।

नेपाल के उत्तर-पूरब में भोटिया, तमंग लिम्बू, राई और शेरपा जातियों के लोग रहते हैं। मध्य के क्षेत्र में नेवार और पश्चिम में किरात, गुरूंग और सुनवार जातियों की प्रधानता है। इस भांति नेपाल ठीक ही विभिन्न जातियों का अजायबघर है। नेपाल की प्रमुख जातियों की चर्चा करते हुए श्री डेनियल राइट ने गोरखा, नेवार, मगर, गुरूंग, लिम्बू, किरात, भोटिया तथा लेप्चा का उल्लेख किया है।

नेपाल की सबसे पुरान जाति किरात है। नेपाल के आदिवासी किरात ही थे। किरातों का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। ये लोग मंगोल जाति से मिलते जुलते हैं। इन पर बौद्धों और शैवों का भी प्रभाव है। फलत: वृक्ष, भूत-प्रेत और शिला की ये लोग पूजा करते हैं और भक्ष्य-अभक्ष्य आहार करते हैं। किरातो का दूसरा नाम **बारमोम्बा** भी है। नेपाल की अन्य जातियों में दुरस, तकले, धोतियाल भी उल्लेखनीय है। चेपांग और कुसुंडा घुमन्तु जातियां है। कुछ जातियां पेशे के आधार पर है जैसे-च्यामे, सुनारा, गाइने, नाऊ, सिकर्मी, डकर्मी आदि। तराई क्षेत्र में ब्राह्मण, क्षत्रिय(राजपूत), अग्रवाल(मारवाड़ी), अग्रहरि, तन्तुवाय(ततवाँ), कान्दू(कानू), कूर्मि, रौनियार, वरनवाल, कायस्थ, कोइरी(कुशवाहा), यादव(अहीर), चमार,. दूसाध और धोबी भी प्रमुख हैं।

नेपाल के धर्मिक स्थानों में पशुपतिनाथ का भव्य मंदिर, बोधनाथ, स्वयकभूनाथ, मच्छेन्द्रनाथ, गुहयेश्वरी, बूढ़ानीकंठ, गोकर्णावनु दक्षिणकाली और जनकपुर का जानकी मंदिर प्रमुख है।

काठमाण्डु की सबसे प्राचीन एवं ऐतिहासिक दृष्टि से दर्शनीय वस्तु है-काष्ठमंडप जिसके विषय में किम्बदन्ती है कि वह एक ही वृक्ष की लकड़ियों से निर्मित है। काष्ठमंडप गुरु गोरखनाथ का मंदिर है और यहां प्रसिद्ध नाथपंथी बाबा गोरखनाथ की प्रतिमा है। इसे सन् 1596 में राजा लक्ष्मी नरसिंह मल्ल ने बनवाया था।

नेपाल के सामाजिक जीवन में पर्व-त्योहारों का भी स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। पर्व-त्योहार को नेपाली लोग **चाड** कहते हैं। नेपाल के सामाजिक पर्वों में दशै(विजयदशमी), तिहार, फागु(होली), घोड़ेजात्रा, गाईजात्रा, इन्द्रजात्रा, जनैपूर्णिमा, घाटु, माघेसंक्रान्ति, शिवरात्रि, साउने संक्रान्ति,, कृष्णाष्टमी, बुद्ध-जयन्ती, रामनवमी आदि प्रमुख हैं।

नेपाल के सामाजिक जीवन में मनोविनोद के प्रचुर साधन हैं। पर्व-त्योहार तो मनोविनोद के साधन है ही कई अन्य भी साधन है जिसमें संगीत नृत्य एवं खेल-कूद भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। नेपाल में बाजा बजानेवालों की एक अलग ही जाति है जिसे लोग दमाई कहते हैं। शादी-विवाह के अवसर पर उनको बुलाया जाता है।

गांवों में भेड़ या बकरी चराते समय चरवाहों का प्रिय मनोविनोद है-बांसुरी वादन। ढाल और तबला भी यहां के सुप्रचलित वाद्ययंत्र है। नेपाल के हर इलाके में अपने-अपने ढंग के नृत्य है जो उसी इलाके के नाम पर प्रसिद्ध हैं, जैसे-सल्यानी और लम्झुंगे आदि। कुछ नृत्य में युवक ही युवतियों के वेशभूषा में नृत्य करते हैं। बारात के चले जाने पर वर-पक्ष के यहां रात में **रतोली** नृत्य होता है जिसमें मर्दो को नहीं रहने दिया जाता **जोरा** भी उसी तरह का नृत्य है जो औरतों के पर्व **तीज** के अवसर पर होता है।

नेपाल का राष्ट्रीय फूल **लाली गुंरास** है। यह 5000 से 11000 फीट की ऊंचाई पर पाया जाता है। यहां का राष्ट्रीय रंग है- **सिम्रिक**(क्रिमसन) क्योंकि नेपाली निवासी इसी रंग को शुभ मानते हैं। नेपाल की राष्ट्रीय पशु गाय जो राष्ट्र की आत्मा का द्योतक है। राष्ट्रीय पक्षी **डांफे**(अथात् चकोर) है।

नेपाल एक कला-प्रेमी देश रहा है और यहां की मिट्टी का कण-कण इस बात का साक्षी है। सच कहा जाय तो समूची नेपाल घाटी कलाओं का एक विशाल संग्रहालय है। यहां का हर मंदिर, हर महल, हर मकान कला का देखने योग्य नमूना है जिसमें मकान की बनावट, मूर्तियों का गढ़न, पीतल, लकड़ी और पत्थर पर की गई चित्रकारी दर्शक को मोह लेती है।

नेपाल की स्थापत्य कला संसार में अपना अलग स्थान रखती है। नेपाली विद्धानों के अनुसार नेपाल की स्थापत्य-कला के कतिपय विशिष्ट रूप चैत्य, पैगोडा, बेसर, राजपूत और मुस्लिम शैली दीख पड़ते हैं।

चैत्य एक बौद्धकला है जिसका प्रवेश नेपाल में सम्राट अशोक के समय में हुआ। काठमाण्डू का प्राचीन बौद्ध-विहा स्वयम्भूनाथ इस चैत्य-शैली का उत्कृष्ट नमूना है। बोधनाथ का मंदिर भी चैत्य-शैली में है। पैगोडा शैली नेपाल की अपनी शैली हैं काठमाण्डु का काष्ठमाण्डय इसका सबसे पुराना उदाहरण है। चांगुनारायण नेपाल में पैगोडा-शैली का प्राचीनतम नमूना कहा जा सकता है। बेसर शैली का दूसरा नाम शिखर शैली भी है। यह शैली प्रस्तर में उपयोग की विशेषता के लिए प्रसिद्ध है। पाटन का कृष्ण-मंदिर इस शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। राजपूत-शैली का नमूना आधुनिक काल में निर्मित सिंहदरबार का मूल ढोंका है। मुस्लिम-शैली को वास्तुकला का सुन्दर उदाहरण काठमाण्डू में भीमसेन थापा का धरहरा(टापर) है।

नेपालियों को मूर्तिकला से भी विशेष रूचि रही है। नेपाल मूर्तिकला की दृष्टि से एक धनी देश है। यहां मूर्तिकला का सबसे प्राचीन उदाहरण काठमाण्डू के पशुपतिनाथ के मंदिर में आर्यघाट स्थित विरूपाक्ष की मूर्ति है। नेपाल में चित्रकला को प्राचीन काल से ही प्रश्रय प्राप्त है।

सन्दर्भग्रंथ-

1. **हिन्दू राष्ट्र नेपाल की संस्कृति**-डॉ०हरिकृष्ण प्रसाद गुप्त 'अग्रहरि'
2. **हिस्ट्री ऑफ नेपाल** - डैनियल राईट
3. **जाति विश्व कोश** - डॉ० हरिकृष्ण प्र.गुप्त
4. **हिन्दू राष्ट्र नेपाल की संस्कृति**-डॉ० हरिकृष्ण
5. **नेपाल के दर्शनीय स्थान** - डॉ० हरिकृष्ण
6.नेपाली-निबन्धावली - शर्मा एवं देवकोटा

संपर्क: अग्रहरि भवन पो०-भोलाही-845305
जि०-पूर्व चम्पारण

विचार दृष्टि के प्रवेशांक
व
राष्ट्रभक्ति की भावना बढ़ाने, सामाजिक कुरीतियों,
अंधविश्वास आदि को दूर करने के लिए
हमारी शुभकामनाएं आपके साथ

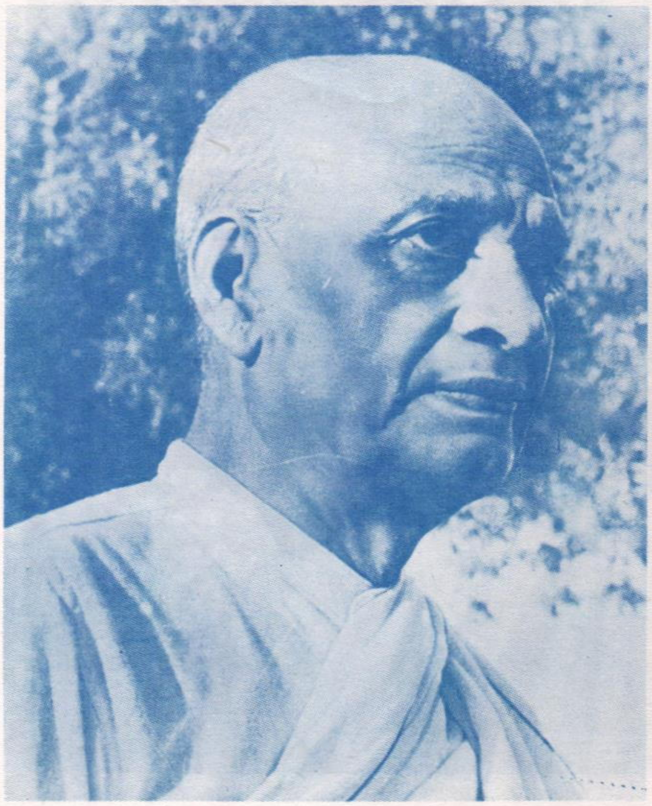

ब्रजभूषण गुप्ता
आरा (भोजपुर)
बिहार

नेत्रदान, रक्तदान को देशहित में बढ़ावा दें

हमारी शुभकामनाएं आपके साथ

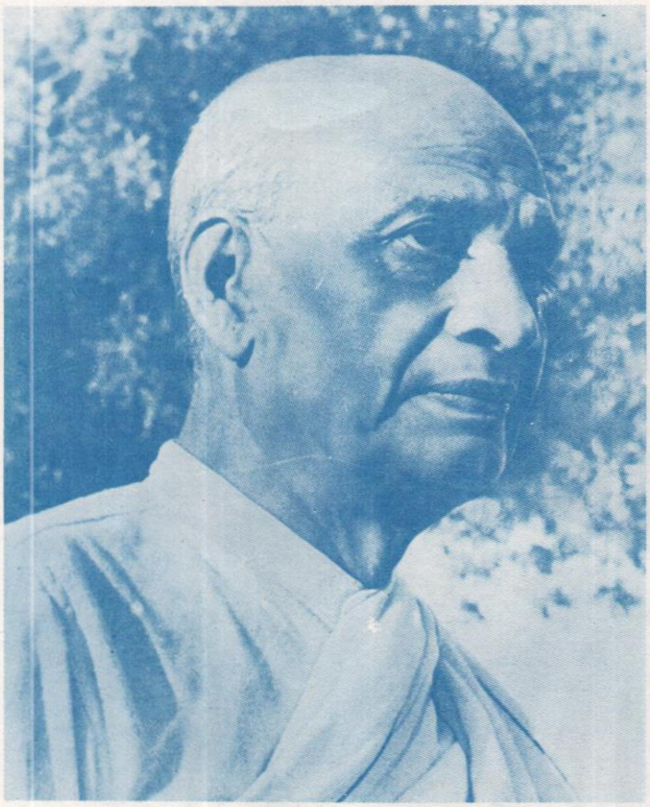

एन.के. मिश्रा
आरा (भोजपुर)
बिहार

बच्चों में कुपोषण

❑ · डा० आर०के०पी० सिन्हा

हमारे देश के दो तिहाई बच्चे किसी न किसी प्रकार के कुपोषण से प्रभावित होते हैं। सुखण्डी हो या रतौंधी या रिकेट-ये सभी कुपोषण के ही विभिन्न रूप हैं। गरीबी, अज्ञानता तथा सामाजिक पुरातन पंथी विचारधारायें बच्चों की एसी स्थिति के लिए मुख्यत: जिम्मेदार हैं, और निराकरण में बाधक भी। कुपोषण के विभिन्न पहलुओं के विश्लेषण से अधोलिखित स्थिति स्पष्ट होती है:

1. स्तनपान न कराना : -मां का दूध ईश्वरीय देन है और शिशुओं के लिए सर्वोत्तम आहार भी। माताएं अज्ञानता और गलत धारणावश बच्चों को अपना दूध नहीं पिलाती हैं। बच्चा के जन्म होने के तीन-चार दिनों बाद तक मां का दूध गाढ़ा तथा पीला रहता है जो बच्चे के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत ही लाभदायक एवं पौष्टिकारक होता है और रोगों से बचने की क्षमता प्रदान करता है। परन्तु अज्ञानता तथा सामाजिक कुरीतियों की वजह से इस दूध को माताएं हानिकारक मानकर बच्चों को नहीं पिलाती हैं फलत: इस अमूल्य आहार से बच्चे वंचित रहकर कुपोषण के शिकार हो जाते हैं।

2. बाहरी दूध का सेवन : -बंद डिब्बे का या गाय, भैंस और बकरी के दूध का सेवन अधिकांश महिलाएं करती हैं। इस तरह का दूध एक तो मंहगा पड़ता है, दूसरा उसके बनाने और पिलाने में अधिक सावधानी की जरुरत पड़ती है, जो आम माताएं आसानी से नहीं कर पाती हैं। परिणामस्वरूप बच्चों को प्रयाप्त और संतुलित आहार नहीं मिल पाता है, खासकर पांच-छः महीनों से कम उम्र के बच्चों को। कुछ परिवारों में तो आररोट का घोल या बार्ली और साबूदाना का भी उपयोग किया जाता है जो सर्वथा वर्जित है। बाहरी दूध में वे तत्व भी संतुलित मात्रा में नहीं होते हैं जिनकी शिशुओं को आवश्यकता होती है।

3. ठोस आहार न देना : -मां का दूध या बाहरी दूध चार माह से कम उम्र के बच्चों के लिए प्रर्याप्त होता हैं उसके बाद दूध के साथ-साथ ठोस आहार देना निहायत जरुरी हो जाता है। परन्तु रुढ़िवादी धारणाओं की वजह से मुंहजूठी या अन्नपरासन की आड़ में आठ-नौ महीनों तक बच्चों को ठोस आहार से वंचित रखा जाता है। नतीजन बच्चे कुपोषण से पीड़ित हो जाते हैं।

4. स्वच्छता का अभाव : -बच्चों की व्यक्तिगत स्वच्छता और उनके खानपान की चीजों की स्वच्छता पर ध्यान नहीं देने से कै-दस्त तथा अन्य संक्रामक बीमारियों के होने का खतरा रहता है जो परिणामस्वरूप कुपोषण का कारण हो जाता है। अत: बच्चों की सफाई और उनके खानेपीने की चीजों की सफाई पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

5. रोग प्रतिरक्षण टीकाकरण नहीं करवाना: - बाल्यावस्था में होने वाले प्राय: सभी संक्रामक रोगों से बचाव के लिए टीके उपलब्ध हैं। सरकारी या गैरसरकारी संस्थाओं के द्वारा मुफ्त टीकाकरण किया जाता है। परन्तु अज्ञानता और अंधविश्वास के कारण, खासकर देहातों तथा शहरी झुग्गी-झोपड़ियों में टीकाकरण के प्रति जागरुकता का अभाव है। फलस्वरुप वहां के बच्चे रोगग्रसित हो जाते हैं तथा प्रर्याप्त एवं संतुलित आहार की कमी के कारण कुपोषण के शिकार हो जाते हैं। अत: निर्धारित अवधि पर टीकाकरण आवश्यक होता है।

6. **सामाजिक पहलू**:-आर्थिक पिछड़ापन, अज्ञानता, अंधविश्वास तथा परिवार में अधिक बच्चों का होना सामाजिक बेड़ियां हैं। सामान्य एवं स्वास्थ्य शिक्षा तथा संकल्प का अभाव इन बेड़ियों को तोड़ने में बाधक हैं।

उपर्युक्त कठिनाइयों पर काबू पाने के लिए निम्न बातों पर गौर करना आवश्यक होगा:-

आहार-पर्याप्त तथा संतुलित आहार महिलाओं के लिए गर्भधारण के समय से ही आवश्यक होता है। सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाओं के माध्यम से आम लोगों को आहार-संबन्धित जानकारी दी जानी चाहिए। आर्थिक पिछाड़पन, अज्ञानता तथा अंधविश्वास पर काबू पाने के लिए शिक्षा का प्रसार आवश्यक है। बच्चों का विकास पौष्टिक तथा पर्याप्त संतुलित आहार पर ही निर्भर है। कुपोषित दम्पत्ति कभी भी सफल माता-पिता नहीं बन सकते।

संक्रामक तथा अन्य रोगों का निदान:-गर्भावस्था में महिलाओं को टेटनस से बचाव के टीके तथा उनकी लम्बी बीमारियों का इलाज स्वस्थ बच्चा पैदा होने के लिए अत्यंत ही आवश्यक हैं। संक्रामक रोगों से बचाव के लिए सारे उपलब्ध टीके दिये जाने चाहिए। रोगग्रस्त बच्चे आसानी से कुपोषण के शिकार हो जाते हैं, अत: इसकी जानकारी का प्रसार घर-घर में किया जाना चाहिए।

छोटा परिवार सुखी परिवार का नारा जन-जन का नारा होना चाहिए। परिवार कल्याण कार्यक्रम को गांव-गांव में पहुंचाना होगा। स्वस्थ बच्चे ही देश के सशक्त नागरिक बन सकते हैं, अत: इस मूलमंत्र को सबों को जानना होगा। गरीबी उन्मूलन, साक्षरता प्रसार कार्यक्रम को मुस्तैदी से लागू करना होगा। चिकित्सा इकाई को ग्रामीण स्तर पर मजबूती तथा दृढ़संकल्प के साथ चलाना होगा। ग्रामीण विकास को चरितार्थ करके ही हम कुपोषण को समाप्त कर सकते हैं, और कल के नागरिकों के सबल कंधों पर देश की रक्षा, अखंडता एवं एकता का भार सौंप सकते हैं।

सेहत-सलाह

आप अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का निदान राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हमारे स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. एस० एन० आर्य से पा सकते हैं। समस्याएं निम्नलिखित पते पर भेजें।

डॉ. संतोष कुमार,
प्रभारी, सेहत सलाह, विचार दृष्टि
'बसेरा', -पुरन्दरपुर, पटना-800001

सृजनहारों से

- रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किये जाने का प्रयास रहेगा।
- रचना एक तरफ टंकित या स्पष्ट लिखी होनी चाहिए। रचना के अन्त में उनके मौलिक, अप्रकाशित तथा अप्रसारित होने के प्रमाण-पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें।
- रचना के साथ पासपोर्ट/ स्टाम्प आकार की रचनाकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियां अवश्य संलग्न करें।
- यदि आप अस्वीकृत रचना वापस चाहते हैं तो कृपया अपना पता लिखा, डाक टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें।
- रचना भेजते वक्त यह अवश्य देख लें कि लिफाफा पर आवश्यक डाक टिकट लगे हैं या नहीं।

संपादक: राष्ट्रीय विचार पत्रिका
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001, दूरभाष-0612-228519

शहीदे आजम की विचारधारा का दुर्लभ साक्ष्य कहां गया ?

भगत सिंह की चार पुस्तकों की पांडुलिपियां गायब

❑ शशि भूषण

27 सितम्बर, 99 को जब शहीदे आजम तथा भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के क्रांतिकारी नायक **भगत सिंह** की 92वीं जयंती सारे देश में मनायी गई तब भी एक विडम्बना है कि आजादी के 52वर्ष बाद भी उनके जीवंन से जुड़े अनेक दस्तावेजों और प्रसंगों पर अब भी रहस्य का पर्दा पड़ा हुआ है। कहा जा रहा है कि भगत सिंह ने अपने अंतिम दिनों में 1929 से 1931 तक लाहौर जेल में नोट्स लिखे थे जो उनकी गंभीर और विचारशील क्रांतिकारी पहलू पर नयी रोशनी डालते हैं। यह नोट बुक एक महान् विचार यात्रा का दुर्लभ साक्ष्य है जिसमें केवल अंग्रेजों को देश से निकालने तक ही नहीं बल्कि आजादी के बाद बननेवाले नए भारत के स्वरूप पर भी भगत सिंह के गहराई से किए गए चिंतन का समावेश है।

भगत सिंह के साथी शिव वर्मा सहित अनेक इतिहासकारों ने इस तथ्य की चर्चा की है कि जेल में भगत सिंह ने चार पुस्तकें लिखी थीं - **आत्मकथा, समाजवाद का आदर्श भारत में क्रांतिकारी आंदोलन, तथा मृत्यु के द्वार पर** अनुमान है कि ये नोट्स इन्हीं पुस्तकों की तैयारी के लिए थे। दुर्भाग्यवश इन चारों पुस्तकों की पांडुलिपियां आज उपलब्ध नहीं हैं। आश्चर्य की बात तो यह भी है कि जेल में लिखे गए भगत सिंह के एक ऐसे ही नोटबुक का प्रकाशन उनकी शहादत के 63 वर्ष बाद 1994 में हो सका और इस महत्वपूर्ण घटना की अनदेखी हुई। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन पांडुलिपियों के गायब होने की कहानी भी रहस्यमय है और इसमें किसी साजिश से इनकार नहीं किया जा सकता है।

ध्यातव्य है कि **इतिहासकार जी० देवल** ने अपने एक लेख में भगत सिंह के एक नोटबुक का उल्लेख किया है। यह 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह को फांसी दिए जाने के बाद अन्य सामानों के साथ उनके परिवारवालों को सौंप दी गयी थी। श्री देवल ने इसे भगत सिंह के छोटे भाई कुलवीर सिंह के पास देखा था और इसे प्रकाशित किए जाने की मांग उठाई, पर इस पर ध्यान नहीं दिया गया।

एक और बिडम्बना यह देखिए कि भारतीय इतिहास के इस दुर्लभ दस्तावेज का विस्तृत अध्ययन करके इस पर एक लंबा लेख सर्वप्रथम एक रूसी विद्वान लेखक **एल. वी. मित्रोखिन** ने लिखा और इसकी प्रतिलिपि कराकर मास्को संग्रहालय में रखवायी। इसकी एक छायाप्रति दिल्ली के तीनमूर्ति भवन स्थित नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय में भी थी लेकिन इसपर यहां कोई शोध नहीं हुआ।

गुरुकुल कांगड़ी के तत्कालीन कुलपति **जी. बी. कुमार हुजा** तथा **'इंडियन बुक क्रानिकल'** के सम्पादक **भूपेन्द्र हुजा** के प्रयासों से इस नोटबुक की प्रामाणिकता की पुष्टि के पश्चात् पहली बार 1994 में यह पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष और दूसरों के लिए आत्म बलिदान के विचारों से भगत सिंह की नोटबुक भरी हुई है। एक जगह वह थामस जेफरसन के यह प्रसिद्ध कथन लिखते हैं - **आजादी के पौधे को समय-समय पर देशभक्तों और तानाशाहों के खून से सींचा जाना पड़ता है। यह इसकी कुदरती खाद है।** एक अन्य स्थान पर उन्होंने **पैट्रिक हेबरी** के भावपूर्ण शब्द नोट दिए - **क्या जिन्दगी इतनी प्यारी है और चैन इतना मीठा है कि वेदियों और दासता की कीमत पर उन्हें खरीदा जाये।**

अमरीकी समाजवादी **यूजीन डेब्स** के एक कथन को उन्होंने अपने आदर्श वाक्य के रूप में लिखा है-

"जबतक दुनिया में निम्न वर्ग है मैं उसमें शामिल हूं। जबतक कोई भी जेल में है मैं भी स्वतंत्र नहीं हूं।"

संक्षिप्त, सारगर्भित शीर्षकों के साथ लिखे गए ये नोट्स भगत सिंह की व्यक्तिगत भावनाओं को प्रतिबिम्बित करते हैं। वह आजादी के लिए तड़प रहे थे, इसलिए उन्होंने वायरन व्हिटमैन, बर्डसवर्थ आदि की स्वतंत्रता विषयक पंक्तियां अपनी कापी में उतारी। क्रांतिकारी वेरा फिग्नर तथा मोरोजोव की रचनाओं से जेल जीवन की कठिनाइयों के जो उद्धरण उतारे, वे उनकी मनोभावनाओं को दर्शाते हैं।

नोटबुक के पृष्ठों पर हमें ऐसी वैचारिकता, स्पष्टता तथा मानवता के उज्ज्वल भविष्य में ऐसा दृढ़ विश्वास दिखाई देता है कि यह यकीन नहीं होता कि इन्हें मात्र 22 वर्ष के ऐसे नौजवान ने लिखा है जिसके सिर पार फांसी का फंदा झूल रहा था।

जिस स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए शहीदे आजम भगत सिंह सरीखे नौजवान हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए, आजादी के बाद आज के नेताओं की मनोभावनाओं पर जब आप गौर करेंगे तो शर्म से आपका सिर झुक जाएगा। क्या हमारे प्रतिनिधियों पर इन सभी विचारों का असर पड़ेगा ?

संपर्क : सी०सी०टी०, सी०-5, गणेशनगर, तिलकनगर, नई दिल्ली-18

सरदार पटेल - जयंती की शुभकामनाओं के साथ

CHARAK PHARMA

Stockist for :

Themis, Wander, Searle, Lupin, Caldern, Sona Pharma Lab., elder, Gluconate, Amritanjan, Gujarat Lab., Orbits, Stadmed

Govind Mitra Road, Patna-800004

Ph. : 651858

हिन्दी साहित्य का एक ज्योतिर्मय दीप बुझ गया

❑ सिद्धेश्वर

जो अतीत है, जो गत-विगत है, जो कांत है, उसके आइने में ही व्यक्ति अपने वर्तमान को संवारता है और भविष्य की योजना बनाता है। और यादें? वे केवल खंडहर नहीं, वे वह चन्दन भी है, जिसके लेप से मन-वृन्दावन महक उठते हैं। यह सत्य है कि दिल्ली स्थित कार्यालय, भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **लेखापरीक्षा प्रकाश** के सम्पादक **आत्माराम फोन्दणी कमल** आज हमारे बीच नहीं हैं पर उनकी यादें शेष बच रही हैं। उनके साथ बीते क्षण, उनकी हास्य और विनोद भरी बातें, उनके होठों पर सदैव मुस्कराहट, राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा उसकी समृद्धि में किए गए योगदान सब कुछ एक-एक कर हमारे मानस-पटल पर अंकित हैं और रह रहकर मन स्फूर्ति से भर आते हैं। एक मात्र चिन्ता है कि उन यादों को शब्दों में परिणत कर कागज के पन्नों पर उड़ेल दूं क्योंकि हमारा दायित्व हमें अन्दर से कुरेद रहा है। आज उसी दायित्व के निर्वाह में कुछ कहने जा रही है हमारी कलम आत्माराम जी के बारे में।

सर्वप्रथम मैं याद करता हूं उस सुनहरे दिन को जब राष्ट्रीय विचार मंच ने **"स्वतंत्रता-संग्राम की पृष्ठभूमि में हिन्दी एवं विधि पत्रकारिता की दशा और दिशा"** विषय पर दिल्ली के भगवान दास रोड स्थित भारतीय विधि संस्थान के सभागार में विचार संगोष्ठी सह काव्य-संध्या का आयोजन किया था जिसका संचालन स्वयं आत्माराम जी द्वारा किया गया था। और मुझे यह भी याद है कि उनकी सद्यः प्रकाशित पुस्तक **अर्द्धशती यूं बोली** का लोकार्पण **डॉ० विजय नारायण मणि** ने किया था। हिन्दी जगत के सुप्ररिचित रचनाकार **गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव**, अपर उपनियंत्रक-महालेखापरीक्षक, नई दिल्ली की अध्यक्षता में हुई इस गोष्ठी में हिन्दी एवं संस्कृत के उद्‌भट्ट विद्वान माननीय न्यायमूर्ति श्री बी० एल० यादव के अतिरिक्त डॉ० विजय नारायण मणि, जे०एन०पी० सिन्हा, प्रो० कुमार सुरेश, नारायण खान, सिद्धेश्वर, डॉ० बी० के० झा, डॉ०बी०के० मोहन्ती, अवधेश शर्मा, अवधेश कुमार सिन्हा, सतीशचन्द्र पन्त, डॉ० राजेन्द्र गौतम, राजगोपाल सिंह, मिथिलेश श्रीवास्तव, सुशीला सितारिया तथा डॉ० मेदिनी राय जैसे लोग उपस्थित थे। इस संगोष्ठी की चर्चा इसलिए की जा रही है कि संचालक आत्माराम जी ने अपने संचालन के क्रम में जो उद्‌गार व्यक्त किए वे उनका राजभाषा के प्रति इतना समर्पित होना चकित करता है क्योंकि एक अधिकारी के पद पर कार्यरत रहते हुए भी राजभाषा के प्रति इतनी प्रतिबद्धता तथा उसके उन्नयन के लिए निर्बाध रूप से काम करना सबों के लिए प्रेरणादायक रहा।

कुछ लोग युग और सीमाओं को लांघने की क्षमता रखते हैं और आत्माराम जी निश्चय ही उनमें से एक थे। इस क्रम में उनके काव्य-संग्रह **अर्द्धशती यूं बोली** की कविताओं की चर्चा करना इसलिए लाजिमी प्रतीत होता है कि इनसे उनकी भावनाओं का पता चलता है। उनकी कविताओं में राष्ट्र प्रेम एवं राष्ट्रभाषा से लगाव सहज ही परिलक्षित होता है। उनका चिन्तन बहुमुखी था। उनकी राष्ट्रीय अवधारणाओं की तरंगवती सरिता भारतीय समाज के लोक जीवन की ओर प्रवाहित थी। आत्माराम जी की भाषाशैली सबसे अलग किस्म की थी जिसमें गोमुख फूटती गंगा की भांति अबाध प्रवाह रहता था। उनके शब्द अन्तस को छूते जान पड़ते थे। **शब्द-विवेक सिद्ध साहित्यकार की पहली पहचान है। किस शब्द का कहां प्रयोग हो, जो सटीक, सक्षम और प्रभावोत्पादक हो, सन्दर्भ को ज्योतिर्मय बनाने में समर्थ हो, इसके लिए प्रत्येक सिद्ध सर्जक जागरूक एवं पर्यत्नशील रहता है। फोन्दणी जी एक ऐसे ही असाधारण सर्जक थे जो शब्द-विवेक के द्वारा साधारण शब्दों में नयी प्राण प्रतिष्ठा कर देते थे। हिन्दी गद्य के वे अप्रतिम शब्दकार थे।**

सृजन और सृजनहार आत्माराम जी को जैसे भीतर से खींचते थे। इसीलिए अपने अतिव्यस्त सामाजिक जीवन में से वे कुछ न कुछ समय निकाल लेते थे और साहित्य से अपने प्रगाढ़ रिश्ते को कुछ और मजबूत कर डालते थे। आत्माराम जी एक संस्कृति कर्मी मानवीय मूल्यों के पक्षधर और हिन्दी व संस्कृत साहित्य के शिखर निर्माता कलाकार थे इतना सब कुछ होते हुए भी वे नितान्त सहज एक ग्रामीण-सी सादगी वाले व्यक्ति थे। बेहद नम्र और भावुक एवं साधनारत तपस्वी। वे सादा जीवन उच्च विचार रखनेवालों में थे और उन्होंने आजीवन यह व्रत निभाया।

हिन्दी भाषा-जिसने इस देश को सुषुप्ति से जगाकर आजादी का प्रकाश दिलाया, के अन्यतम-साधक **आत्माराम फोन्दणी 'कमल'** को अनेक सम्मान उनके कृतित्व, मानवतावादी दृष्टिकोण, सदाशयता एवं राजभाषा हिन्दी की सेवा के लिए मिले। आत्माराम जी जैसे व्यक्ति कभी-कभार ही जन्म लेते हैं। इस अनन्य सेवक ने साहित्य की धरती पर लगभग पांच दशकों तक जो अमूल्य निधि बरसाई वह सचमुच एक व्यक्ति नहीं अपितु आन्दोलन था। वे अन्धकार के समय में आलोक की एक जादूई किरण थे। इनकी कृतियों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि इनका भावफलक अत्यन्त व्यापक और विस्तीर्ण था। व्यक्तिगत सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों के अतिरिक्त राष्ट्र, मानवात्मा और परमात्मा विषयक इनके भाव विचार एवं उक्तियां भारतीय दर्शन और आध्यात्म से विशेष प्रभावित हैं। दर्शन आध्यात्म के साधक फोन्दणी जी रचनात्मक जीवन दर्शनवाले सच्चे कर्मयोगी थे। उनकी कृतियों में साम्प्रदायिक सद्‌भाव के फलक तो मिलते ही हैं राष्ट्रीय चेतना तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता भी स्पष्ट झलकती हैं। देखें उनके काव्य-संकलन **अर्द्धशती यूं बोली** से ली गयी कुछ पंक्तियों को।

खूब नचाओ आजादी की स्वर्ण जयंती डोली
कथनी-करनी भिन्न देखकर अर्द्धशती यूं बोली।
आजादी के परवानों की कुर्बानी सब धो ली
"हर शाख पे उल्लू बैठा है" यह कथनी सच्ची हो ली।

राष्ट्रभाव से उभरे इनके एक चित्र को और देखें-

क्या छाती पर पत्थर रख अब अंग्रेजीयत झेल सकूंगा?
बची हुई आयु के छिन पल अमन चैन से ठेल सकूंगा?

और सचमुच अपनी शेष उम्र को चैन से नहीं ठेल सके।

मैं नहीं जानता, उनके सानिध्य में मैं कब आया। किन्तु इतना अवश्य है कि हमारे मिलने में सघनता तब आई जब अपने महालेखाकार कार्यालय, पटना से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **प्रहरी** के सम्पादक की हैसियत से उनसे मिला। दिल्ली के मुख्यालय में **प्रहरी** की प्रति देखकर न केवल उन्होंने अपनी प्रसन्नता जाहिर की बल्कि इसे त्रैमासिक करने की सलाह भी दी। मुझे इस बात की खुशी है कि आत्माराम जी के सुझाव को कार्यान्वित करते हुए **प्रहरी** अब नियमित रूप से त्रैमासिक होकर निकल रही है। यों तो वे हमें बड़े भाई कहकर संबोधित करते थे पर व्यवहार में मैं उनसे छोटे भाई-सा स्नेह पाता था। बाद फिर उसके जब **राष्ट्रीय विचार मंच** की दिल्ली शाखा का गठन हुआ और वे उसकी कार्यकारिणी के एक सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए तब तो हमारा संपर्क घनिष्ठता में बदल गया। तब से जब भी मैं उनसे नई दिल्ली के बहादुरशाह जफर मार्ग स्थित भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के कार्यालय में मिला, घंटों उनसे बातें होती थी कारण कि वे प्रशासन अधिकारी के पद पर आसीन हो राजभाषा अधिकारी थे और मुख्यालय से प्रकाशित विभागीय पत्रिका **लेखापरीक्षा प्रकाश** के

बैठते थे, विचार-विमर्श में सदैव साथ रहे। अच्छा लिखने, सीखने और परस्पर सहयोग करने की बातें हमेशा होती रही। दुर्भाग्य यह कि फोन्दणी जी के निधन के कुछ माह पूर्व जगन्नियंता के क्रूर हाथों ने अंसारी जी को भी हमसे छीन लिया। कैंसर की जानलेवा बीमारी से वे भी बच नहीं पाए। तब से, सच मानिए वह कमरा ही सूना हो गया जो कभी फोन्दणी और अंसारी के प्रगाढ़ प्रेम से गुंजायमान रहता था।

आत्माराम जी में अपूर्व धैर्य, साहस और तितिक्षा का संबल था। अस्तु उन्होंने अपने दुख-क्लेश और आंसुओं को अन्दर ही अन्दर सहा, उन्हें प्रकट नहीं होने दिया और न किसी हीन भावना को अपने पास फटकने दिया। वस्तुतः जीवन और संवेदना का संबल लेकर पनपनेवाले अक्षयवर आत्माराम जी ने संघर्षमय परिस्थितियों एवं कंटकाकीर्ण मार्गों में अपनी दृढ़ता को बनाए रखा।

जातस्य दिध्रुवं मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च

अर्थात जन्म लेनेवाले की मृत्यु और मरनेवाले का जन्म सुनिश्चित है। इस ब्रह्मसत्य को स्वीकारना ही अस्तिकता है। सो आत्माराम जी अनन्त में विलीन हो गए हैं 1 अगस्त, 1999 को। इसपर विश्वास तो नहीं होता पर सत्य बहुत कठोर है और कलम का कर्ज चुकाने के लिए वे अपने अन्तिम समय तक लिखते रहे जिसका प्रतिफल है **लेखा परीक्षा प्रकाश** का चौतालीसवां अंक। इस अंक का पन्ना-पन्ना उनकी जीवन्त लेखनी का द्योतक है। इसकी हर रचनाओं पर उनकी सम्पादकीय टिप्पणी इस बात का साक्षी है कि वे कलम के जादूगर थे। **उपमहालेखाकार किशोरीलाल** के लेख पर की गई टिप्पणी से यह स्पष्ट झलकता है कि आत्माराम जी कि पकड़ न केवल गंभीर विषयों पर थी बल्कि प्रेम, श्रृंगार, नैतिकता, यौन, आदि में भी उनकी गहराई असाधारण थी। उन विषयों में उनकी पैठ काबिले तारीफ थी। यही कारण है कि हिन्दी के कार्यान्वयन की अदम्य चाहना एवं अनवरत प्रयास से कार्यालय के कर्मचारियों/अधिकारियों के बीच वे श्रद्धा एवं आदर के पात्र ही नहीं बने बल्कि अपने अध्ययनशील और सृजनात्मक क्षमता के द्वारा विद्धतजनों के बीच भी सर्वदा प्रतिष्ठा पाते रहे। आखिर तभी तो मुख्यालय, नई दिल्ली में पदस्थापित इनके तत्कालीन उपनिदेशक(राजभाषा) और सम्प्रति वरीय उपमहालेखाकार, बिहार, पटना **श्री जी०सी० एल० श्रीवास्तव** आत्माराम जी के निधन का समाचार सुनकर अत्यन्त भाव विह्हल हो उठे।

इसी प्रकार अपर उपनियंत्रक- महालेखापरीक्षक **श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव** ने इनके काव्य संग्रह **अर्द्धशती यूं बोली** पर इन शब्दों में अपने अभिमत व्यक्त किए हैं -

हिन्दी में गीत तो बहुत लिखे गए हैं और लिखे जा रहे हैं किन्तु अपने ही देश में उसी हिन्दी की वर्तमान स्थिति को विषय बनाकर गीत लिखना एक अलोकप्रिय प्रसंग रहा है एवं स्वार्थपरक राजनीति के धरातल पर पनपनेवाली अवसरवादी व्यवस्था की नींद में खलल डालने का कार्य भी कर सकता है। फिर भी जोखिम उठाते हुए **आत्माराम फोन्दणी कमल** ने हिन्दी तथा उसकी अस्मिता को सालते हुए उन उन तमाम अनछुए बिन्दुओं को लेकर अनेक गीतों का सृजन किया है जिन्हें हम देखकर भी प्रायः अनदेखा करते आए हैं। **अर्द्धशती यूं बोली** नामक उनके नवीनतम काव्यसंग्रह में उनके वे छप्पन गीत संकलित हैं जो किसी न किसी रूप में अंग्रेजी के व्यामोह के चलते स्वाधीनता के पांच दशकों बाद भी अपने ही गृह में बेगानी हुई हिन्दी की त्रासदी के अनेक आयामों के इर्द-गिर्द मंडराते रहते हैं और स्वराष्ट्र के प्रति निष्ठा रखनेवाले किसी भी भारतीय के मर्म को छू जाने की क्षमता रखते हैं।

जब तक वे जीवित रहे हिन्दी साहित्य की सेवा में मन-प्राण से लगे रहे। उनके आसामयिक देहावसान से राष्ट्रभाषा हिन्दी ने अपना एक अनन्य सेवक खो दिया। किसी शायर की रूबाई की ये पंक्तियां मुझे याद आती हैं-

"वक्त दरवाजे पर आया है, ठहर जाने को,
कौन आता है सदी वक्त यूं मनाने को,
कलम का कर्ज चुका और रोशनी से लिख
लाखों सूरज हैं सरेराह फिर जगाने को।"

यह सत्य है कि **आत्माराम फोन्दणी कमल** जी अब हमारे बीच नहीं हैं किन्तु हिन्दी साहित्य जल में अपने उपनाम **कमल** के रूप में सदैव खिलते रहेंगे। इस नश्वर संसार में हर चीज टूटने के लिए ही बनती है। लगता है हमारा उनका अथवा हमारे सरीखे सैकड़ों उनके शुभेच्छुओं का संपर्क भी टूटने के लिए ही बना था। फोन्दणी जी वीतराग पुरुष की भांति जीवन के अधीती थे और भोक्ता भी। सुख के प्रति कोई स्पृहा नहीं, दुख में किसी प्रकार की कोई उदिग्नता नहीं। फोन्दणी जी अपने पीछे **भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग** के हजारों शुभचिन्तकों के साथ-साथ हिन्दी जगत के सैकड़ों प्रशंसकों को छोड़ गए हैं। वे अविस्मरणीय हैं। विभाग के धरोहर के रूप में वे हमेशा स्मरणीय हैं। उनकी विलक्षण प्रतिभा और मेधा से प्रसत उनका दिप्तिमय कृतिकाय अपनी दिव्यता और तेजस्विता का प्रभामंडल अक्षुण्ण रूप में प्रोद्भाषित होता रहेगा। उनकी कर्मठता, पौरुष और सृजनशीलता के सामने मैं मन ही मन नतमस्तक हूं। सच कहा जाय तो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान उसके आचरण एवं चिन्तन से होती है। आत्माराम जी के आचरण में **साई इतना दीजिए जामे कुटुम समाय** हू-ब-हू उतरता दिखता था। सुन्दर विचार रखने तथा सुन्दर साहित्य की रचना करने वालों में यदि आचरण की सभ्यता और कर्म-सौंदर्य भी हो तो उसका व्यक्तित्व साहित्य की देव-प्रतिमा बन जाता है। आत्माराम जी का व्यक्तित्व ऐसा ही बन गया था। जिन लोगों ने उन्हें करीब से देखा, वे मेरा आशय ज्यादा अच्छी तरह समझेंगे।

आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं मैं इन पंक्तियों से उनकी स्मृति को नमन करता हूं-

दूर कहीं एक बस्ती होगी, जिसमें बैठ वो हंसते होंगे,
बादल ही बादल पर देखो, रख रख पांव वो चलते होंगे।
साथ में उनके तारे होंगे, गुजरे लम्हे सारे होंगे,
अर्श पर बैठे देख वो हमको, देर देर तक तकते होंगे।

संपर्क : 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1, दूरभाष: 0612-228519

THE PHOTO MAKERS
The Photo Makers
AUTOMATIC COLOUR LAB
6-7, Sheohar Sadan, Fraser Road, Patna - 800001 INDIA
PHONE : 224868, 222955. Pgr. : 962571952

सरदार पटेल जयंती की शुभकामनाओं के साथ

निबंधन सं.- 13 पी. वर्ष 1955-56, दूरभाष : 352480

पीपुल्स को-आपरेटिव हाउस कन्सट्रक्शन सोसाइटी लि.

कंकड़बाग, पटना-20

सूचना :

1. समिति के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि वे अपना नॉमिनी भरकर दे दें।
2. लीज डीड के प्रावधान के अनुकूल सभी सदस्यों को अपने भूखंड की मालगुजारी का भुगतान करना अनिवार्य है।
3. जिन सदस्यों ने अपने भूखंड एवं मकान की बिक्री समिति की अनुमति के बिना कर दिये हैं उनके आवंटन को रद्द कर लीज डीड के प्रावधान के अनुसार अन्य व्यक्तियों का सदस्य बनाकर या अन्य सदस्य, जिनको भूखंड आवटित नहीं की गई है उन्हें भूखंड आवटित कर दी जाएगी।
4. जिन सदस्यों ने अभी तक मकान नहीं बनाया है उनके भूखंड आवंटन को लीज डीड के प्रावधान के अनुसार रद्द कर अन्य सदस्यों को, जिन्हें अभी तक भूखंड नहीं मिला है उन्हें आवंटित करने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी जाएगी।
5. समिति की आम सभा इस वर्ष माह नबम्वर - दिसम्बर 99 में आहूत की जाएगी।

प्रो० (डॉ०) गोपाल कृष्ण सिन्हा	मिथिला शरण सिन्हा	सिद्धेश्वर प्रसाद
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अवैतनिक सचिव

भ्रम

❑ डा० एच०एन० सिंह

मानव-जीवन गुण-अवगुणों की खान है। इन दोनों के संतुलन में ही जीवन की सार्थकता है। दुर्गुणों से रहित मनुष्य महात्मा की उपाधि प्राप्त करता है। महात्मा बनना सबके नसीब की बात नहीं है। जहां तक किसी न किसी रूप में ख्याति की बात है, वहां गुण-अवगुण दोनों के अपने महत्व हैं। अवगुण से भी ख्याति की पराकाष्ठा तक पहुंचा जा सकता है। मुझे दुर्गुणों से परहेज नहीं। मेरे व्यक्तित्व में भी दोनों का चोली-दामन का साथ है। परन्तु कुछ सीमा तक। अपने पड़ोसियों की खुशियाली, सम्पन्नता, उन्नति आदि को देखकर ईर्ष्या होती है। परन्तु कोशिश होती कि मेरे मन के अन्दर कोई झांक नहीं पाये। समाज की मानसिकता के अनुसार मेरी भी संतोषजनक नौकरी है जो दो जून पेट भरने के लिए पर्याप्त है। नौकरी करके यद्यपि लखपती नहीं बना सकता परन्तु परिवार-रूपी गाड़ी को आसानी से खींचा जा सकता है।

मेरे मुहल्ले में दो सज्जन रहा करते हैं। वे सुसम्पन्न, नेकदिल, परोपकारी और सुशिक्षित हैं। वे मानवतावादी हैं। शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, अन्याय के खिलाफ सदैव संघर्षरत रहते हैं। मानवीय गुणों से सुसम्पन्न होने के कारण उन्हें समाज में सम्मान प्राप्त है। सभा-सोसाइटी, समारोह, विवाह, पूजा-अनुष्ठान आदि इनके कर-कमलों के बिना सम्पन्न नहीं होता। समाज का विधान है कि जब तक किसी कर कमल के रूप में परिवर्तित नहीं होते तब तक उसके कर-कमलों का सदुपयोग नहीं होता। कर को कमलवत् बनाने के लिए पढ़ा-लिखा होना कोई आवश्यक नहीं है, खाना-पकाते-पकाते कभी-कभी कर कमल युक्त बन जाते है और समाज में उसकी आवश्यकता और ख्याति बढ़ जाती है। मेरे पड़ोसी सज्जनों को प्रायः मुख्य अतिथि बनने का निमंत्रण मिलता। मेरे भी दो कर हैं परन्तु उनमें कमल का अभाव है। इसके लिए मैं भाग्य और भगवान दोनों को कोसता। अखबारों में उनके नाम को देखकर मेरे हृदय में सांप लोटने लगता। मेरी भी इच्छा होती कि यदि कभी मेरा नाम अखबार में निकलता तो पड़ोसी एवं परिचित मित्र पढ़ते और मैं चर्चा का विषय बनता।

प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसे समाज और राष्ट्र जाने, पहचाने और सम्मान की दृष्टि से देखे। मेरे में भी मानवीय कमजोरियां हैं। मैंने निश्चय किया कि मैं उन पड़ोसियों से सम्पर्क स्थापित कर मेल-जोल बढ़ाऊं ताकि जमीन में रेंगते लता की भांति सहारा लेकर आगे बढ़ूं। उनके साथ विविध प्रकार के समारोह में जाया करूं ताकि अखबार में मेरा नाम कम से कम एक बार तो निकले। भाग्य ने मेरा साथ दिया। वे जहां कहीं भी समारोह में जाते मुझे भी साथ चलने को कहते। स्कूटर के स्टेपनी की भांति मैं मौके-बे-मौके उनका काम आता। मैं उनके साथ जाता। परन्तु श्रोता ही बना रहता। मैंने हिम्मत नहीं हारी। पढ़ रखा था असफलता ही सफलता की कुंजी है। अब मुझे लोग पहचानने लगे। मेरी वही स्थिति बनी जो मंत्री के साथ रहते-रहते चमचों की।

लोग धन-सम्पत्ति, विद्या-बुद्धि, सन्तान के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करता कि मेरे पड़ोसी सज्जन बीमार पड़ जाते या कहीं बाहर चले जाते। उस समय कहीं से मुख्य अतिथि बनने का निमंत्रण आता। उन्हें न पाकर मुझे ही अतिथि बनने का आग्रह करते। अपनी महत्ता और व्यस्तता प्रदर्शित करने के लिए पहले 'ना-ना' कहता फिर अपनी स्वीकृति दे देता।

ईश्वर ने मेरी आर्त्तनाद सुन ली। एक दिन मैं अपने बरामदे बैठकर पत्र लिख रहा था। पत्नी बच्चों को लेकर मुहल्ले में ही किसी के घर गयी थी। उस समय मेरे एक अन्तरंग मित्र आए। वे पेशे से वकील हैं। मुझे बड़े भैया कहकर सम्बोधित करते हैं। मालूम नहीं मैं उनसे बड़ा हूं या छोटा। पर मेरी पत्नी को भाभी कहने का पूरा हक मिल जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि वकील साहब चरित्रवान नहीं हैं। उन्हें कितने लोगों को लाल किले में स्थान दिलाने का रिकार्ड है। वे मेरे पास मुख्य अतिथि की खोज में आये थे। उन्हें दूसरी जगह निराशा हाथ लगी थी। आखिर वही हुआ जो मैं चाहता था। उन्होंने मुझे मुख्य अतिथि बनने का आग्रह किया। यह मेरे जीवन का स्वर्णिम अवसर और दिन था। उन्होंने 'छौ-नृत्य' प्रदर्शन का आयोजन कर रखा था। गर्मी के दिनों में नेताओं और पानी की एक ही स्थिति रहती है। बहुत मुश्किल से मैंने वकील साहब के अनुरोध पर हामी भर दी। चूंकि मैं अपनी कमजोरी को छिपाना चाहता था। मैंने शर्त्त रख दी कि कार्ड और परचे में मेरे नाम छापे जायं। वकील साहब मेरी स्थिति को जानते हुए भी नजर अन्दाज कर गये और उन्होंने मेरी शर्त्त स्वीकार कर ली। टेकनीकल डिफीकल्टी के बावजूद मैंने वकील साहब को भरपूर नास्ता कराया। मुझसे अधिक उत्साह मेरी धर्मपत्नी में था, कारण मुझे मालूम नहीं। लोग समाज और देश के बारे में सोचते हैं। मैं अपने बारे में सोचता हूं। मेरी निश्चित धारणा है कि लोग अपने बारे में सोचे, अपने को उन्नतशील बनाने का प्रयत्न करें तो देश स्वतः आगे बढ़ेगा।

आखिर वह दिन आ गया। मेरे जीवन का स्वर्णिम छण। मैं इतना खुश था कि सुबह होने के इन्तजार में रात को ठीक से सो नहीं सका। सुबह से ही जाने की तैयारी करने लगा। शायद महर्षि नारद को भी स्वयंवर में जाने के लिए इतना करना पड़ा हो। मुझे लिवा लेने के लिए वकील साहब स्वयं आ गये। मेरे साथ और दो सज्जन हो गये। मैंने उनकी ख्याति सुन रखी थी। मैं मन ही मन भयभीत था। लेकिन मन को सांत्वना देता कि चलो इनका नाम पर्चे में नहीं है। छपी बातें ऐतिहासिक दस्तावेज हुआ करती हैं। हम लोगों के साथ शहर के दूरदर्शन वाले भी थे। गांववाले रेडियो और दूरदर्शन को अजीबोगरीब वस्तु मानते हैं। पढ़ा-लिखा होने के कारण मैं भी इनके महत्व को थोड़ा-बहुत समझता था। समारोह रात को होना था। भारतीय परम्परा के अनुसार हमलोग कोई दो घंटे लेट पहुंचे। आगवानी के लिए लोग घंटों से प्रतीक्षारत थे। हमलोगों का पहुंचने पर इतना भव्य स्वागत हुआ जितना जिला स्तर के नेताओं का होता है।

स्थानीय भाग्य विधाता से हम लोगों का परिचय कराया गया। भाग्य-विधाता जी खुले बदन में थे। इनके खुले बदन को देखकर हम निर्णय करने में असफल रहे कि ये झारखण्डी संस्कृति के प्रतीक हैं या सादगी की प्रतिमूर्ति या देश की आर्थिक स्थिति के परिचायक। नेताजी ने अपना लम्बा कद मेरी ओर बढ़ाया जो अत्यन्त ही कोमल था, पर इस समय कमल नहीं। कद तो समय, परिस्थिति एवं स्थान के अनुसार कमल हुआ करते हैं। मैं उनके नंगे बदन को देखकर पूछ बैठा-आप इस समय, ऐसे......। स्नान करने जा रहा था-उनका जबाब था। यहां के लोगों का यही स्नान का समय है। नेताजी स्नान करना त्यागकर हमलोगों के साथ बैठ गये। मुझे लगा स्वार्थ को त्यागे बिना विश्व का कल्याण असम्भव है। नेताजी झारखण्डी संस्कृति, राजनीति, शोषण, अत्याचार और अन्याय पर लम्बा किन्तु सारगर्भित भाषण देने लगे। सियार को खाने के बाद भूंकने की आदत उसी प्रकार नेताओं को इकट्ठी भीड़ देखकर। मैं भी अपनी बुद्धि का परिचय देना चाहता था। परन्तु उपर्युक्त संदर्भ में कुछ भी कहना अपनी अक्षमता का परिचय देना होता। अतः विषय-वस्तु को बदलते हुए मैंने समाज, साहित्य और भाषा के अन्योन्याश्रय के सम्बन्ध में चर्चा करने लगा। बात काटते हुए नेताजी ने कहा-समाजसेवी या देश-प्रेमी बनने के लिए कागजी डिग्री की आवश्यकता नहीं होती। समाज में परिवर्तन लाने के लिए भाषा-साहित्य की नहीं, बल्कि विचार की आवश्यकता है। अब मेरे अन्तर्मन की आंखें खुलीं। मुझे लगा कि पढ़-लिख कर मैंने अपने पैर में कुल्हाड़ी मार ली है। नहीं पढ़ता तो नेता बनता, राष्ट्रीय वस्त्र पहनता और देशभक्त कहलाता। मेरे पिताजी पढ़े-लिखे न होते तो मैं आज भारतीय इतिहास का प्रमुख पात्र बनता। यह गलती मेरी नहीं, मेरे पिताजी की है।

नेताजी का सारा क्षेत्र प्राकृतिक सुषमाओं से आच्छादित था। वन-जंगल, नदी-नाले, जंगली-जानवर और खान चित्ताकर्षक थे। यहां पर आंखों को चौंकाचौंध करनेवाली बिजली की बत्तियां मानो पेरिस शहर से होड़ ले रही थीं। इस चकाचौंध रोशनी में हमारी वही स्थिति थी जो दिन में उल्लू को होती है। बिजली की रोशनी में सभी वस्तुएं समानता का परिचय दे रही थीं जिस प्रकार भारत-पाकिस्तान युद्ध में देशवासी। हम एक हैं का नारा देते हैं। मालूम नहीं ये रोशनी हमारी आंखों को धोखा दे रही थीं या वास्तविकता का दिग्दर्शन करा रही थी। ज्यों-ज्यों सबेरा हो रहा था त्यों-त्यों हमारी आंखों की रोशनी बढ़ रही थी और रात की चकाचौंध रोशनी धूमिल पड़ती जा रही थी। सबेरे सूर्य की रोशनी में देखा तो आंखों को विश्वास नहीं हुआ कि यहां की मिट्टी काली है, जीवन काला है, पेड़-पौधे अपनी हरीतिमा को छोड़ काले पड़ गये हैं, सारे भूखण्ड के जड़-चेतन, चर-अचर सभी कालिमा का आलिंगन करने को बाध्य हैं। मेरे मस्तिष्क से अखबार टी०वी० और रेडियों का सवार भूत इस कालिमा को देखकर भाग गया।

संपर्क : रांची विश्वविद्यालय, रांची

भारतीय रक्षा प्रणालियों को भी 'वाई-2के' से निपटने में सक्षम होना होगा

❑ डॉ० शुभंकर बनर्जी

कम्प्यूटर से जुड़े 'वाई-2के' की समस्या से भारतीय शस्त्र प्रणाली द्वारा निपटने हेतु उनके मूल निर्माताओं से यथोचित सहयोग लेने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही स्वदेशी तौर पर भी प्रयास जारी है। अतः यदि सन् 2000 से पहले ही इस समस्या का निदान नहीं किया गया तो अगामी वर्ष 2000 के दिनांक 'एक' के बाद प्रयोग के दौरान ये अस्त्र सही ढंग से काम करना बंद कर देंगे।

यह बात तो अब निश्चित हो ही गयी है कि सन 2000 की शुरूआत होने में अधिक माह नहीं बचे रह गये हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारतीय रक्षा विभाग ने भी अपनी कई शस्त्र प्रणालियों के कम्प्यूटरों तथा विभागीय कम्प्यूटर सेवाओं में 'वाई-2के' की समस्या से निपटने का भरसक प्रयास प्रारंभ कर दिया है। देश में कम्प्यूटर्स के प्रयोग के करने वाले दूसरे विभागों की तरह ही रक्षा विभाग भी इस समस्या से निपटने की चेष्टा में काफी व्यस्त है। दरअसल विशेष तौर पर शस्त्र प्रणालियां (जैसे प्रक्षेपास्त्रों, लड़ाकू विमानों, राडारों, टोही तथा दिशा निर्देशित प्रणालियां आदि) को लेकर ही सबसे ज्यादा परेशानी होने की आशंका है जिसका प्रधान कारण यह है कि इन प्रणालियों में प्रविष्ट कम्प्यूटर चिप्स पर आगामी शताब्दी के अंतिम दो शून्य अंकों को सही संदर्भ में पड़ने की समस्या काफी जटिल सिद्ध हो सकती है।

वास्तव में यह समस्या तब उत्पन्न होगी जब सन दो हजार का प्रारंभ होगा तथा तिथि लिखते समय वर्ष के अंतिम दो अंकों को सन 2000 का शून्य लिखा जाए तो यह केवल 19सौ ही पढ़ा जायेगा। इस प्रकार से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वित्तीय सेवाओं, विमान सेवाओं, बैंकिंग उद्योगों की तरह ही भारतीय रक्षा सेवाओं की कई कम्प्यूटर आधारित पुरानी शस्त्र प्रणालियों को भी इस समस्या का समाधान अनिवार्य रूप से करना होगा।

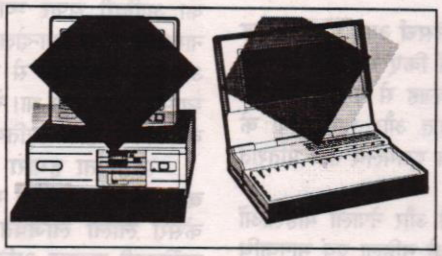

रक्षा मंत्रालय भी यह स्वीकार करता है कि यह समस्या काफी जटिल है। दरअसल इन प्रणालियों में जो कम्प्यूटर चिप्स प्रविष्ट हैं, उन सभी में सुधार करना होगा। जबकि ये चिप्स किसी प्रणाली में हजारों की संख्या में विद्यमान रहती हैं। इन्हें 'एम्बेडेड सिस्टम' कहा जाता है। साथ ही इनकी पहचान तथा यथायोग्य समाधान करने हेतु उच्च स्तर की विशेषताओं में आवश्कतानुसार सुधार हेतु 'मूल शस्त्र निर्माताओं' की सहयोगिता की आवश्यकता भी है। अतः मूल निर्माताओं में इस विषय पर सम्पर्क करने का प्रयास भी जारी है।

संयोगवश अधिकतर भारतीय शस्त्र प्रणालियां सोवियत मूल के ही हैं। अर्थात यदि भारत के ये अस्त्र-शस्त्र अमेरिका व पश्चिम देशों से आयातित होते तो इनसे जुड़े कम्प्यूटर्स की मरम्मत का कार्य कठिन लक्ष्य सिद्ध होता क्योंकि भारत द्वारा परमाणु परीक्षण करने पर इन देशों ने भारत के साथ रक्षा-सहयोग बंद करने का निर्णय किया है। वैसे तो अभी भी यूरोपीय मूल की कई शस्त्र प्रणालियां भी भारत में विद्यमान हैं परंतु उसे ठीक करने में कोई विशेष परेशानी भी नहीं होगी।

इस बीच 'वाई-2के' से संबंधित समस्याओं के निराकरण तथा इन्हें 'बाई-2के' अनुरूप ढालने की समस्या पर रक्षा विभाग काफी सचेष्ट भी है। इस समस्या से निपटने हेतु 'निगरानी' का कार्य इन चार भागों में बांटा गया है- 1) संवेदनशील ई.डी.पी. प्रणालियां (इसमें संचालन तथा व्यवहार में लाये जाने वाले सॉफ्टवेयर भी सम्मिलित हैं), 2) सैनिक साज सामान की व्यवस्था, 3) वेतन-भत्ता प्रबंध तथा 4) रक्षा सेवाओं की एम्बेडेड प्रणालियां। साथ ही इस समस्या से निपटने हेतु रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, सार्वजनिक रक्षा उपकरण, विभिन्न आयुध कारखाने, रक्षा मंत्रालय के अंतरसेवा संगठन तथा रक्षा सेवा से सम्बद्ध अन्य संस्थाओं की भी सहायता ली जा रही है।

इस प्रकार से भारत की रक्षा प्रणालियों को वाई-2के की समस्या से मुक्त कराने हेतु एक ओर जहां मूल विदेशी निर्माताओं की सहायता के लिए संपर्क करने का प्रयास किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर विभिन्न रक्षा अभिकरणों संस्थाओं द्वारा स्वदेशी तौर पर भी चेष्टा जारी है। उदाहरण के तौर पर डी.आर.डी.ओ. में एक 'वाई-2के' विशेषज्ञता प्रकोष्ठ की स्थापना की गयी है। साथ ही भारत इलेक्ट्रोनिक्स की बेंगलूर स्थित केन्द्रीय शोध प्रयोगशाला (सी.आर.एल.) द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किया जा रहा है। यह सुखद तथ्य भी है कि सभी संवेदनशील ई. डी.पी. प्रणालियों की पहचान कर ली गयी है तथा उनमें से अधिकतर को इस समस्या के अनुरूप ढालने का सफल प्रयास भी किया जा रहा है।

संपर्क : "शांति मिशन", ए-40, सादतपुर, करावल नगर रोड, दिल्ली-94

सूचना तकनीक में एक और इजाफा: अब इन्टरनेट पर हिन्दी में कामकाज

❑ सुधीर रंजन

इंदौर की एक कम्पनी ने प्रथम हिन्दी संचालित वेबसाइट पोर्टल वेबदुनिया तैयार कर सूचना तकनीकी के प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब वेबदुनिया के तैयार होने से सूचनाओं के अथाह स्रोत की जानकारी हासिल करने के लिए अंग्रेजी व अन्य विदेशी भाषाओं पर निर्भर नहीं बल्कि हिन्दी पर ही निर्भर कर सकते हैं। हिन्दी होने से अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी इसे अंजाम देना सरल हो जाएगा। अनुमान है कि अगली शताब्दी के प्रारम्भ में संसार भर में इंटरनेट का प्रयोग करनेवालों की संख्या 50 करोड़ से भी ज्यादा हो जाएगी और हिन्दी का पहला बेबदुनिया भारत के हिन्दी भाषी इंटरनेट उपभोगकर्ता के लिए दुनिया भर की जानकारी के सारे रास्ते खोल देगा। दुनिया के दूसरे भागों में रहने वाले लोग अब भारत की राजनीति, समाज एवं संस्कृति, विज्ञान एवं तकनीक मनोरंजन, खेल तथा पर्यटन आदि की जानकारी हिन्दी के माध्यम से पा सकेंगे।

कहना नहीं होगा कि दूरसंचार तथा कम्प्यूटर क्रांति का इंटरनेट मामला एक नहीं बल्कि कई पीढ़ी आगे की तकनीक का है जो ज्ञान तथा सूचनाओं के एकदम अलग संसार का द्वार खोलती है। इस माध्यम से अब हम चिट्ठी -पत्री कर सकते हैं। आप अपनी सूचनाएं भी इस सूचना सागर में उतार कर धन-यश और दोस्ती खरीद सकते हैं। इस प्रकार इंटरनेट सेवा का हिन्दी में उपलब्ध होना निश्चित रूप से एक लंबे हौसले के भरे जाने की संभावना है ही, साथ

ही इंटरनेट के माध्यम से आनेवाली अश्लीलता या जासूसी वाला पहलू भी कम चिन्ता का विषय नहीं है। इसलिए इसके बुरे पक्षों को संभालने की तकनीक भी विकसित करनी होगी।

संपर्क : कुमारटेक कम्प्यूटर्स, यू-208, शक्करपुर, दिल्ली-92

नेपाल में गर्भपात संज्ञेय अपराध

सैंकड़ों महिलाएं जेलों में बंद

नेपाल दुनिया के उनके गिने देशों में से एक है जहां गर्भपात को हत्या के समकक्ष माना जाता है नेपाली कानून बलात्कार के कारण गर्भवती हुई महिलाओं को भी गर्भपात कराने की अनुमति नहीं देता। गर्भपात को नेपाल में संज्ञेय अपराध माना गया है।

नेपाल के एक गैर सरकारी संस्था **सेंटर फार रिसर्च आन एन्वायरमेन्ट हेल्थ एक पापुलेशन एक्टिविटीज** द्वारा 1997 में किए एक अध्ययन के अनुसार गर्भपात के इस कानून के उल्लंघन की वजह से नेपाल के जेलों में वह कुल महिलाओं में से 20 प्रतिशत गर्भपात और भ्रूण हत्या के अपराध की सजा काट रही हैं। इसके विपरीत मात्र दशमलब तीन प्रतिशत पुरुष ही इस अपराध के अन्तर्गत कैद है।

गर्भपात को संज्ञेय अपराध के दायरे से हटाने और नेपाली महिलाओं को गर्भपात का अधिकार दिलाने के लिए नेपाल के महिला एवं मानवाधि कार संगठन लंबे अरसे से मुहिम चला रहे हैं कारण कि महिलाओं के स्वास्थ्य पर इन कानूनों का खराब प्रभाव पड़ रहा है। इन संगठनों के अनुसार करीब दो तिहाई नेपाली सांसद और 95 प्रतिशत महिला रोग विशेषज्ञ गर्भपात को कानूनी मान्यता देने के पक्ष में हैं हलांकि कुछ धार्मिक समूह नैतिकता के आधार पर इसका विरोध कर रहे हैं।

-विचार प्रतिनिधि नेपाल से

उपभोक्ता संस्कृति के कारण विवाह में टूटन

इसमें सन्देह की कतई गुंजाइश नहीं कि उपभोक्ता संस्कृति ने वैवाहिक संबंधों को कमजोर किया है जिसकी वजह से दुनिया के प्रायः सभी विकसित व विकासशील देशों में आज बड़ी संख्या में विवाह टूट रहे हैं। लंदन से प्रकाशित **टेलीग्राफ** के लेख में कैंटरबरी के आर्कबिशप और दुनिया के सात करोड़ एंग्लिकनों के प्रमुख फादर जार्ज कैरी ने कहा है कि उपभोक्ता संस्कृति ने दम्पतियों को यह सोचने के लिए बढ़ावा दिया है कि सुख-सुविधाओं की चीजों के इर्द-गिर्द की जीवन की खुशियां रह गई हैं। इन सुविधाओं की उपलब्धि ने मानवीय संबंधों की गर्माहट और उनकी अनुभूति को खत्म कर दिया है। उपभोक्ता संस्कृति वैयक्तिक गुणों, तौर-तरीकों, सहनशीलता, एक दूसरे को समझने की क्षमता-इच्छा और आत्मानुशासन से लोगों को दूर कर रही है, जबकि यह सारी चीजें विवाह को जीवन भर बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी हैं।

अमरीकी विशेषज्ञों के अनुसार अमरीकी इतिहास में विवाह के प्रति विरक्तता पहले कभी इतनी नहीं थी, जितनी की आज है। यहां का आधुनिक समाज विवाह रूपी उस **गोंद** को खत्म करने पर उतारू हो गयां है, जो पिताओं को उनके बच्चों से जोड़ता है। **नेशनल मैरिज प्रोजेक्ट** के एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अमरीका में विवाह दर में आज जितनी गिरावट आई है उतनी कभी नहीं रही। अविवाहित महिलाओं की मां बनने की संख्या भी आसमान छू रही है, तलाक दर भी ज्यादा बढ़ी है। वैसे सच कहा जाय तो कोई भी समाज विवाह के बगैर नहीं पहचाना जाता है। अच्छे समाज की पहचान ही इस बात से होती है कि उसने अगली पीढ़ी को विरासत में क्या दिया है। विवाह संस्था का टूटना भद्र समाज का तौर-तरीको नहीं है। विवाह एक मूलभूत सामाजिक संस्थान है। यह नैसर्गिक है और बच्चों को बड़ा करने की सामाजिक मान्यता भी है। विवाह संस्था स्त्री पुरुष और बच्चों और इस तरह पूरे देश को भौतिक भावनात्मक और आर्थिक सम्पन्नता प्रदान करती है।

अल्लाह का संदेश टमाटर में

उत्तरी इंगलैंड के ब्रेडफोर्ड निवासी शबाना हुसेन ने जब खाना बनाने के क्रम में टमाटर काटने लगी तो उसे कटे टमाटर में **अल्लाह के सिवाय कोई भगवान नहीं है** शब्द लिखे दिखाई पड़े। अरबी भाषा में लिखे शब्द को देखने के लिए सैकड़ों की संख्या में दूर-दूर से मुसलमान वहां एकत्र हो रहे हैं। हलांकि बाद में वह शब्द मिट गये बताए जाते हैं।

म्यांमार भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों का कार्यक्षेत्र रहा है

अब म्यांमार के नाम से जाने जानावाला बर्मा हमारे अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों का कार्यक्षेत्र रहा है। सन् 1857 के गदर के नायक **बहादुरशाह जफर** को अंग्रेज सत्ताधीशों ने जलावतन(देश से निष्कासित कर जिन्दगी का आखिरी सफर म्यांमार में ही तय करने पर उन्हें बाध्य किया था। नामधारी सिख आन्दोलन के प्रवर्तक **सतगुरू राम सिंह** द्वारा छेड़े गए असहयोग अभियान से परेशान अंग्रेज शासकों ने उन्हें भी निष्कासित कर म्यांमार में ही रखा था। **नेताजी सुभाष चन्द्रबोस** तथा **आजाद हिन्द फौज** की अनेक प्रेरक स्मृतियों को भी म्यांमार की धरती अपने में सहेजे है।

स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है के प्रणेता **लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक** मांडले नगर में अनेक वर्ष तक कैद रहे थे। पंजाब केसरी **लाला लाजपत राय** और शहीदे आजम भगत सिंह के चाचा क्रांतिकारी **सरदार अजित सिंह** को अंग्रेजों ने म्यांमार में नजरबन्द रखा था। गदर पार्टी के अलावा दो भारतीय मुसलमानों **हकीम फैम अली** और **अली अहमद साहिदकी** ने भी, जिन्हें **यंग टर्क पार्टी** ने वहां भेजा था, क्रांति का प्रयास किया था।

वस्तुतः दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य देशों की तरह आरम्भ से ही म्यांमार पर भारतीय क्रांतिकारियों का ध्यान केन्द्रित था। कारण कि वहां भारतीय की संख्या अधिक थी और मयांमार की सीमा भारत से सटी है। उन दिनों रंगून में बसे भारतीयों विशेष रूप से.मुसलमानों में असंतोष था। 1914 में 130 बी बलूच रेजिमेंट बम्बई से रंगून स्थानान्तरित की गयी थी जिसके अधिकतर सैनिक मुसलमान थे। इसके एक अफसर की हत्या के कारण उसके विद्रोह पर उतारू हो गए थे।

निकोटिन रहित सिगरेट नयी सदी में

वैज्ञानिक प्रावधान के अनुपालन के ख्याल से सिगरेट के प्रचार-प्रसार हेतु विज्ञापन में भी आप इस पंक्ति को पाएंगे-**सिगरेट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है।** वस्तुतः इससे फेफड़ों और हृदय पर बुरा असर पड़ता है, रक्तचाप बढ़ता है। इसलिए चिकित्सक इसे छोड़ देने के लिए निरन्तर चेतावनी देते रहते हैं। सिगरेट हानिकारक इसलिए भी है क्योंकि इसमें निकोटिन की मात्रा अधिक होती है। वर्तमान सामान्य सिगरेटों में 6-7 मिलीग्राम टार और 0.6-0.7 मिलीग्राम निकोटिन रहते हैं। किन्तु दक्षिण कोरिया की एक कम्पनी **कोरिया टुबैको एन्ड गिन्सेंग कारपोरेशन** ने दावा किया है कि अगली सदी में वह निकोटिन रहित सिगरेट का उत्पादन करने जा रही है। इस सिगरेट में नाममात्र के 1 मिलीग्राम टार और 0.1 मिलीग्राम निकोटिन होंगे जो वर्तमान की तुलना में सात गुणा कम होंगे। बहरहाल सिगरेट पीनेवालों के लिए यह नयी सदी की एक खुशखबरी होगी।

सदी के अवसान को याद रखने का अनोखा अंदाज

ज्यों-ज्यों बीसवीं सदी का अवसान हो रहा है दुनिया के लोग इसकी यादों को संजोए रखने के लिए नए-नए तरीके भी ढूंढ रहे हैं। दिनांक व सितम्बर,99 दिन बृहस्पतिवार को जर्मनी के हजारों जोड़ों ने इसे विवाह सूत्र में बंधने के लिए चुना। एक पशुप्रेमी जोड़े ने जहां इसके लिए चिड़ियाघर में गैंडों के परिसर को चुना वहीं अन्य सात जोड़ों ने विवाह के लिए बावेरियन के 999 मीटर ऊंचे शहर फिलिप्सरियूट को चुना। इसी प्रकार एक अन्य जोड़ा 9 बजकर 9 मिनट पर विवाह सूत्र में बंधा। यहीं नहीं तीन सौ-पैंसठ मीटर ऊंचे बर्लिन टेलीविजन टॉवर को 9 घंटे के लिए बन्द कर दिया गया ताकि 9 जोड़े विवाह सूत्र में बंध सकें। अधिकारिक सूत्र के अनुसार इस दिन 887 जोड़े बर्लिन और 310 जोड़े हैम्बर्ग में विवाह सूत्र में बंधे।

दक्षेस (सैफ) खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का दबदबा

अगला दक्षेस खेल पाकिस्तान में

आठवें दक्षेस खेलों का आयोजन नेपाल की राजधानी काठमांडू में हुआ। यह खेल कुल दस दिनों तक चला। सहस्त्राब्दी के इस अंतिम दक्षेस खेलों में भारतीय खिलाड़ी हावी रहे। भारत ने इस खेल में कुल 102 स्वर्ण, 58 रजत, 37 कांस्य सहित कुल 197 पदक जीते। यह पिछली बार की तुलना में कम है। मेजबान नेपाल दूसरे स्थान पर रहे।

पदक तालिका

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
भारत	102	58	37	197
नेपाल	31	10	24	65
श्रीलंका	16	42	61	119
पाकिस्तान	10	36	31	77
बांग्लादेश	02	10	36	48
भूटान	01	06	09	16
मालदीव	00	00	04	04
योग	162	162	202	526

कपिलदेव भारतीय क्रिकेट टीम के नये कोच नियुक्त

आगामी दो बर्षों तक के लिए कपिलदेव को भारतीय टीम का कोच नियुक्त किया गया। वे अंशुमन गायकवाड़ की जगह लेंगें। कपिल के कोच बनने से सम्पूर्ण क्रिकेट प्रेमी को काफी लाभ मिलने की आशा की जा रही है। कपिल एक मृदुभाषी, हंसमुख, अनुशासित व्यक्ति हैं। कपिल अपने समय के सबसे कुशल गेंदबाज, बल्लेबाज एवं क्षेत्ररक्षक के साथ-साथ अच्छे एथलीट भी थे। उनकी खेल भावना एवं जुझारूपन क्रिकेट खिलाड़ियों के लिए एक आदर्श हैं। चाहे टेस्ट हो या एकदिवसीय मैच हो वे अपने हरफनमौला खेल के लिए लोगों में जाने जाते थे। उनकी गेंदबाजी, बल्लेबाजी एवं क्षेत्ररक्षण देखने लायक थी।

कपिल के कोच बन जाने से भारतीय क्रिकेट टीम में विशेषकर गेंदबाजी एवं क्षेत्ररक्षण में काफी सुधार आने की सबल संभावना है। वे अपने समय के विश्व के जानेमाने तेज गेंदबाजों में से थे।

आज भारतीय टीम कई संकट की दौर से गुजर रही है। उसमें शारिरीक फिटनेस की समस्या सबसे बड़ी है। कपिल के कोच बन जाने से इस क्षेत्र में काफी सुधार की आशा की जा रही है क्योंकि वे कुशल एथलिट रह चुके हैं तथा खुद उनकी शारिरीक फिटनेस लोगों के लिए मिशाल है।

अत: कपिल के कोच बन जाने से यह कहना गलत नहीं होगा कि इससे भारतीय टीम के हर क्षेत्र में काफी सुधार होगा और आनेवाले दिनों में भारतीय टीम एक श्रेष्ठ टीम बनकर उभरेगा।

–रवि शंकर प्रसाद, नई दिल्ली

[redacted]

Prakritik English School

(10+2) College Cum Coaching Centre

[Maths. & Biology] [Theory & Practical] [Boys & Girls]

JAYPRAKASH NAGAR (MITHAPUR-SIPARA ROAD), PATNA-800001

PHONE # 239494

[redacted]

EXPERT, COMPITABLE & CHALLENGABLE STAFFS

3 TO 6 HOURS CLASSES DAILY LIKE SCHOOL.

100% Passed in 1st & 2nd Division from 1980. Full Guaranty for Course Completing.

फिल्म फेयर पुरस्कार पर संक्षिप्त नजर

❑सोहन लाल व्यास 'योजेश' रंभाश्री

ऑस्कर जैसे विश्व प्रसिद्ध अंतराष्ट्रीय फिल्म समारोह की तर्ज पर भारत में भी राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार एवं फिल्म फेयर पुरस्कार क्रमशः 1954 व 1953 से आरंभ हुए। फिल्म फेयर पुरस्कार समारोह 1953 से 1998 (1986 व 1987 में अपरिहार्य कारणवश आयोजित नहीं हुए) तक में पॉपुलर, टेक्निकल, क्रिटीक्स, एवं विशेष वर्ग हेतु विभिन्न 33 श्रेणियों में कुल 880 पदक वितरित किये गये। सर्वाधिक 52 पुरस्कार सिनेमेसेग्राफी(फोटोग्राफी); 47 पुरस्कार कला निर्देशन, 45 पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्रियों को, तथा सर्वोत्तम फिल्म, निदेशक, अभिनेता, संगीतकारों को चमालीस-चमालीस पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ सहअभिनेता, सहअभिनेत्री, व ध्वनि मुद्रक को त्यालीस-त्यालीस पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ संपादन व कहानीकारों को बयालीस-बयालीस पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ गीतकार, व संवादलेखकों को उनचालीस-उनचालीस पुरस्कार, 36 पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ गायको व 33 पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ गायिकाओं को व 29 पुरस्कार पटकथाकारों को दिये गये। सर्वश्रेष्ठ फीचर तथा डॉक्युमंटरी फिल्मों ने सताइस-सताइस पुरस्कार बटोरे। सर्वश्रेष्ठ हास्य कलाकार; नवागतुंक(अभिनेता/अभिनेत्री), लाईफटाईम एचीवमेंट, कोरियोग्राफी, परफोंमेंस, एक्शन व खलनायको ने क्रमशः 25, 20,14,11,10,9 व 8 पुरस्कार हासिल किये। छः निवेश पुरस्कार, पांच आर० डी० बर्मन पुरस्कार, सहित तीन वेर्टेनेश पुरस्कार वितरित किये गये। दो-दो पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ बैंकग्राउंड स्कोर व आर० के०बैनर के 50 वर्ष पूर्व होने पर एवं एक-एक पुरस्कार 25 वर्ष अभिनयकेशी होने व सोनी अकर्ड की झोली में गये। इन प्रकार 21 जनवरी 1999 को अंधेरी स्पोर्टस कॉम्पलेक्स मुंबई में आयोजित 44 वें फिल्म फेयर पुरस्कार समारोह तक कुल 880 पुरस्कार वितरित किये गये। जिसमें से 816 पुरस्कार 412 फिल्मों के खाते में तथा शेष अन्यों को मिले।

सर्वाधिक पदक बस **दिलवाले दुल्हनियां ले जायेंगे(95)** ने बटोरे। 9 पदक लेनेवाली दो फिल्मे, एक फिल्म आठ पदक ले सकी, सात पदक छः फिल्मों को, छः पदक सात फिल्मों को, पांच पदक 14 फिल्मों को, चार पदक 26 फिल्मों को, तीन पदक 44 फिल्मों को दो पदक लेने वाली 79 फिल्में थी जबकि.12 फीचर 27, डॉकयुमंटरी सहित 186 अन्य फिल्में केवल एक-एक पदक ही प्राप्त कर सकी।

निदेशकों की पहली फिल्में-

निर्देशक	पहली फिल्म	निदेशक	पहली फिल्म
शाएना	फ्रेंडस	गोगा कपूर	कहां है वो
ई०वी०वी०	सूर्यवंशम	शान्तनू	चिकनी चाची
प्रभा ठाकुर	जय महालक्ष्मी मां	गोविंद निहलानी	आक्रोश
रमेश शर्मा	न्यूदिल्ली टाईम्स	राकेश रोशन	खुदगर्ज
विजय आनंद	नौ दो ग्यारह	कोमल	कामदेव
कृष्ण चौपड़ा	हीरामोती	अशोक घई	श्याम-घनश्याम
गुड़िया महापात्र	दिल चुराया आपने	विक्रम भट्ट	जानम
व्ही शांताराम	नेताजी पालकर(मूक)	चंदलालशाह	पंचडंडा
सुभाष सैगल	प्यार कोई खेल नहीं	सुनील बोहरा	जीतेंगे हम
करण जौहर	कुछ-कुछ होता है		

संपर्क: **सचिव ऑल इण्डिया राईट क्लब शा० राजस्थान द्वारा रंभा ज्योति मंच, गढ़ सिवाना-344044**

C.C.T

ESTD.1986

(MORE THAN 100 BRANCHES NATION WIDE)
OFFERS

FREE COMPUTER COURSE

दिल्ली प्रशासन द्वारा पंजीकृत

RUN & RECOGNISED BY D.C.V.S. REGD. NO. S/25148

FOR :

- ***CRASH COURSES***
- ***CERTIFICATE COURSES***
- ***DIPLOMA COURSES***
- ***LANGUAGE COURSES***
- ***CAREER COURSES***

C.C.T

AVAIL UP TO 100% DISCOUNT ON ALL COURSES

C- 5 Ganesh Nagar, Near MCD School, Tilak Nagar, New Delhi- 110018 PH-2057045
U-58, Gali No. 4, Shakarpur, DELHI-110092 Ph.- 2057045
138 A/5 Munirka New Delhi Ph.- 6167026, & **G 1/3C, UTTAMNAGAR, PH : 5646067**

DENSA
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

8954777 (O)
544471 (R)

Office :
Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East, Mumbai - 400 068

Factory :
Plot No. 10, Dewan & Sons, Udyog Nagar, Palghat, Distt. - Thane
Mumbai (Maharashtra)

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रूपक विनेमा के पूर्व)

बाकर गंज पटना 800004

दूरभाष 662837

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)

दूरभाष 65769, फैक्स 65169

आधुनिक आभूषण के निर्माता

नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी के तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश, राजीव एवं सुनील

मे० स्टील सिटी वाइन स्टोर

मेन रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर - 1

दुरभाष : 432814 (O), 434337 (R)

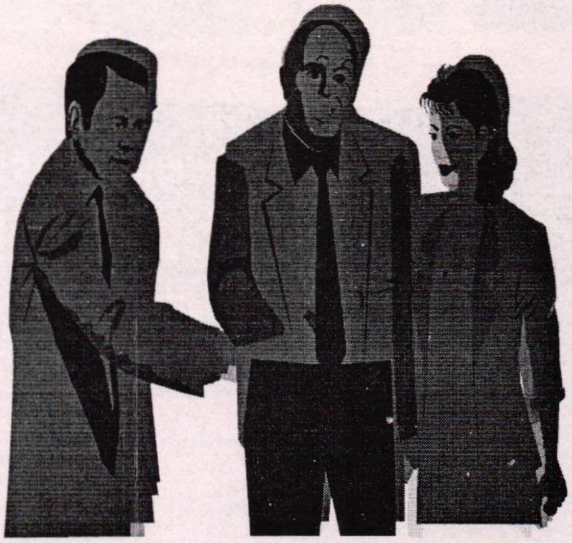

शुभकामनाओं के साथ

PALAK ENTERPRISES

Main Road, Sakchi, Jamshedpur-831001

Phone No.-423905, 425001

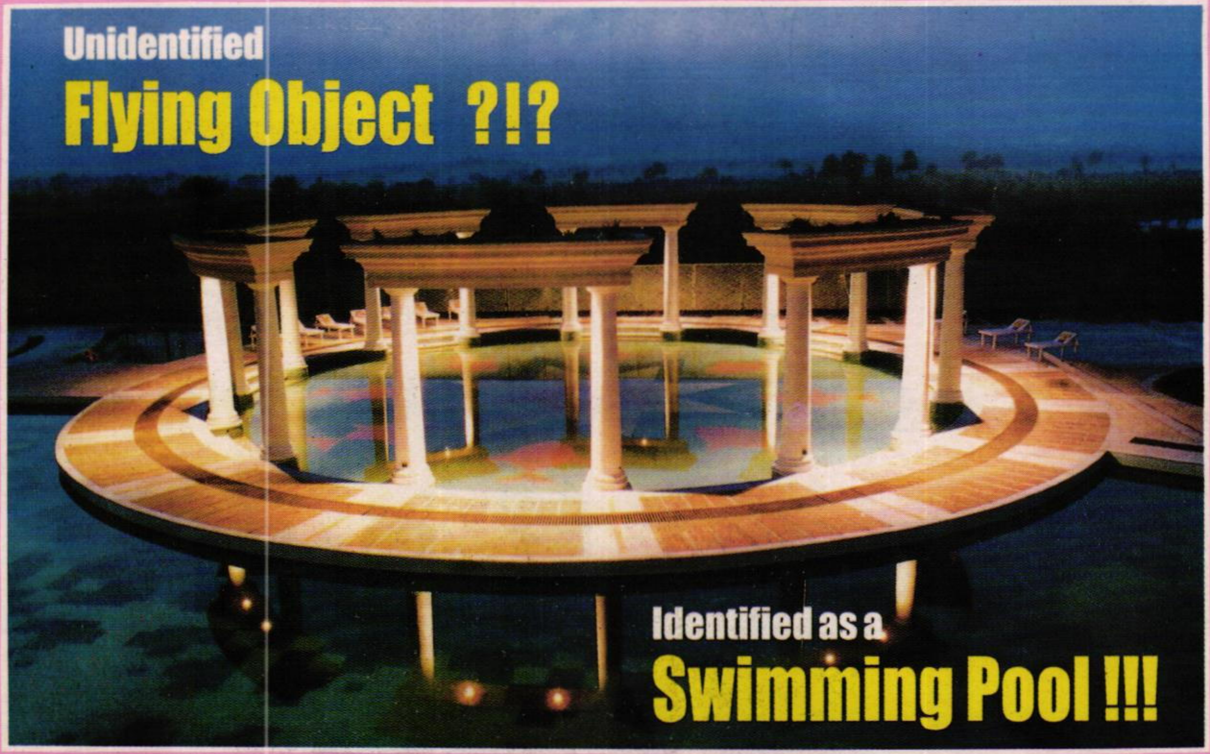

Yes, you are looking of a tiny portion of the magnificent state-of-the-art over 12,000 sft. Swimming Pool complex of the Lake Land Country Club.

Membership	Valid for life in case of an individual and 25 years for Corporate members. Not transferable for individual members but transferable for Corporate members within the corporate body.
Additional Membership	Children above 18 years of age and the dependent parents of the member are eligible for additional membership.
Annual Subscription	A subscription of Rs. 150/- per month will be charged from members and will be payable on an annualised basis from April 1, 1998.
Accommodation	2 nights free accommodation per year, life long for members and family. Discount and attractive schemes on room and food & beverages for the member and the family.
Sports Leisure Facilities	The following sports and leisure facilities will be available for the member and their guests • Department Store • Cards Room • Snookers• Library • Video Room • Fully Equipped health Club/gymnasium • Carrom • Table Tennis • Squash • Badminton • Golf with 18 hole putting green • Cycling • Jogging trail • Horse Riding • Childrens Park • Arts & Crafts Village • Forest Area • Comping Tents • Picnic Kiosks • Fishing Beach Area • Complete Aqua-park with Swimming Pool, Speed Boats, Water Scooters etc. and many more...
Food Beverages	Two restaurants with bars and a pool-side bar.
Conference facilities	Full-fledged conference facilities will be enjoyed by the members on a special discount.
Executive Business Centre	Equipped with all modern communication and business facilities with independent cabins and board rooms for meetings. The members will enjoy special discounts on usage of these facilities.
Health Club	Modern spa with locker rooms, sauna, steam, jacuzzi, fitness room, fully equipped gymnasium, aerobic room, yoga, health food boutique & restaurants, beauty parlour, crech-all will be available to the members at a special discounted rate.
Additional facilities	The club will continuously add new facilities for the use of the members. Members will be kept informed about additions to the club and other news of the club through its quarterly Club Newsletter, 'The lake Land News.

The list of facilities may be changed from time to time and it is at the discretion of the management to do so. The Club is operational and more than 1500 satisfied and happy members are enjoying it. Why don't you come over and have a look and feel the ambience? You would love to be proud member of the Lake Land Country Club.

A brand owned by Country Hospitality Corporation, USA, a part of Carlson Hospitality Group which also owns major hospitality brands like Raddisson Hotels Worldwide, Regeant Hotels & TGI Fridays.

COUNTRY INN & SUITES BY CARLSON

A Cozy Stay At A Comfortable Price®

The Lake Land® COUNTRY CLUB

P.O.& Vill. Munshidanga, Off Kona Expressway, Dist. Howrah 711 403 W.B.

A gentleman's club, as well as the gracious lady's.

Developers :

Panchwati Holiday Resorts Limited

Marketing Office : 27 Shakespeare Sarani 5th Floor
Calcutta 700 017 Phone : 2405981 2805703/3419
Fax : 2409822/0168